



## महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi  
Vishwavidyalaya

(A Center University Established by Parliament by Act No.  
3 of 1997)

### एम.बी.ए. पाठ्यक्रम पाठ्यक्रम कोड : MBA - 001



तृतीय सेमेस्टर

पाठ्यचर्या कोड : एमएस – 430

पाठ्यचर्या का शीर्षक : कार्यशील पूँजी का प्रबंधन

दूर शिक्षा निदेशालय

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

पोस्ट- हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा - 442001 (महाराष्ट्र)

## तृतीय सेमेस्टर - एमएस 430 कार्यशील पूँजी का प्रबंधन

### मार्ग निर्देशन समिति

प्रो. गिरीश्वर मिश्र  
कुलपति, म.गां.अं.हिं.वि.वि., वर्धा

प्रो. आनंद वर्धन शर्मा  
समकुलपति, म.गां.अं.हिं.वि.वि., वर्धा

### संपादक

प्रो. कृष्ण कुमार सिंह  
प्रभारी, दूर शिक्षा निदेशालय, म.गां.अं.हिं.वि.वि., वर्धा

मनोज कुमार चौधरी  
पाठ्यक्रम संयोजक: एमबीए, दूर शिक्षा निदेशालय, म.गां.अं.हिं.वि.वि., वर्धा

### संपादक मंडल

डॉ. रवीन्द्र टी. बोरकर  
सह प्रोफेसर एवं क्षेत्रीय निदेशक  
दूर शिक्षा निदेशालय, म.गां.अं.हिं.वि.वि., वर्धा

डॉ. ए. के. जे. मंसूरी  
जी. एस. कॉलेज ऑफ कॉमर्स, वर्धा

डॉ. राम ओ. पंचारिया  
बी. डी. कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, सेवाग्राम

मनोज कुमार चौधरी  
सहायक प्रोफेसर, प्रबंधन विद्यापीठ, म.गां.अं.हिं.वि.वि., वर्धा

डॉ. विनय चतुर्वेदी  
सहायक प्रोफेसर, दूर शिक्षा निदेशालय, म.गां.अं.हिं.वि.वि., वर्धा

### प्रकाशक:

कुलसचिव, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा  
पोस्ट: हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा, महाराष्ट्र - 442001

### पाठ्यक्रम परिकल्पना, संरचना एवं संयोजन

मनोज कुमार चौधरी  
पाठ्यक्रम संयोजक: एमबीए, दूर शिक्षा निदेशालय, म.गां.अं.हिं.वि.वि., वर्धा

### इकाई लेखन

डॉ. मनोज त्रिवेदी

### कार्यालयीन एवं मुद्रण सहयोग

श्री विनोद वैद्य  
सहायक कुलसचिव, दूर शिक्षा निदेशालय, म.गां.अं.हिं.वि.वि., वर्धा

सुश्री राधा ठाकरे  
टंकक, दूर शिक्षा निदेशालय, म.गां.अं.हिं.वि.वि., वर्धा



**महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय**  
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)  
**Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya**  
(A Central University Established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

विषय कोड : MS 430

क्रेडिट्स: 2 क्रेडिट

विषय का नाम: कार्यशील पूँजी का प्रबंधन (Working Capital Management)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य:

- कार्यशील पूँजी की अवधारणा तथा उसके समग्र प्रबंधन से विद्यार्थियों को परिचित कराना ।
- कार्यशील पूँजी के विभिन्न घटक तथा उनके प्रबंधन की जानकारी विद्यार्थियों को देना ।
- कार्यशील पूँजी की आवश्यकताओं को निर्धारित करना तथा वित्तपोषण की जानकारी विद्यार्थियों को देना ।

मूल्यांकन के मानदंड:

1. सत्रांत परीक्षा : 70%
2. सत्रीय कार्य : 30%

पाठ्यक्रम सामग्री:

**इकाई I : कार्यशील पूँजी प्रबंधन का परिचय (Introduction to Working Capital Management)**

- कार्यशील पूँजी का अर्थ (Meaning of Working Capital)
- कार्यशील पूँजी की जरूरत (Need of Working Capital)
- कार्यशील पूँजी के प्रकार (Types of Working Capital)
- कार्यशील पूँजी का निर्धारण (Determination of Working Capital)

**इकाई II : कार्यशील पूँजी की योजना तथा वित्तपोषण (Planning and Financing Of Working Capital)**

- कार्यशील पूँजी के उद्देश्य तथा तत्व (Objectives and Elements of Working Capital)
- कार्यशील पूँजी के स्रोत (Sources of Working Capital)
- कार्यशील पूँजी के प्रबंधन के लिए टंडन समिति और कोर समिति की सिफारिशें (Tandon Committee and Chore Committee Recommendations for Working Capital Management)
- तरलता का मापन और तरलता मापन का अनुपात (Measurement of Liquidity and Ratios of Measuring Liquidity)

**इकाई III : नकद प्रबंधन (Cash Management)**

- नकदी रखने के कारण (Motives for Holding Cash)
- नकद प्रबंधन का उद्देश्य (Objective of Cash Management)

- नकद जरूरतों का निर्धारण के कारक (Factors Determining the Cash Needs)
- युक्ततम नकद बनाए रखने के लाभ (Advantages of Maintaining Optimum Cash)
- नकद प्रबंधन में मुद्दे (Issues in Cash Management)
- नकद अधिशेष का उपयोग (Utilization of Cash Surplus)
- कैश मॉडल्स (Cash Models)
- नकद पूर्वानुमान के तरीके (Methods of Cash Forecast)

#### इकाई IV : धन के प्रवाह का विवरण (Fund Flow Statement)

- धन के प्रवाह अर्थ और संकल्पना (Meaning and Concept of Flow of Funds)
- धन प्रवाह तथा आय विवरण में अंतर (Difference between Fund Flow and Income Statement)
- क्या एक लेनदेन धन का प्रवाह होता है या नहीं जानने की प्रक्रिया (Procedure for knowing whether a Transaction results in the Flow of Funds)
- कार्यशील पूंजी में परिवर्तन की अनुसूची तैयार करने के लिए प्रक्रिया (Procedure for preparing Schedule of Changes in Working Capital)

#### इकाई V : इन्वेंटरी और लेखा प्राप्य (Inventory and Accounts Receivable)

- इन्वेंटरी के प्रकार तथा रखने की आवश्यकता (Types and Need of holding Inventory)
- इन्वेंटरी नियंत्रण तकनीक (Inventory Control Techniques)
- प्राप्य खातों को बनाए रखने की लागत (Cost of maintaining accounts receivable)
- क्रेडिट नीतियों के निर्धारण (Formulation of credit policies)
- प्राप्तियों के आकार को प्रभावित करने वाले कारक (Factors influencing size of receivables)

#### सम्बन्धित पुस्तकें:

- Dr. Periasamy .P, (2010). Working Capital Management. Second Edition. Himalaya Publishing House, New Delhi.
- Rao P. Mohana, and Alok K. Pramanik. Working Capital Management. Deep and Deep Publishing House, New Delhi.

## अनुक्रम

क्र. सं.	इकाईयों के नाम	पृष्ठ संख्या
1.	इकाई – I कार्यशील पूंजी प्रबंधन का परिचय	6-34
2.	इकाई – II कार्यशील पूंजी की योजना तथा वित्तपोषण	35-55
3.	इकाई – III नकद प्रबंधन	56-75
4.	इकाई – IV धन के प्रवाह का विवरण	76-93
5.	इकाई – V इन्वेंटरी और लेखा प्राप्य	94-112

## इकाई – I: कार्यशील पूंजी प्रबंधन का परिचय

### इकाई की संरचना

- 1.1 उद्देश्य
- 1.2 प्रस्तावना
- 1.3 कार्यशील पूंजी का अर्थ
- 1.4 कार्यशील पूंजी की जरूरत
- 1.5 कार्यशील पूंजी के प्रकार
- 1.6 कार्यशील पूंजी का निर्धारण
- 1.7 सारांश
- 1.8 बोध प्रश्न
- 1.9 संदर्भ ग्रंथ

### 1.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप निम्नलिखित को समझ सकेंगे:

- कार्यशील पूंजी की मूल अवधारणाओं को।
- कार्यशील पूंजी के प्रकारों एवं निर्धारण को।

### 1.2 प्रस्तावना

किसी भी संगठन में कार्यशील पूंजी एक महत्वपूर्ण वित्त स्रोत है जिससे संगठन के दैनिक व्ययों या आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। व्यावसायिक संस्था के सुचारू संचालन के लिए कार्यशील पूंजी का कुशलतापूर्वक संचालन करना ही कार्यशील पूंजी का प्रबन्ध कहलाता है। इस अध्याय में कार्यशील पूंजी का

अर्थ, कार्यशील पूंजी की विचारधारा, कार्यशील पूंजी की आवश्यकता एवं कार्यशील पूंजी को प्रभावित करने वाले तत्वों को क्रमानुसार प्रस्तुत किया गया है।

### 1.3 कार्यशील पूंजी का अर्थ (Meaning of Working Capital)

व्यवसाय के संचालन से सम्बन्धित दिन-प्रतिदिन की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कुछ सम्पत्तियों की आवश्यकता होती है। इन सम्पत्तियों में रोकड़, प्राप्त विपन्न, विनियोग, कच्चा माल, निर्मित माल एवं अल्पकालीन ऋण आदि को सम्मिलित किया जाता है। इन सम्पत्तियों में विनियोजित पूंजी को कार्यशील पूंजी कहते हैं। कार्यशील पूंजी व्यवसाय के दिन-प्रतिदिन के आवश्यकताओं की पूर्ति एवं प्रगति हेतु स्थिर सम्पत्तियों के लिए आवश्यक पूंजी के साथ-साथ चालू सम्पत्तियों के लिए भी पर्याप्त पूंजी की व्यवस्था करती है। किसी भी कोष की प्राप्ति जो चालू सम्पत्तियों को बढ़ाता है। उस कोष को कार्यशील पूंजी की संज्ञा दी जाती है।

**कार्यशील पूंजी की अवधारणा (Concept of Working Capital)** - किसी भी व्यवसाय को दो प्रकार की पूंजी की आवश्यकता होती है - १) अचल पूंजी, २) कार्यशील पूंजी

**अचल पूंजी** का उपयोग, व्यवसाय में उत्पादन की आधारीक संरचना (infrastructure) की व्यवस्था, के लिए किया जाता है। जैसे की - ज़मीन, मशीनरी, फर्नीचर, आदि की खरीद करना। इस अचल पूंजी से ही व्यवसाय की अचल संपत्ति का निर्माण होता है जो लंबी अवधि के लिए व्यवसाय में निवेश की जाती है। पूंजी का इन सम्पत्तियों में किया गया विनियोग स्थिर पूंजी भी कहलाता है इसकी प्रकृति दीर्घकालीन एवं स्थायी होती है।

**कार्यशील पूंजी** का उपयोग व्यवसाय के नियमित व्ययों (day-to-day expenses) के लिए किया जाता है। जैसे की - उत्पादन के लिए कच्चा या मध्यवर्ती माल खरीदना, मज़दूरी भुगतान करना, और अन्य उत्पादन से जुड़े खर्चों का भुगतान करना। कार्यशील पूंजी का मुख्य उपयोग व्यवसाय की कम अवधि की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए होता है।

कार्यशील पूंजी को लघु-अवधि की संपत्ति स्रोतों में निवेश किया जाता है यानि कि ऐसी संपत्ति जो १२ महीनों के अंदर नगदी में परिवर्तित की जा सके, जैसे की - नगद (cash), बैंक (bank), विपण्य प्रतिभूतियां (marketable securities), स्टॉक (stock), प्राप्य विपन्न (bills receivables), देनदार (debtors), प्रीपेड व्यय (prepaid expenses), अर्जित आय (accrued incomes), आदि। इस संपत्ति को वर्तमान संपत्ति (current assets) भी कहा जाता है।

कार्यशील पूँजी, व्यवसाय को संचालित करने की लागत के लिए आवश्यक धनराशि है। कार्यशील पूँजी को चालू पूँजी भी कहा जाता है, इसीलिए यह परिवर्तनशील होती है। नकद से कच्चा माल खरीदना, उत्पादन प्रक्रिया द्वारा माल निर्मित करना, बेचना, देनदारों से पैसे वसूल करना इस तरह क्रम चलता रहता है। इसे चक्रीय पूँजी भी कहा जाता है। इनमें विनियोग बारम्बार होता रहता है।

चालू सम्पत्तियों/ चालू पूँजी का प्रबन्ध दिन-प्रतिदिन की प्रक्रिया है। इनका प्रबंध एक विशिष्ट और बारम्बारता का कार्य है। अतः इसे कार्यशील पूँजी भी कहा जाता है। विद्वानों ने कार्यशील पूँजी की विभिन्न दृष्टिकोणों से व्याख्या की है - इनमें प्रमुख रूप से दो दृष्टिकोण हैं - (1) पारम्परिक दृष्टिकोण या चिह्न आधारित दृष्टिकोण, (2) संचालन चक्र अवधारणा।

### 1) पारम्परिक दृष्टिकोण (Traditional Approach) या चिह्न आधारित दृष्टिकोण (Balance Sheet Approach) -

आर्थिक चिह्न निश्चित तिथि को बनाया जाता है। उस तिथि को व्यवसाय की कार्यशील पूँजी क्या है, चिह्न में प्रदर्शित सम्पत्तियों के मूल्य के आधार पर निर्धारित की जाती है। इस दृष्टि से कार्यशील पूँजी के दो प्रकार हैं -

(अ) सकल कार्यशील पूँजी (Gross Working Capital)

(ब) शुद्ध कार्यशील पूँजी (Net Working capital)

(स) चक्रीय पूँजी (Circulating capital)

(अ) सकल कार्यशील पूँजी के अनुसार व्यवसाय की कार्यशील पूँजी की गणना करने के लिए वर्तमान संपत्ति या चालू सम्पत्तियाँ (current assets) के मूल्य की गणना की जाती हैं। यानि कि ऐसी संपत्ति जो १२ महीनों के अंदर (accounting period) नगदी में परिवर्तित की जा सकें, जैसे की - नगद (cash), बैंक (bank), विपण्य प्रतिभूतियाँ (marketable securities), स्टॉक (stock), प्राप्य विपत्र (bills receivables), देनदारी (debtors), प्रीपेड व्यय (prepaid expenses), अर्जित आय (accrued incomes) आदि।

मीड, बेकर तथा फील्ड के शब्दों में- "कार्यशील पूँजी से तात्पर्य चालू सम्पत्तियों के योग से है।"

बोनविले के शब्दों में - "कोषों की कोई भी प्राप्ति जो सम्पत्तियों में वृद्धि करती है, वह कार्यशील पूँजी में भी वृद्धि करती है, क्योंकि ये दोनों एक ही हैं।"

जे.एस.मिल - "चालू सम्पत्तियों का योग ही व्यवसाय की कार्यशील पूँजी है।" सकल कार्यशील पूँजी, कार्यशील पूँजी की परिणात्मक अवधारणा कहलाती है। यह पूँजी की मात्रा पर अधिक बल देती है, उसके ऋणात्मक पहलू पर कम। यह चालू सम्पत्ति को बनाए रखने के लिए कुल कोषों की आवश्यकता का विचार है।"

कार्यशील पूँजी की इस अवधारणा के पक्ष में निम्न तर्क दिए जा सकते हैं –

- चालू सम्पत्तियों की व्यवस्था चाहे दीर्घकालीन आधार पर की जावे अथवा चालू देनदारियों के द्वारा इनकी उपयोगिता में कोई कमी नहीं आती।
- सम्पूर्ण चालू सम्पत्तियाँ जो व्यवसाय में प्रयुक्त होती हैं, संस्था के लाभ अर्जन दर में वृद्धि करती हैं। अतः चालू सम्पत्तियों का कुल योग कार्यशील या सकल पूँजी कहा जाता है।
- स्थिर सम्पत्तियों में विनियोग स्थिर पूँजी कहा जाता है। इसी तरह चालू सम्पत्तियों में विनियोग कार्यशील पूँजी या चालू पूँजी कहा जाता है।
- वित्तीय प्रबंधक का मुख्य उद्देश्य, व्यवसाय की कुल चालू सम्पत्तियों के प्रबंध पर ध्यान केन्द्रित करना है।
- संक्षेप में - यह विचार वहाँ अधिक उपयुक्त होता है जहाँ सभी योजनाएँ चालू सम्पत्तियों को ध्यान में रखकर तैयार की जाती हैं, लेकिन यह विचार वास्तविक वित्तीय स्थिति को प्रकट नहीं करता क्योंकि चालू दायित्व में वृद्धि कार्यशील पूँजी में कमी लाती है।

(ब) शुद्ध कार्यशील पूँजी के अनुसार वर्तमान संपत्ति या चालू सम्पत्तियाँ (current assets) के मूल्य की गणना कर उसमें से वर्तमान देनदारियों या चालू दायित्व का मूल्य घटाने पर शेष राशि को शुद्ध कार्यशील पूँजी कहते हैं। वर्तमान देनदारी वह होती है जिनका भुगतान १२ माह (accounting period) के भीतर करना होता है। जैसे की- लेनदार (creditors), देय विपत्र (bills payables), लघु-अवधि का बैंक या अन्य उधारी (लोन), बैंक अधिविकर्ष (bank overdraft), कर का प्रावधान (provision for taxation), बकाया व्यय (outstanding expenses), अग्रिम आय (advanced incomes), आदि।

शुद्ध कार्यशील पूँजी = चालू सम्पत्तियाँ - चालू दायित्व

Net Working capital = Current Assets – Current Liabilities

सकल और शुद्ध कार्यशील पूँजी की अवधारणा दोनों ही महत्वपूर्ण हैं। सकल कार्यशील पूँजी की अवधारणा स्वामित्व या साझेदारी का व्यवसाय के लिए उपयुक्त है। शुद्ध कार्यशील पूँजी की अवधारणा कंपनी के लिए उपयुक्त मानी जाती है जहाँ स्वामित्व, प्रबंधन और नियंत्रण का उत्तरदायित्व पृथक हो।

शुद्ध कार्यशील पूँजी की अवधारणा गुणात्मक अवधारणा कहलाती है। शुद्ध कार्यशील पूँजी धनात्मक भी हो सकती है और ऋणात्मक भी हो सकती है। जब चालू सम्पत्तियाँ, चालू दायित्व से अधिक हैं तो यह धनात्मक कार्यशील पूँजी कहलाती है। इसके विपरीत जब चालू दायित्व, चालू सम्पत्तियों से अधिक होते हैं तो कार्यशील पूँजी ऋणात्मक हो जाती है।

यदि संगठन की वर्तमान संपत्ति वर्तमान देनदारियों से अधिक है कार्यशील पूँजी की दृष्टि से कंपनी की स्थिति सुदृढ़ और संतोषजनक है। यदि संगठन की वर्तमान संपत्ति वर्तमान देनदारियों से कम है, तो कंपनी को

अल्पकालिक वित्तपोषण (short-term financing) का सहारा लेना पड़ेगा। यह संगठन की खराब वित्तीय स्थिति को दर्शाता है और भविष्य में आने वाले वित्तीय संकट की चेतावनी देता है।

गेस्टनबर्ग के शब्दों में - "चालू सम्पत्तियों के चालू दायित्वों पर आधिक्य को कार्यशील पूँजी कहते हैं।"

हॉगलैंड के अनुसार कार्यशील पूँजी का अर्थ चालू सम्पत्तियों एवं चालू दायित्वों के पुस्तकीय मूल्यों के अंतर से है।"

शुद्ध कार्यशील पूँजी का एक अर्थ यह भी है कि चालू सम्पत्तियों का वह भाग जो दीर्घकालीन कोषों से पोषित होता है।

इस अवधारणा के पक्ष में निम्न तर्क दिये जा सकते हैं -

- i. चालू सम्पत्तियों का चालू दायित्वों पर आधिक्य संस्था की वित्तीय, सदृढ़ता का परिचायक होता है और मंदीकाल या विपरीत परिस्थितियों में संस्था के भुगतान करने सामर्थ्य को दर्शाती है।
- ii. यह अवधारणा व्यवसाय की वास्तविक वित्तीय स्थिति निर्धारित करने के लिए उपयुक्त है।
- iii. अल्पकालीन लेनदारों एवं विनयों की दृष्टि से, शुद्ध कार्यशील पूँजी की अवधारणा, उन्हें सुरक्षा प्रदान करती है।

संक्षेप में जब तक चालू सम्पत्तियों की चालू दायित्वों से तुलना नहीं की जाती है चालू सम्पत्तियों की मात्रा बेहतर वित्तीय स्थिति का परिचायक नहीं हो सकती। चालू दायित्वों का चालू सम्पत्तियों पर आधिक्य कमजोर शोधन क्षमता का परिचायक होता है। अतः शुद्ध कार्यशील पूँजी की अवधारणा महत्वपूर्ण है।

**पर्याप्त कार्यशील पूँजी के लाभ (Merits of adequate working capital)** - यदि व्यवसाय में कार्यशील पूँजी पर्याप्त मात्रा में होती है तो इसके निम्न लाभ होते हैं -

1. पर्याप्त कार्यशील पूँजी से लेनदारों को समय पर भुगतान मिल पाता है। जिससे संस्था की साख में वृद्धि होती है।
2. पूर्तिकर्ताओं को निर्धारित अवधि में भुगतान कर, नकद छूट का लाभ उठाया जा सकता है। इससे लागत कम होती है और लाभ में वृद्धि हो सकती है।
3. पर्याप्त पूँजी होने से, लाभांश का समय पर भुगतान किया जा सकता है जिससे अंशों के मूल्य में भी वृद्धि होती है।

4. पर्याप्त कार्यशील पूँजी होने से उत्पादन कार्य सतत चलता रहता है। ग्राहकों की आवश्यकता संतुष्ट की जा सकती है। मजदूरों को समय पर भुगतान मिलने से उच्च मनोबल का लाभ मिल पाता है।
5. पर्याप्त कार्यशील पूँजी से, बड़े ऑर्डर्स की पूर्ति की क्षमता बढ़ती है, जिससे लाभ के अवसरों को भुनाया जा सकता है।
6. आकस्मिक संकटों एवं विपरीत परिस्थितियों एवं मंदिकाल में व्यवसाय का संचालन सुचारू रूप से हो पाता है। व्यवसाय की लाभ दर को स्थायी रख पाने में मदद मिलती है।
7. ग्राहकों को अधिक उदार शर्तों पर विक्रय संभव हो पाता है।
8. कम्पनी की ऋण चुकाने की क्षमता होने से, भविष्य में वित्तीय संस्थाओं से ऋण आसानी से मिल पाता है।
9. चालू सम्पत्तियों के मूल्यों में कमी होने पर व्यवसाय को प्रतिकूल प्रभावों से बचाने में मदद मिलती है।
10. पर्याप्त कार्यशील पूँजी से ही, स्थायी सम्पत्तियों का उपयोग उसकी पूर्ण क्षमता एवं कार्यसाधकता से संभव है।

**कार्यशील पूँजी की अधिकता के दोष (Demerits of Surplus Working Capital) -** व्यवसाय में कार्यशील पूँजी समुचित होना चाहिये। कोषों का कार्यशील पूँजी में सीमा से अधिक विनियोग भी ठीक नहीं कहे जाते। इसके निम्न दोष हैं -

1. अत्यधिक कार्यशील पूँजी व्यवसाय में व्यर्थ सिद्ध होती है। इससे आय में वृद्धि नहीं होती, कोष अवरूद्ध पड़े रहते हैं, विनियोग पर पर्याप्त आय नहीं होती जो कि संस्था के लिए वैकल्पिक लागत (opportunity cost) साबित होती है।
2. अत्यधिक कार्यशील पूँजी व्यवसाय में, सम्पत्तियों की तरलता और लाभदायकता में असंतुलन दर्शाती है। जिसका आशय यह है कि अधिक मात्रा में तरलता, लाभ कमाने की क्षमता को कम करती है।
3. स्कंध में अनावश्यक विनियोग, गैर जरूरी स्कंध, स्टोर का संग्रह बढ़ने से रखरखाव के खर्च में वृद्धि, माल के चोरी होने से नुकसान होता है। वित्त कोष स्कंध में अवरूद्ध हो जाते हैं। जिसके कारण कार्यशील पूँजी की अधिकता की आवश्यकता आ जाती है। यदि स्कंध प्रबंधन सुचारू हो तो इस परिस्थिति से बचा जा सकता है।
4. अत्यधिक कार्यशील पूँजी, दोषपूर्ण साख नीति और ढीली वसूली व्यवस्था का परिचायक है। जिससे अशोध्य ऋणों की संभावना बढ़ जाती है, और लाभ में कमी आ जाती है।

5. व्यवसाय में अनावश्यक सट्टेबाजी की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन मिलता है।
6. उदार लाभांश वितरण नीति की प्रवृत्ति बढ़ती है जो भविष्य में लाभों की कमी का कारक बनती है।
7. व्यवसाय में स्थायी सम्पत्ति में अनावश्यक विनियोग कर सकती है जो कि वास्तविक विक्रय या उत्पादन के अनुरूप न होने से अति पूँजीकरण का कारक बनती है।
8. कार्यशील पूँजी की अधिकता, व्यवसाय में लागत नियंत्रण में लापरवाही, संचालन में प्रभावशीलता की कमी, अकुशल प्रबंधकीय प्रवृत्ति को दर्शाती है, जो कि संस्था की स्थिरता के लिए घातक सिद्ध हो सकता है।

**कार्यशील पूँजी की अपर्याप्तता के दोष (Demerits of inadequate working capital)** - व्यवसाय में कार्यशील पूँजी की मात्रा पर्याप्त नहीं होती या कार्यशील पूँजी ऋणात्मक हो जाती है तो निम्न दोष परिलक्षित होते हैं -

1. व्यवसाय की वृद्धि रूक जाती है क्योंकि कार्यशील पूँजी की अपर्याप्तता से लाभदायक प्रोजेक्ट लेने में कठिनाई आती है।
2. व्यवसाय की संचलनात्मक योजनाओं को क्रियान्वयन करने में कठिनाई आती है, लक्षित लाभ प्राप्त नहीं होता है।
3. दिन-प्रतिदिन के कार्यकलापों को करने, खर्च के दायित्वों का भुगतान एवं वायदे पूरे करने में कठिनाई आती है। इससे व्यवसाय संचालन में अकुशलता पैदा होती है, लागतें बढ़ जाती हैं।
4. कार्यशील पूँजी में कमी के कारण स्थायी सम्पत्तियों का प्रयोग अनुकूलतम स्तर पर नहीं हो पाता इससे विनियोगों पर प्रत्याय की दर गिर जाती है।
5. अपर्याप्त कार्यशील पूँजी की दशा में अल्पकालीन दायित्वों का समयानुरूप भुगतान नहीं हो पाता इससे संस्था की साख प्रभावित होती है, शोधन क्षमता में कमी आती है।
6. प्रचुर मात्रा में क्रय तथा नकद छूट का लाभ नहीं मिल पाता।
7. कार्यशील पूँजी के अभाव में उत्पादन एवं विक्रय दोनों ही बाधित होते हैं।
8. संस्था द्वारा लाभांशों का भुगतान नहीं किया जाता, जिससे अंशों के मूल्यों में कमी आती है।
9. कार्यशील पूँजी की कमी के कारण बाजार में उत्पन्न लाभदायकता के अवसरों भी चूक जाते हैं।

10. संस्था को अपने दायित्वों का भुगतान करने के लिए ऊँची ब्याज दरों पर पैसा उधार लेना पड़ सकता है, जिससे लगता बढ़ जाती है और लाभ कम हो जाता है।

उपरोक्त विवेचन के आधार पर श्रेष्ठ प्रबंधन को व्यवसाय के संचालन एवं लाभ वृद्धि के लिए समय-समय पर आवश्यकतानुसार कार्यशील पूँजी की पर्याप्त मात्रा की व्यवस्था रखना चाहिए। जिसके लिए ठोस वित्तीय नीतियों एवं सांख्यिकी तकनीकों से उचित निर्णय लिये जाने चाहिए।

#### 1.4 कार्यशील पूँजी की जरूरत (Need of Working Capital)

प्रत्येक व्यवसाय में कार्यशील पूँजी की आवश्यकता होती ही है। केवल दीर्घकालीन सम्पत्तियों में विनियोग करके व्यापार का संचालन नहीं किया जा सकता। वस्तु के उत्पादन से लेकर वस्तु के विक्रय करके रोकड़ वसूली के बीच लगने वाले समय के कारण कार्यशील पूँजी की आवश्यकता महसूस होती है। निम्नलिखित उद्देश्यों के लिए कार्यशील पूँजी की आवश्यकता होती है -

1. उत्पादन हेतु कच्ची सामग्री, अवयव एवं अतिरिक्त पूर्वी को खरीदने के लिए।
2. मजदूरी, वेतन, किराना आदि का भुगतान करने के लिए।
3. दिन-प्रतिदिन के व्ययों, उपरिव्ययों, लागतों, ईंधन, शक्ति, कार्यालय व्ययों, प्रबंधकीय व्ययों के भुगतान के लिए।
4. बिक्री एवं वितरण लागतों, भाड़ा विज्ञापन, पैकिंग सामग्री आदि को पूरा करने के लिए।
5. निर्मित माल का स्कंध बनाये रखने के लिए।
6. ग्राहकों को उधार विक्रय के लिए।
7. विभिन्न लेनदारों, देयताओं के भुगतान के लिए।

## 1.5 कार्यशील पूंजी के प्रकार (Types of Working capital)

कार्यशील पूंजी के निम्न प्रकार बताये जाते हैं –

**अ) स्थायी कार्यशील पूंजी** - स्थायी कार्यशील पूंजी, व्यवसाय के अविरत संचालन के लिए आवश्यक है। यह राशि प्रतिवर्ष बदल सकती है और व्यवसाय की उन्नति, व्यवसाय के संचालन चक्र पर निर्भर करती है। वर्ष भर चालू सम्पत्तियों की सतत आवश्यकता को स्थायी कार्यशील पूंजी कही जाती है। इसकी विशेषताएँ हैं –

- यह समय के आधार पर वर्गीकृत की जा सकती है।
- व्यवसाय की प्रक्रिया को बनाये रखने में, सतत संचालन में इसकी आवश्यकता होती है।
- व्यवसाय के संचालन की वृद्धि के साथ-साथ इसका आकार भी बढ़ता है।

कच्चे माल का न्यूनतम स्तर, स्टॉक में न्यूनतम तैयार माल, न्यूनतम बैंक शेष या आकस्मिकताओं के लिए संचय आदि में कार्यशील पूंजी स्थायी तौर पर रखी जाती है।

**ब) चर या अस्थायी कार्यशील पूंजी** - अस्थायी कार्यशील पूंजी का मतलब है कि व्यवसाय को संचालित करने के लिए अतिरिक्त संपत्ति की आवश्यकता के लिए ज़रूरी धनराशि। सीजन में अतिरिक्त स्कंध क्रय करने के लिए अतिरिक्त रोकड़ की आवश्यकता होती है या किसी विशिष्ट विक्रय के लिए माल की आवश्यकता होती है। तात्कालिक रूप से अतिरिक्त चालू सम्पत्तियों में विनियोग, अस्थायी कार्यशील पूंजी कहलाता है। मौसमी व्यवसायों में अस्थायी कार्यशील पूंजी के आँकलन की आवश्यकता होती है।

**कार्यशील पूंजी की विशेषताएँ** - कार्यशील पूंजी की निम्न विशेषताएँ होती है –

1. **अल्प जीवनकाल** - चालू सम्पत्तियों, रोकड़, बैंक शेष, देनदार, प्राप्य विक्रय, स्कंध आदि का जीवनकाल अल्प होता है। ये सामान्यतः एक वर्ष के लिए होती है तथा इसका स्वरूप परिवर्तित होता रहता है। रोकड़ शेष सामान्यतः साप्ताहिक, देनदार/प्राप्य विपत्र एक से तीन माह, स्कंध छः माह से अधिक नहीं रखा जाता है। चालू सम्पत्तियों का जीवनकाल संचालन चक्र की अवधि पर निर्भर करता है।
2. **शीघ्र रूपांतरण** – शीघ्र रूपांतरण कार्यशील पूंजी की दूसरी विशेषता है। चालू सम्पत्तियों एवं चालू दायित्वों के स्वरूप शीघ्र बदलते रहते हैं। रोकड़ कच्चे माल में, कच्चा माल निर्मित माल में, निर्मित माल देनदार में, रोकड़ में देनदार, इस तरह यह सतत् क्रम चलता रहता है।

3. **अल्प अवधि हेतु प्रबंध** - कार्यशील पूँजी अल्पकालीक वित्तीय स्थिति की ओर ध्यान केन्द्रित करती हैं। सामान्यतः एक वर्ष के अल्प समय को ध्यान में रखते हुए सम्पत्तियों का प्रबंध किया जाता है। इसमें रूपये के वर्तमान मूल्य पर विचार नहीं किया जाता है।
4. **बारम्बारता** - कार्यशील पूँजी प्रबंध की गतिविधियाँ बारम्बार एवं पुनरावृत्ति प्रकृति की होती हैं। एक संचालन चक्र पूरा होने पर दूसरा चक्र चालू हो जाता है। ये गतिविधियाँ निश्चित क्रम में, सुव्यवस्थित भी नहीं होती हैं।
5. **तरलता** - कार्यशील पूँजी प्रबंध का मूल तत्व यह है कि व्यवसाय में तरलता इस तरह बनी रहे कि न तो ऊँचे दर का जोखिम हो और न ही विनियोगों पर प्रत्याय दर नीची रहे। वित्तीय प्रबंधक के लिए ऐसा प्रबंध करना चुनौतीपूर्ण कार्य होता है क्योंकि चालू सम्पत्तियों में विनियोग परिवर्तित होता रहता है।
6. **सम्पत्तियों में आन्तरिक संबंध** - चालू सम्पत्तियाँ शीघ्र ही अपना स्वरूप बदलती हैं। इनमें अंतर्सम्बन्ध होता है। चालू सम्पत्तियों को अलग करके नहीं देखा जा सकता। एक सम्पत्ति के संबंध में लिया गया निर्णय दूसरे सम्पत्ति को प्रभावित करता है। विक्रय के स्तर का विश्लेषण किये बिना, स्कंध में विनियोग का स्तर तय नहीं किया जा सकता है। रोकड़ विक्रय की दशा में, देनदार नहीं होंगे।

### कार्यशील पूँजी का चक्रीय तंत्र

कार्यशील पूँजी को चक्रीय पूँजी भी कहा जाता है। इसकी प्रवृत्ति चक्रीय होती है। व्यापार में यह चक्र की भांति गोल घूमी है। रोकड़ से शुरू होती है, स्वरूप बदलती है। कुछ अवधि पश्चात् फिर रोकड़ में परिवर्तित हो जाती है। इस तरह व्यवसाय में पुनरावृत्ति होती रहती है। स्थायी सम्पत्तियों पर पुनः पुनः खर्च नहीं किया जाता किन्तु चालू सम्पत्तियों पर पुनः पुनः खर्च किया जाता है। एक चक्र पूरा होने पर व्यवसाय में साख का सृजन होता है, जितनी अधिक बार यह चक्र पूरा होगा व्यवसाय में लाभ की मात्रा बढ़ जाती है। व्यवसाय में कच्चा माल खरीदकर, मजदूरी, उपरिव्ययों, कारखाना व्ययों, कार्यालय व्ययों का भुगतान करके निर्मित माल तैयार किया जाता है। इसे नकद या उधार बेचकर रोकड़ प्राप्त की जाती है। इस तरह लाभ का सृजन होता है। कर इत्यादि का भुगतान करके यह लाभ व्यवसाय में रख लिया जाता है। यह चक्र परिक्रमा पथ पुनः पुनः निरन्तर चलता रहता है। इस हेतु जो पूँजी या कोष की आवश्यकता होती है, कार्यशील पूँजी कहलाती है। व्यवसाय में कितनी कार्यशील पूँजी की आवश्यकता होती इसका निर्धारण का एक तरीका संचालन चक्र भी है।

**संचालन चक्र**

संचालन चक्र से आशय यह है कि व्यवसाय में कच्चा माल खरीदने से लेकर उसे निर्मित माल में परिवर्तित करना, फिर उसे बेचकर रोकड़ प्राप्त करने की इस प्रक्रिया में लगने वाले समय को संचालन चक्र कहा जाता है। कार्यशील पूँजी की मात्रा का अनुमान संचालन चक्र की सहायता से किया जा सकता है। संचालन चक्र प्राप्यों, स्कंधों, देनदारों, लेनदारों के चक्र को दिनों में विश्लेषित करता है। अर्थात् प्राप्यों से कितने दिनों में रूपया वसूल होगा। स्कंध को विक्रय में परिवर्तित होने में कितना समय लगेगा। लेनदारों को कितने दिनों के अंतराल से भुगतान किया जाता है। कच्चा माल निर्मित माल में कितने दिन से परिवर्तित होता है। इस तरह कुल लगने वाले समय को संचालन चक्र कहा जाता है।

**1.6 कार्यशील पूँजी का निर्धारण (Determination of working capital)**

स्कंध अवधि, देनदार अवधि, लेनदार अवधि की गणना करके संचालन चक्र अवधि ज्ञात कर ली जाती है। इन सूत्रों को यथा स्थान समझाया गया है। वास्तव में संचालन चक्र को पूरा करने में जिस कोष की आवश्यकता होती है उसे कार्यशील पूँजी कहा जाता है।”

**लागत संतुलन:**

कार्यशील पूँजी में संतुलन बहुत आवश्यक है- अनुकूल स्तर प्राप्त करना होता है। जोखिम प्रत्याय संतुलन में एक अलग तरीका है। चालू सम्पत्तियों के विशेष स्तर पर लागत बनाये रखना। चालू सम्पत्तियों को व्यापार में रखने या न रखने के संदर्भ में दो लागत शामिल है।

(अ) तरलता की लागत (ब) अतरलता की लागत।

**अ) तरलता की लागत :-** यदि फर्म में चालू सम्पत्तियों का स्तर बहुत अधिक है जो अत्यधिक तरलता है। ऐसी दशा में सम्पत्तियों पर प्रत्याय कम होगा क्योंकि सम्पत्तियाँ निष्क्रिय रोकड़ और स्कंध में अवरूद्ध हो गई है जो कुछ नहीं कमा रहे। ऊँचे स्तर के देनदार लाभदायकता को घटा रहे हैं। इस तरह चालू सम्पत्तियों के स्तर बढ़ने के साथ, तरलता की लागत में वृद्धि हो जाती है,।

**ब) अतरलता की लागत:** का आशय अपर्याप्त चालू सम्पत्तियाँ रखना, फर्म अपने दायित्वों को चुका नहीं पाती क्योंकि रोकड़ की कमी है। यह दशा फर्म को ऊँची दर से ऋण लेने पर बाध्य करती है। इससे फर्म की उधार लेने की क्षमता प्रभावित होगी और भविष्य में कोष प्राप्त करने में कठिनाई होगी। इन सबसे फर्म विघटन की ओर प्रवृत्त होती है। कम स्तर पर स्कंध की मात्रा विक्रय की हानि कराती है। ग्राहक अन्य प्रतिस्पर्धियों के पास चले जायेंगे। देनदारों का निम्न स्तर कठोर साख नीति के परिणामतः होगी जो कि विक्रय को प्रभावित करेंगे। इस तरह निम्न स्तर की चालू सम्पत्तियों की भी लागत है। चालू सम्पत्तियों का अनुकूलतम स्तर पाने के

लिए लाभदायकता और सक्षमता की गुंथी को कुल लागत को न्यूनतम रखकर किया जा सकता है। चालू सम्पत्तियों के स्तर में बढ़ोतरी से तरलता की लागत बढ़ती है। वहीं अतरलता की लागत घटती है। चालू सम्पत्तियों के स्तर में कमी करने से तरलता की लागत घटती है और अतरलता की लागत बढ़ती है। फर्म को उस स्तर पर चालू सम्पत्तियाँ रखनी चाहिए जहाँ से दोनों लागतें न्यूनतम रहती हो। न्यूनतम लागत बिन्दु अनुकूलतम स्तर कहलाता है।

**कमजोर कार्यशील पूँजी प्रबंध के लक्षण:** सामान्यतः निम्न लक्षण कमजोर कार्यशील पूँजी प्रबंध को इंगित करते हैं:-

1. स्कंध में व्यवसाय की जरूरत से ज्यादा विनियोग लेनदारों की राशि में वृद्धि का कारक बनते हैं। लेनदारों के शेष में वृद्धि प्रबंधकों के लिए तनाव का कारण बनता है। उनके लिए रोकड़ की व्यवस्था करनी होगी।
2. देनदारों से वसूली धीमी हो।
3. रोकड़ का आधिक्य लाभ में वृद्धि नहीं करता।
4. व्यापारिक साख का कम क्षमता से उपयोग हो तो कार्यशील पूँजी कोष की जरूरत अधिक होती है।
5. अति व्यापार की स्थिति कार्यशील पूँजी में कमी दर्शाती है, जो अंततः कंपनी के संचालन में कठिनाई का कारक बनती है।
6. कार्यशील पूँजी कोष से पूँजीगत वस्तुएँ खरीदना इससे कार्यशील पूँजी में कमी होगी।
7. अव्यवस्थित उत्पादन प्रबंध निर्मित माल के आधिक्य और वितरण में कमी या कच्चे माल की कमी का कारक हो सकता है।
8. स्थाई कार्यशील पूँजी हेतु अल्पकालीन स्रोतों पर निर्भरता कम लाभदायक होता है और प्रबंधकों को सदैव कार्यशील पूँजी कोष जुटाने की चिंता रहेगी।
9. विक्रय में कमी एवं चालू दायित्वों में वृद्धि - कार्यशील पूँजी प्रबंध में कठिनाई पैदा करती है।

**कार्यशील पूँजी के पूर्वानुमान की तकनीक (Methods of estimating working capital)-**

कोई भी व्यवसाय बिना पर्याप्त कार्यशील पूँजी के सफलतापूर्वक नहीं चल सकता। "कार्यशील पूँजी व्यवसाय का जीवनरक्त तथा स्नायुकेन्द्र नियंत्रक होती है।" कार्यशील पूँजी की कमी से तुरंत बचने के लिए कार्यशील पूँजी की आवश्यकताओं का पहले से पूर्वानुमान लगा लेना चाहिये। इसके पूर्वानुमान के लिए निम्न तकनीक अपनाई जा सकती है

**(१) संचालनचक्र रीति:** कार्यशील पूँजी की मात्रा संचालनचक्र रीति से निर्धारित की जा सकती है। इस हेतु कुल संचालन व्ययों को कुल संचालन चक्रों से भाग देकर कार्यशील पूँजी की मात्रा निर्धारित की जा सकती है।

**(अ) संचालन व्यय –** किसी अवधि के (गैर नकद खर्ची को छोड़कर) किये गये संचालन व्ययों, यथा सामग्रीक्रय, निर्माणी व्यय, प्रशासनिक व्यय, विक्रय, वितरण व्यय, प्रत्यक्ष व्यय, पैकिंग व्यय आदि को शामिल किया जाता है। हास और नकद खर्च हैं तथा कर एवं लाभांश की राशि लाभों का नियोजन है। अतः परिचालन व्ययों में इन्हें शामिल नहीं किया जाता। संचालन चक्र की अवधि - संचालन चक्र में लगने वाली अवधि अर्थात् संचालन की विभिन्न अवस्थाओं की अवधि के योग में से देनदारों द्वारा प्रदत्त अवधि को घटाने के बाद बची हुई अवधि को कहते हैं। सूत्र रूप में इसे इस प्रकार व्यक्त किया जाता है

$$O = R + W + F + D - C$$

O = परिचालन चक्र अवधि

R = कच्चे माल एवं स्टोर संग्रहण अवधि

W = कच्चे माल को निर्मित माल में परिवर्तन की अवधि

F = निर्मित माल संग्रहण अवधि

D = देनदार संग्रहण अवधि

C = लेनदारों को भुगतान अवधि

इनकी गणना इस प्रकार होती है -

- (अ) **सामग्री संग्रहण विधि** – उत्पादन हेतु निर्गमन से पूर्व जितने दिन कच्ची सामग्री को स्टोर में रखना होता है उसे सामग्री संग्रहण अवधि कहते हैं।

$$\text{सामग्री संग्रहण अवधि} = \frac{\text{कच्चे माल का औसत स्कंध}}{\text{प्रतिदिन औसत उपभोग}}$$

$$\text{औसत स्कंध} = \frac{\text{कच्चे माल का प्रारंभिक स्कंध} + \text{अंतिम स्कंध}}{2}$$

$$\text{औसत दैनिक उपभोग} = \frac{\text{वार्षिक उपभोग}}{365}$$

- (ब) **रूपांतरण अवधि** – जितनी अवधि में कच्चा माल निर्मित माल में परिवर्तित होता है उसे रूपांतरण अवधि कहते हैं।

$$\text{रूपांतरण अवधि} = \frac{\text{अर्द्धनिर्मित माल का औसत स्कंध}}{\text{प्रतिदिन औसत कारखाना लागत}}$$

$$\text{औसत स्कंध} = \frac{\text{कच्चे माल का प्रारंभिक स्कंध} + \text{अंतिम स्कंध}}{2}$$

$$\text{औसत दैनिक कारखाना लागत} = \frac{\text{कुल कारखाना लागत}}{365}$$

- (स) **तैयार माल संग्रहण अवधि** – माल निर्मित होने के बाद जितनी अवधि तक गोदाम में रहता है उसे तैयार माल संग्रहण अवधि कहते हैं।

$$\text{निर्मित माल संग्रहण अवधि} = \frac{\text{औसत निर्मित माल का स्कंध}}{\text{औसत दैनिक बिक्री लागत}}$$

$$\text{औसत स्कंध} = \frac{\text{निर्मित माल का प्रारंभिक स्कंध} + \text{अंतिम स्कंध}}{2}$$

$$\text{औसत दैनिक बिक्री लागत} = \frac{\text{वर्ष के विक्रय की लागत}}{365}$$

(द) **औसत वसूली अवधि** – देनदारों से रूपया वसूल होने में जितनी अवधि लगती है उसे औसत वसूली अवधि कहते हैं।

$$\text{औसत संग्रहण अवधि} = \frac{\text{औसत प्राप्त/देनदार}}{\text{दैनिक औसत उधार विक्रय}}$$

$$\text{औसत देनदारी} = \frac{\text{प्रारंभिक देनदार} + \text{अंतिम देनदार}}{2}$$

$$\text{दैनिक औसत विक्रय} = \frac{\text{वार्षिक उधार विक्रय}}{365}$$

(इ) **औसत भुगतान अवधि** – लेनदारों को नकद भुगतान देने में जितनी अवधि लगती है उसे औसत भुगतान अवधि कहते हैं।

$$\text{औसत भुगतान अवधि} = \frac{\text{औसत लेनदार}}{\text{औसत उधार दैनिक क्रय}}$$

$$\text{औसत लेनदार} = \frac{\text{लेनदारों का प्रारंभिक शेष} + \text{अंतिम शेष}}{2}$$

$$\text{औसत उधार क्रय} = \frac{\text{कुल उधार क्रय}}{365}$$

उपरोक्त क्रमांक 1 से 4 तक की अवधि का योग लगाकर उसमें से क्रमांक 5 की अवधि घटा देने पर संचालन चक्र की कुल अवधि ज्ञात हो जाती है। वर्ष के संचालन चक्रों की संख्या वर्ष के दिन 365 को संचालन अवधि से भाग देने पर प्राप्य फल संचालन चक्र की संख्या ज्ञात हो जाती है। कार्यशील पूंजी की राशि निम्न सूत्र से ज्ञात होती है।

$$\text{कार्यशील पूंजी की राशि} = \frac{\text{वर्ष में कुल संचालन व्यय}}{\text{संचालन चक्रों की संख्या}}$$

2) **चालू सम्पत्तियों एवं चालू दायित्वों का पूर्वानुमान** - इस विधि में चालू सम्पत्तियों और चालू दायित्वों का अनुमान लगाया जाता है जो कि भविष्य में होने वाले लेन देनों पर आधारित होते हैं। चालू सम्पत्तियों में से चालू दायित्वों को घटा देने पर कार्यशील पूँजी की मात्रा ज्ञात हो जाती है। आकरिस्मक राशियों का समायोजन किया जाता है। विगत अनुभवों, फर्म की साख नीति, स्कंध नीति, भुगतान अवधि का ध्यान रखकर अनुमान लगाये जाते हैं।

3) **रोकड़ पूर्वानुमान विधि** - इसी रीति के अंतर्गत आगामी अवधि में होने वाली प्राप्तियों एवं भुगतानों का अनुमान लगाया जात है। प्राप्ति और भुगतानों के अंतर की राशि कमी या आधिक्य को प्रदर्शित करती है। कमी की दशा में आवश्यकता राशि का अर्थ प्रबंधन किया जाता है यह रीति रोकड़ बजट का ही एक रूप है।

4) **प्रक्षेपी चिह्न** - आगामी अवधि में होने वाले लेन देनों को ध्यान में रखकर सम्पत्तियों एवं दायित्वों का अनुमान लगाया जाता है। यह अनुमान दी गई सूचनाओं के आधार पर लगाया जाता है। सम्पत्तियों एवं दायित्वों के अंतर की राशि को कार्यशील पूँजी के रूप में लिया जाता है।

5) **लाभ-हानि समायोजन रीति**- यह विधि रोकड़ और गैर रोकड़ व्यवहारों पर आधारित है। इस विधि में बजटेड शुद्ध लाभ में सम्पत्तियों और दायित्वों में उन परिवर्तन को जोड़कर या घटाकर समायोजित किया जाता है जो रोकड़ पर प्रभाव डालते हैं। इसमें यह माना जाता कि लाभ रोकड़ के तुल्य होगा इस विधि से रोकड़ का पुर्वानुमान लगाने के लिए बजट अवधि का बजटेड लाभ-हानि खाता तैयार किया जाता है बजटेड चिह्न की आवश्यकता होती है। पिछले वर्ष कि अन्त कि चिह्ने कि आवश्यकता होती है। कम्पनी के वार्षिक संचालन बजट से हास,कर लाभांश शुद्ध आय की जानकारी मिल जाती है। जबकि कार्यशील पूँजी में परिवर्तन का अनुमान लगाने में कठिनाई होती है-इस हेतु लोकप्रिय तरीका अनुपातों का प्रयोग किया जाता है और अनुमानित राशियों कि गणना की जाती है- दीर्घकालीन रोकड़ बजट का निर्माण रोकड़ प्रवाह विवरण के रूप में किया जाता है— रोकड़ में वृद्धि, व्यवसाय संचालन से आय, चालू सम्पत्तियों में कमी, स्थाई सम्पत्तियों कि बिक्री, पूँजी की प्राप्ति, से होती है। रोकड़ मे कमी, चालू सम्पत्तियों में वृद्धि, लाभांश कर में भुगतान, स्थाई सम्पत्तियों के क्रय तथा दायित्वों में कमी के कारण होती है। इस प्रकार रोकड़ अनुमान करने की विधि समायोजित लाभ-हानि विधि कहा जाती है।

## कार्यशील पूंजी आंकलन के उदाहरण (Illustrations on Determination of working capital) -

I. वर्तमान संपत्ति:	धनराशि	धनराशि	धनराशि
न्यूनतम नकद शेष राशि		****	
सूची:			
कच्चा माल	****		
अर्द्ध-निर्मित सामान (W.I.P.)	****		
तैयार माल	****	****	
प्राप्तियों			
देनदार	****		
विधेयकों	****	****	
सकल कार्यशील पूंजी (सीए)		****	****
2. वर्तमान देनदारियां :	धनराशि	धनराशि	
माल खरीद के लिए क्रेडिटर्स	****		
मजदूरी के लिए क्रेडिटर्स	****		
ओवरहेड्स के लिए क्रेडिटर्स	****		
कुल वर्तमान देयताएं (सीएल)	****	****	****
(सीए) – (सीएल)			****
+ सुरक्षा मार्जिन			****
नेट वर्किंग कैपिटल (सीए-सीएल)			****

## उदाहरण 1

हाई-टेक लिमिटेड अगले साल 30,000 इकाइयों को बेचने की योजना बना रहा है। बेची गई वस्तुओं की अपेक्षित लागत निम्नानुसार है:

	रुपये (प्रति इकाई)
कच्चा माल	100
विनिर्माण खर्च	30
बेचना, प्रशासन और वित्तीय खर्च	20
विक्रय मूल्य	200

ऑपरेटिंग चक्र के विभिन्न चरणों में अवधि निम्नानुसार होने की उम्मीद है:

कच्चे माल चरण	2 महीने
कार्य-प्रगति चरण	1 महीने
समाप्त चरण	1/2 महीने
देनदार मंच	1 महीने

2,500 इकाइयों के मासिक बिक्री स्तर को मानते हुए, सकल कार्यशील पूंजी आवश्यकता का अनुमान लगाएं। वांछित नकदी शेष सकल कामकाजी पूंजी आवश्यकता का 5% है, और विनिर्माण खर्चों के संबंध में 25% पूर्ण कार्य प्रगति है।

**समाधान:**

**कार्यशील पूंजी आवश्यकता का बयान**

वर्तमान संपत्ति:	Amt. (Rs.)	Amt. (Rs.)
कच्चे माल का स्टॉक (2,500 × 2 × 100)		5,00,000
कार्य प्रगति पर है:		
कच्चे माल (2,500 × 100)		2,50,000
विनिर्माण व्यय का 25% (2,500 × 30)	18750	2,68,750
तैयार माल:		
कच्चे माल (2,500 × 1/2 × 100)		1,25,000
विनिर्माण व्यय (2,500 × 1/2 × 30)	37500	1,62,500
देनदार (2,500 × 150)		<u>3,75,000</u>
कुल:		13,06,250
कैश बैलेंस (13,06,250 × 5/95)		<u>68,750</u>
कार्यशील पूंजी आवश्यकता		<u>13,75,000</u>

नोट: समापन स्टॉक के मूल्यांकन में बेचना, प्रशासन और वित्तीय खर्च शामिल नहीं किए गए हैं।

**उदाहरण 2**

निम्नलिखित जानकारी से एसआरसीसी लिमिटेड के लिए कार्यशील पूंजी आवश्यकता की मात्रा की गणना करें:

	प्रति यूनिट (रुपये)
कच्चे माल	160
प्रत्यक्ष श्रम	60
ओवरहेड्स	120
कुल लागत	340
लाभ	60
बिक्री मूल्य	400

- कच्चे माल को एक महीने के लिए औसतन स्टॉक में रखा जाता है।
- सामग्री औसतन एक महीने के लिए प्रक्रिया में हैं।
- तैयार माल एक महीने के लिए औसत पर स्टॉक में हैं।
- आपूर्तिकर्ताओं द्वारा अनुमत क्रेडिट 1 महीने है और देनदारों को दी गई क्रेडिट 2 महीने है।
- मजदूरी के भुगतान में समय अंतराल 1½ सप्ताह है। ओवरहेड व्यय के भुगतान में समय अंतराल एक महीने है।
- बिक्री का एक चौथाई नकद आधार पर किया जाता है।
- 50,000रुपये की राशि नगद और बैंक में नकद रुपये होने की उम्मीद है।
- एक वर्ष के लिए 1,04,000 इकाइयों की मात्रा अनुमानित है।

आप मान सकते हैं कि उत्पादन पूरे वर्ष समान रूप से किया जाता है और चार सप्ताह की समयावधि एक महीने के बराबर होती है।

**समाधान: कार्यशील पूंजी आवश्यकता का आँकलन**

1. वर्तमान संपत्ति:	राशि (₹)	राशि (₹)
नकदी शेष		50,000
कच्चे माल का स्टॉक (2,000×160×4)		12,80,000
कार्य प्रगति में:		

कच्चे माल (2,000×160×2)	6,40,000	
श्रम और ओवरहेड्स (2,000×180×2)×50%	<u>3,60,000</u>	10,00,000
तैयार माल (2,000×340×4)		27,20,000
देनदार (2,000×75%×340×8)		<u>40,80,000</u>
कुल मौजूदा संपत्ति		<u>91,30,000</u>
<b>2. वर्तमान देयताएं:</b>		
क्रेडिटर्स (2,000×160×4)		12,80,000
मजदूरी के लिए क्रेडिटर्स (2,000×60×1½)		1,80,000
ओवरहेड्स के लिए क्रेडिटर्स (2,000×120×4)		<u>9,60,000</u>
कुल मौजूदा देनदारियाँ		<u>24,20,000</u>
नेट कार्यशील पूंजी (CA-CL)		<u>67,10,000</u>

**उदाहरण 3**

जेबीसी लिमिटेड 25% के सकल लाभ पर सामान बेचता है। मूल्यहास, उत्पादन की लागत के हिस्से के रूप में माना जाता है। आपको दिए गए वार्षिक आंकड़े निम्नलिखित हैं:

बिक्री (sales) (2 महीने का क्रेडिट)	₹
18,00,000	
उपभोग की गई सामग्री (consumed material) (1 महीने का क्रेडिट)	₹ 4,50,000
मजदूरी का भुगतान (labour) (भुगतान में 1 महीने अंतराल)	₹ 3,60,000
नकदी निर्माण खर्च (cash expenses) (भुगतान में 1 महीने अंतराल)	₹ 4,80,000
प्रशासनिक खर्च (admin. expenses) (भुगतान में 1 महीने अंतराल)	₹ 1,20,000
बिक्री वितरण व्यय (sales distribution expenses) (अग्रिम में त्रैमासिक भुगतान)	₹ 60,000

कंपनी कच्चे माल और तैयार माल के लिए एक महीने का स्टॉक रखती है। कंपनी रुपये 1,00,000 नकद रखती है। 15% सुरक्षा मार्जिन मानते हुए, नकदी लागत के आधार पर कंपनी की कार्यशील पूंजी आवश्यकताओं का आकलन करना है।

**समाधान:** कार्यशील पूंजी आवश्यकता का आँकलन

<b>1. वर्तमान संपत्ति:</b>	<b>(₹)</b>
नकद	
1,00,000	
देनदार (बिक्री की लागत यानी $14,70,000 \times 2/12$ )	
2,45,000	
प्रीपेड सेल्स प्रमोशन व्यय	15,000
<b>सूची:</b>	
कच्चे माल ( $4,50,000/12$ )	37,500
तैयार माल ( $12,90,000/12$ )	
1,07,500	
<b>कुल वर्तमान संपत्ति (सीए)</b>	
<b>5,05,000</b>	
<b>2. वर्तमान देयताएं:</b>	
छिटपुट लेनदारों ( $4,50,000/12$ )	37,500
उत्कृष्ट विनिर्माण विस्तार ( $4,80,000/12$ )	40,000
उत्कृष्ट प्रशासनिक विस्तार ( $1,20,000/12$ )	10,000
उत्कृष्ट मजदूरी ( $3,60,000/12$ )	30,000
कुल मौजूदा देनदारियां (सीएल)	1,17,500
= सीए - सीएल	
<b>3,87,500</b>	
+ 15% आकस्मिकताओं के लिए	
<b>58,125</b>	
<b>कार्यशील पूंजी की आवश्यकता</b>	<b>4,45,625</b>

**कार्य नोट्स:****1. लागत संरचना**

रु

बिक्री

**18,00,000**

- बिक्री पर सकल लाभ 25%

(4,50,000)

उत्पादन की लागत

**13,50,000**

- सामग्री की लागत

4,50,000

- मजदूरी

3,60,000

8,10,000

विनिर्माण खर्च (कुल)

**5,40,000**

- नकद विनिर्माण खर्च

**(4,80,000)**

इसलिए, मूल्यहास (depreciation)

**60,000****2. कुल नकदी लागत:**

उत्पादन की लागत

13,50,000

- मूल्यहास

(60,000)

+ प्रशासनिक खर्च

1,20,000

+ बिक्री पदोन्नति खर्च

60,000

**कुल नकदी लागत**

14,70,000

**उदाहरण 4**

एक कंपनी की एक प्रोफार्मा लागत पत्र निम्नलिखित विवरण प्रदान करता है:

लागत के तत्व, सामग्री, प्रत्यक्ष श्रम, ऊपरी खर्च निम्नलिखित और विवरण उपलब्ध हैं:

- (a) 2,00,000 इकाइयों की गतिविधि के स्तर को बनाए रखने का प्रस्ताव है।
- (b) बिक्री मूल्य प्रति इकाई 12/- है।
- (c) कच्चे माल की दुकानों में एक महीने की औसत अवधि के लिए रहने की उम्मीद है।
- (d) सामग्री आधे महीने में, प्रक्रिया में होगी।
- (e) समाप्त माल एक महीने की औसत अवधि के लिए स्टॉक में होना आवश्यक है।
- (f) देनदारों को दी गई क्रेडिट दो महीने की है।
- (g) ऋणदाता/आपूर्तिकर्ताओं द्वारा एक महीने की अनुमति दी गई है।

आप मान सकते हैं कि बिक्री और उत्पादन के लिए एक सुसंगत पैटर्न का पालन करना होगा, आपको कंपनी की कार्यशील पूंजी आवश्यकताओं, पूर्वानुमान लाभ और हानि खाते और बैलेंस शीट का बयान तैयार करना होगा

<b>कार्यशील पूंजी का बयान</b>		
<b>वर्तमान संपत्ति:</b>	<b>रु</b>	<b>रु</b>
<b>कच्चे माल का स्टॉक (1 महीने)</b>		<b>80,000</b>
<b>काम प्रगति (1/2 महीने):</b>		
सामग्री	40,000	
श्रम	20,000	
ऊपरी खर्च	20,000	<b>80,000</b>

<b>तैयार माल का स्टॉक (1 महीने)</b>		
सामग्री	80,000	
श्रम	40,000	
ऊपरी खर्च	40,000	1,60,000
<b>देनदार (2 महीने) कीमत पर</b>		
सामग्री	1,60,000	
श्रम	80,000	
ऊपरी खर्च	80,000	3,20,000
		6,40,000
<b>कम: वर्तमान देयताएं:</b>		
कच्चे माल लेनदार (1 माह)		80,000
<b>नेट कार्यशील पूंजी की आवश्यकता</b>		<b>5,60,000</b>

(Note: बिक्री = 2,00,000 × 12 = Rs. 24,00,000)

<b>पूर्वानुमान लाभ और हानि खाता</b>			
साल समाप्त होने के लिए ...।			
	रु		रु
सामग्री के लिए	9,60,000	पुराने सामानों की अच्छी कीमतों से	19,20,000
मजदूरी के लिए	4,80,000		
ओवरहेड्स करने के लिए	4,80,000		

	19,20,000		19,20,000
बेची गई वस्तुओं की लागत	19,20,000	बिक्री से	24,00,000
सकल लाभ सी / डी के लिए	4,80,000		
	24,00,000		24,00,000
डिबेंचरों पर ब्याज के लिए	16,000	सकल लाभ बी/डी द्वारा	4,80,000
शुद्ध लाभ के लिए	4,64,000		
	4,80,000		4,80,000

**पूर्वानुमान बैलेंस शीट**

दिनांक पर .....

देयताएं	रु	संपत्ति	रु.
शेयर पूंजी	15,00,000	अचल सम्पत्ति	13,00,000
8% डिबेंचर	2,00,000	स्टॉक्स:	
शुद्ध लाभ	4,64,000	कच्चा माल	80,000
लेनदारों	80,000	कार्य में प्रगति	80,000
		तैयार माल	1,60,000
		देनदार	4,00,000
		नकद और बैंक शेष राशि	
		(संतुलन आंकड़ा)	2,24,000
	22,44,000		22,44,000

**कार्य नोट्स:**

- निम्नलिखित कारणों से कार्यशील पूंजी आवश्यकताओं की तैयारी करते समय लाभों को अनदेखा कर दिया गया है:
  - i. लाभ पूंजी के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है या नहीं।
  - ii. भले ही मुनाफे को कामकाजी पूंजी के लिए इस्तेमाल किया जाए, फिर भी उन्हें आयकर, लाभांश इत्यादि की मात्रा से कम किया जाना चाहिए।
- डिबेंचरों पर ब्याज का भुगतान किया गया माना जाता है।

**(स) चक्रीय पूंजी वह पूंजी है जिसमें सम्पत्तियाँ बारम्बार तेजी से एक रूप से दूसरे रूप में परिवर्तित होती रहती है। चालू सम्पत्तियाँ वास्तव में चक्रीय पूंजी ही है, क्योंकि इनका स्वरूप निरन्तर परिवर्तित होता रहता है। इसलिए कार्यशील पूंजी को चक्रीय पूंजी भी कहा जाता है।**

एडम स्मिथ के शब्दों में - "चालू सम्पत्तियों को चक्रीय पूंजी कहना अधिक उपयुक्त माना जाता है। व्यवसायी का माल जब तक लाभ या धनराशि नहीं देता, जब तक की वह उसे मुद्रा के बदले बेच न दे तथा जब तक इस मुद्रा के बदले वापस माल प्राप्त नहीं किया जाता, तब तक यह मुद्रा उसे बहुत कम प्रत्याय या लाभ देगी। उसकी पूंजी लगातार एक रूप में उसके पास से जाती है तथा दूसरे रूप में उसके पास आ जाती है तथा यह चक्र या निरन्तर आदान-प्रदान ही उसे लाभ प्रदान करता है। अतः ऐसी पूंजी को यथार्थ में चक्रीय पूंजी कहा जा सकता।" ब्राउन एवं हावर्ड ने इसकी तुलना नदी से करते हुए कहा है कि जैसे नदी वहीं रहती है, लेकिन पानी का स्तर सतत बदलता रहता है।"

वी.ई. राममूर्ति के शब्दों में - "वास्तव में सही रूप में कार्यशील पूंजी व्यवसाय के पूंजी संरचना का एक अंग है जो कि सम्पूर्ण व्यवसाय तंत्र की आंतरिक बनावट का निर्माण करता है।"

**2) संचालक चक्र अवधारणा (Operating Cycle Approach) –**

“व्यवसाय के शुद्ध संचालन चक्र की अवधि के लिए संचालन के विभिन्न स्वरूपों के लिए लगने वाली पूंजी की मात्रा को कार्यशील पूंजी कहा जाता है। कार्यशील पूंजी की मात्रा व्यवसाय के संचालन चक्र की अवधि पर निर्भर करती है।”

किसी व्यवसाय में कच्चा माल खरीदना, उससे निर्मित माल तैयार करना, फिर उसे बेचने के तत्पश्चात् रोकड़ वसूल करना, यह संचालन कार्य चलता रहता है। इन कार्यों को पूरा करने में समय लगता है। इन सतत

क्रियाओं में लगने वाले समय के कुल योग को संचालन अवधि (Operating cycle) कहा जाता है। इस संचालन अवधि के लिए पूँजी अवरूद्ध होती है।

इस कार्य के लिए जो पूँजी की आवश्यकता होगी उसे कार्यशील पूँजी कहा जाता है अर्थात् रोकड़ का माल में, माल का निर्मित माल में, निर्मित माल को विक्रय द्वारा देनदार या प्राप्य विपत्र में फिर देनदार एवं प्राप्य विपत्र को रोकड़ प्राप्त करने में जितनी अवधि लगी है उतनी अवधि के लिए जिस पूँजी की आवश्यकता होगी उसे कार्यशील पूँजी कहा जाता है। लेनदारों से प्राप्त भुगतान अवधि को उपरोक्त कुल अवधि से घटा देने पर शुद्ध संचालन अवधि (Net Operating Cycle) ज्ञात हो जाती है।

यह अवधारणा पारम्परिक अवधारणा की तुलना में अधिक उपयुक्त है। व्यवसाय की विभिन्न गतिविधियों तथा उत्पादन प्रबंधकीय उपरिव्ययों, विक्रय वितरण उपरिव्ययों में लगने वाले आवश्यक तरल कोष की गणना पूर्व में ही की जा सकती है। इस हेतु आवश्यक प्रबंध उचित तरीके से हो सकते हैं। जिसके कारण स्कंध एवं सामाग्री पर नियंत्रण भी प्रभावी ढंग से हो पाता है। संचालनचक्र, कार्यशील पूँजी के अनुमान लगाने का विशिष्ट साधन है, जिसके कारण नकद पूँजी प्रवाह की गणना भी संभव हो पाती है।

## 1.7 सारांश

कार्यशील पूँजी का कुशल प्रबंधन किसी भी कंपनी के मुनाफे और समग्र वित्तीय स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। कार्यशील पूँजी वह नकदी है जो कंपनियां अपने कारोबार को चलाने और संचालित करने के लिए उपयोग करती हैं। कार्यशील पूँजी के घटकों या पहलुओं से, जो निवेशकों और विश्लेषकों का मूल्यांकन किसी कंपनी का मूल्यांकन करने के लिए होता है, वे कंपनी के नकदी प्रवाह के लिए प्रमुख तत्व होते हैं - धन आ रहा है, पैसा बाहर जा रहा है और सूची का प्रबंधन किया जा रहा है। खाता प्राप्ति योग्य है - जो कि किसी कंपनी को अपने ग्राहकों द्वारा बिक्री के लिए दिया जाता है। कंपनी के चिकनी वित्तीय संचालन के लिए समय-समय पर, प्राप्य खातों का कुशल संग्रह आवश्यक है। प्राप्य खातों को कंपनी की बैलेंस शीट पर परिसंपत्तियों के रूप में सूचीबद्ध किया गया है, लेकिन जब तक वे एकत्रित नहीं किए जाते हैं तब तक वे वास्तव में संपत्ति नहीं होते हैं। एक सामान्य मीट्रिक विश्लेषकों का आकलन करने के लिए कि कंपनी के प्राप्य खातों के प्रबंधन से निपटने के लिए दिन का समय बकाया है, जो बताता है कि कंपनी की बिक्री में राजस्व लेने के लिए कितने दिनों की औसत संख्या है। देय खातों, जो पैसा कंपनी को अल्पावधि में भुगतान करने के लिए बाध्य है, वह भी कार्यशील पूँजी प्रबंधन का एक महत्वपूर्ण घटक है। कंपनियां भुगतान के रूप में लंबे समय तक अधिकतम नकदी प्रवाह बनाए रखने के बीच एक संतुलन को हड़ताल करने की कोशिश करती हैं और यथासंभव

संभवतः सकारात्मक क्रेडिट रेटिंग और आपूर्तिकर्ताओं और लेनदारों के साथ अच्छे संबंध बनाए रखने की आवश्यकता है। आदर्श रूप से, प्राप्य एकत्र करने का एक कंपनी का औसत समय पेबल्स को तय करने के लिए औसत समय से काफी कम है।

## 1.8 बोध प्रश्न

1. कार्यशील पूंजी को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों की व्याख्या करें?
2. पर्याप्त कार्यशील पूंजी के फायदे क्या हैं?
3. कार्यशील पूंजी का एक उपयुक्त वित्तपोषण मिश्रण निर्धारित करने के लिए विभिन्न दृष्टिकोण पर चर्चा करें?
4. क्या आपको लगता है कि पर्याप्त कामकाजी पूंजी एक फर्म को अनुकूल बाजार स्थितियों का फायदा उठाने में सक्षम बनाती है? उचित कारणों से अपने उत्तर का समर्थन करें।
5. एक फर्म का शुद्ध कार्यशील पूंजी कभी कभी, लंबी अवधि के धन के साथ वित्त पोषण मौजूदा परिसंपत्तियों के भाग के रूप में परिभाषित किया गया है आप रेखचित्र दिखा सकते हैं क्यों यह परिभाषा मान्य है?
6. वर्तमान और स्थाई परिसंपत्तियों पर रिटर्न और मौजूदा देनदारियों और दीर्घकालिक फंडों की लागत के बीच अंतर कैसे निर्धारित किया जा सकता है यह निर्धारित करने के लिए कि फर्म की शुद्ध कार्यशील पूंजी को कैसे बदला जाए?

## 1.9 संदर्भ ग्रंथ

- D.R. Mehta, Working Capital Management, Prentice-Hall Inc., 1974.
- K.V. Smith, Management of Working Capital, McGraw-Hill, New York.
- Khan and Jain, Financial Management, Tata McGraw-Hill.

- Pandey, Financial Management, Vikas Annex. 54. J.3 -MBA - Finance - SDE  
Page 20 of 23.
- Prasanna Chandra, Financial Management, Theory and Practice, Tata McGraw-Hill.
- V.K. Bhalla, Working Capital Management – Text and Cases, Sixth Edition, Anmol Publications

## इकाई – II: कार्यशील पूंजी की योजना तथा वित्तपोषण

### इकाई की संरचना

#### 2.1 उद्देश्य

#### 2.2 प्रस्तावना

#### 2.3 कार्यशील पूंजी के उद्देश्य तथा तत्व

#### 2.4 कार्यशील पूंजी के स्रोत

#### 2.5 कार्यशील पूंजी के प्रबंधन के लिए टंडन समिति और कोर समिति की सिफारिशें

#### 2.6 तरलता का मापन और तरलता मापन का अनुपात

#### 2.7 सारांश

#### 2.8 बोध प्रश्न

#### 2.9 संदर्भ ग्रंथ

### 2.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप निम्नलिखित को समझ सकेंगे:

- कार्यशील पूंजी के उद्देश्य, तत्व तथा स्रोतों को ।
- कार्यशील पूंजी के प्रबंधन के लिए टंडन समिति और कोर समिति की सिफारिशों को ।
- तरलता के मापन और तरलता मापन के अनुपात को ।

## 2.2 प्रस्तावना

व्यवसाय में पर्याप्त मात्रा में कार्यशील पूंजी का होना आवश्यक है। इस दृष्टि से व्यवसाय की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए कार्यशील पूंजी की मात्रा आवश्यकता अनुसार होने चाहिए। कार्यशील पूंजी के प्रबन्ध का उद्देश्य संस्था की चालू सम्पत्तियों एवं चालू दायित्वों के मध्य इस प्रकार सामंजस्य स्थापित करना होता है कि, कार्यशील पूंजी की मात्रा का निर्धारण अनुकूलतम हो सके। अतः कार्यशील पूंजी का प्रबन्ध वित्तीय प्रबन्ध का आंतरिक भाग है। इसलिए कार्यशील पूंजी का प्रबन्ध एक संस्था के आर्थिक स्रोतों पर नियंत्रण करने एवं उसकी लाभदायिकता को बनाये रखने में सहायक सिद्ध होता है। कार्यशील पूंजी का प्रबन्ध उस संस्था की जोखिम, तरलता एवं लाभदायिकता के बीच सही सामंजस्य बनाए रखने में सहायता करता है।

कार्यशील पूंजी प्रबन्ध का सम्बन्ध चालू सम्पत्तियों व चालू दायित्वों के अन्तर्सम्बन्धों को व्यवस्थित करने से होता है। “कार्यशील पूंजी प्रबन्ध उन समस्याओं से सम्बन्धित है जो चालू सम्पत्तियों, चालू दायित्वों एवं पारस्परिक अन्तरसम्बन्धों को प्रबन्धित करने से उत्पन्न होती है। “कार्यशील पूंजी प्रबन्ध विविध चालू सम्पत्तियों जैसे, रोकड़ एवं विपणन योग्य प्रतिभूतियां प्राप्य विपत्र एवं रहतिया के प्रशासन से सम्बन्धित होता है।

## 2.3 कार्यशील पूंजी के उद्देश्य तथा तत्व

### कार्यशील पूंजी प्रबंध के उद्देश्य (Objectives of Working capital management) –

कार्यशील पूंजी प्रबंध के निम्न उद्देश्य होते हैं –

- (1) चालू सम्पत्तियों में अनुकूलतम विनियोग रखते हुए चालू दायित्वों का स्तर घटाना चाहिए इससे कार्यशील पूंजी में, कोष कम अवरूद्ध होगा, जिससे विनियोजित पूंजी पर प्रत्याय बढ़ सकेगा।
- (2) चालू पूंजी के प्रबंध का उद्देश्य यह है कि संस्था अपने दायित्वों को चुकाने की स्थिति में बनी रहे। इसके लिए पर्याप्त चालू सम्पत्तियों की व्यवस्था रहे, किन्तु कार्यशील पूंजी में कोषों का अधिक विनियोग प्रत्याय की दर को नीचा करता है।
- (3) चालू सम्पत्तियों का प्रबंध इस प्रकार करना चाहिए कि इन सम्पत्तियों में विनियोजित राशि पर सीमांत प्रत्याय, विनियोजित पूंजी की लागत से कम न हो।

(4) चालू सम्पत्तियों और चालू दायित्वों में संतुलन इस प्रकार बनाना चाहिए कि दिन-प्रतिदिन के दायित्वों को पूरा किया जा सके।

**कार्यशील पूँजी का महत्व** - व्यवसाय को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए पर्याप्त कार्यशील पूँजी की आवश्यकता होती है। व्यवसाय का संचालन कार्यशील पूँजी के माध्यम से ही हो सकता है। व्यवसाय में स्थिर सम्पत्तियों के साथ-साथ चालू पूँजी की व्यवस्था भी अनिवार्य है।

व्यवसाय में कार्यशील पूँजी की मात्रा पर्याप्त होना चाहिये। व्यवसाय में अत्यधिक कार्यशील पूँजी होना या कार्यशील पूँजी की अल्पता होना, ये दोनों ही बिन्दु विपरीत परिस्थितियों का संकेत देते हैं।

कार्यशील पूँजी की अल्पता या अपर्याप्तता व्यवसाय की असफलता का कारण बन सकता है। तकनीकी दिवालियापन की स्थिति निर्मित हो सकती है। वहीं कार्यशील पूँजी की अधिकता अधिक तरलता प्रदान करती है। विनियोग व्यर्थ होते हैं, उन पर लाभ प्राप्त नहीं होता और कोषों की लागत बढ़ जाती है।

### **कार्यशील पूँजी की आवश्यकता के निर्धारक तत्व (Elements of Working Capital requirements)-**

किसी भी व्यावसायिक संस्था में कार्यशील पूँजी कितनी होनी चाहिए इसका निर्धारण करने का कोई निश्चित तरीका या नियम नहीं है। अतः यह एक कठिन कार्य है और यह विभिन्न कारणों से प्रभावित होती है। एक संस्था में विभिन्न परिस्थितियों में कार्यशील पूँजी की गणना और मात्रा अलग हो सकती है। कार्यशील पूँजी की मात्रा को प्रभावित करने वाले निर्धारक तत्वों, निम्न प्रकार हैं -

1. **व्यवसाय की प्रकृति** - कार्यशील पूँजी की मात्रा व्यवसाय की प्रकृति पर निर्भर करती है। जनपयोगी संस्थाएँ रेलवे, विद्युत कम्पनी, जल आपूर्ति संस्थान में सीमित कार्यशील पूँजी की आवश्यकता होती है, यहाँ नकद बिक्री होती है, स्कंध की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि ये संस्थाएँ सेवाएँ प्रदान करती हैं। व्यावसायिक व्यापारिक संस्थाएँ, स्थाई सम्पत्तियों में कम मात्रा में विनियोग करती हैं, लेकिन यह संस्थाएँ स्कंधों, प्राप्यों एवं रोकड़ जैसी चल सम्पत्तियों में अधिक राशि विनियोजित करती हैं। निर्माण संस्थाओं में कार्यशील पूँजी अधिक मात्रा में चाहिए होती है। उत्पादन प्रक्रिया में लगने वाला समय, उधार बिक्री, आदि इसके कारक हैं।
2. **व्यवसाय का आकार** - व्यवसाय के आकार परिचालन के स्तर के आधार पर भी कार्यशील पूँजी की मात्रा निर्धारित होती है। बड़े स्तर के व्यावसायिक संस्थानों में बड़ी रकम, कार्यशील पूँजी के लिए चाहिए होती है वही छोटे व्यापारिक संस्थानों में सामान्यतः कम पूँजी की आवश्यकता होती है। कुछ

दशाओं में छोटे प्रतिष्ठानों में ऊँचे परिव्यय, संसाधनों के अकुशल प्रयोग के कारण भी अधिक कार्यशील पूँजी की आवश्यकता हो सकती है।

3. **निर्माण प्रक्रिया** - निर्माण व्यवसाय में कार्यशील पूँजी की आवश्यकताएँ निर्माणी प्रक्रिया की अवधि के प्रत्यक्ष अनुपात में बदलती है। निर्माण अवधि लंबी होगी तो उसी के अनुरूप कच्चा माल तथा अन्य सामग्री निर्माण प्रक्रिया में लंबे समय तक अवरूद्ध रहेगी, साथ ही साथ श्रम व अन्य लागतों में भी क्रमिक वृद्धि होती है। फलस्वरूप अधिक कार्यशील पूँजी की आवश्यकता होती है।
4. **मौसमी परिवर्तन** - कुछ उद्योगों में कच्ची सामग्री पूरे वर्ष उपलब्ध नहीं होती। उत्पादन प्रक्रिया निर्बाध रूप से चलती रहे इसके लिए मौसम में प्रचुर मात्रा में कच्चे माल का स्कंध रखने के लिए भी बड़ी राशि की आवश्यकता होती है। व्यवसाय में तेजी के समय अधिक कार्यशील पूँजी की आवश्यकता होती है।
5. **स्कंध आवर्त की दर** - व्यवसाय में बिक्री की गति यदि अधिक है तो कार्यशील पूँजी की आवश्यकता कम होती है। जिन उद्योगों में स्कंध आवर्त दर ऊँची है उन्हें कम कार्यशील पूँजी की आवश्यकता होती है।
6. **साख नीति** - कार्यशील पूँजी स्तर, साख नीति से निर्धारित होती है। इसका संबंध क्रय/विक्रय, लेनदार/देनदार के साथ अपनाई जाने वाली नीति से है, जो कि कार्यशील पूँजी की मात्रा को प्रमुख रूप से प्रभावित करती है। जैसे कि -
  - a) संस्था की उधार विक्रय की नीति क्या है?
  - b) संस्था को उधार क्रय की सुविधा उपलब्ध है या नहीं?

उधार क्रय और नगद विक्रय में कम कार्यशील पूँजी की आवश्यकता होती है, जबकि नकद क्रय और उधार विक्रय में अधिक कार्यशील पूँजी की आवश्यकता होती है। उधार विक्रय में पूँजी देनदारों में अवरूद्ध होती है और नकद क्रय में पूँजी लेनदारों को चुकानी होती है।

7. **व्यापार चक्र** - व्यापार चक्र का आशय सामान्य व्यावसायिक क्रिया के एक के बाद एक घटित होने वाले विस्तार व संकुचन से है। तेजी की अवस्था में जब व्यवसाय में समृद्धि होती है तो बिक्री में वृद्धि, कीमतों में वृद्धि, व्यवसाय का आशावादी विस्तार आदि के कारण कार्यशील पूँजी की अधिक आवश्यकता पड़ती है। जबकि मंदीकाल में व्यापार संकुचित होता है, बिक्री कम होती है, देनदारों से वसूली में देरी होती है तब कार्यशील पूँजी कम रह सकती है।

8. **व्यवसाय के विकास की दर** - व्यवसायिक क्रियाओं के विकास और विस्तार के साथ-साथ कार्यशील पूँजी की आवश्यकता बढ़ती है। संस्था में विक्रय और स्थाई सम्पत्ति के बढ़ने के साथ कार्यशील पूँजी की अधिक आवश्यकता होती है, विकासशील संस्था में कार्यशील पूँजी की अग्रिम योजना की सतत् आवश्यकता होती है।
9. **मूल्य स्तर में परिवर्तन** - मूल्य स्तर के परिवर्तन भी कार्यशील पूँजी की आवश्यकताओं को प्रभावित करते हैं। बढ़ती कीमतों के कारण संस्था को कार्यशील पूँजी की बड़ी रकम की आवश्यकता होती है। चालू सम्पत्तियों को बनाये रखने के लिए अधिक कोष की आवश्यकता होगी। बढ़ती कीमतों का प्रभाव अलग-अलग संस्थाओं में अलग-अलग प्रकार से पड़ता है।
10. **आपूर्ति की शर्तें** - यदि संस्था को कच्चा माल, स्टोर और पुर्जे इत्यादि शीघ्र एवं उचित मात्रा में मिलते हैं तो छोटी स्क्ंध मात्रा से भी कार्य संभव हो जाता है। अतः कार्यशील पूँजी की मात्रा की कम आवश्यकता होती है। इसके विपरीत यदि कच्चे माल की उपलब्धता अनिश्चित होती है, माल मिलने में देरी की संभावना होती है तो उत्पादन सतत् जारी रखने के लिये स्क्ंध की अधिक आवश्यकता होती है जिसके फलस्वरूप कार्यशील पूँजी अधिक लगेगी।
11. **लाभांश नीति** - जो संस्थाएँ ऊँचे दर से लाभांश का नकद वितरण करती हैं उन्हें अधिक कार्यशील पूँजी की आवश्यकता होती है बनिस्बत जो कि अपने लाभों को प्रतिस्थापित कर लेते हैं और नकद लाभांश भी नीची दर से वितरित करते हैं।
12. **बैंकिंग संबंध** - यदि बैंकिंग सुविधाएँ आसानी से उपलब्ध हैं, संस्था को बैंक द्वारा अच्छे संबंधों के कारण आसानी से ऋण मिल पाता है, तो कम कार्यशील पूँजी की आवश्यकता होती है। जबकि बैंकिंग सुविधाओं के अभाव में या बैंक के साथ खराब प्रतिष्ठा के कारण, कार्यशील पूँजी की अधिक आवश्यकता होती है।
13. **आसामान्य कारक** - हड़ताल, तालाबंदी जैसे असामान्य कारकों के कारण संस्था को कार्यशील पूँजी की अधिक आवश्यकता होती है। मुद्रा स्फीति के कारण भी अधिक कार्यशील पूँजी की जरूरत होती है। सरकार की कर नीति, ऊँची कर-दर के कारण अधिक कर भुगतान के लिये, कार्यशील पूँजी की जरूरत हाती है।
14. **अन्य घटक** - उत्पादन विभाग और वितरण विभाग में उचित सामंजस्य के अभाव में कार्यशील पूँजी की जरूरत अधिक होती है। आयात नीति, अनियमित आपूर्ति, परिचालन अकुशलता, श्रमिक सुविधाएँ आदि भी कार्यशील पूँजी की मात्रा को प्रभावित करती हैं। कुछ अन्य तत्व जैसे, मूल्य स्तर

परिवर्तन, प्रबन्धकीय योग्यता, राजनीतिक स्थायित्व, युद्ध आशंका, परिवहन व संचार की सुविधा, आदि भी कार्यशील पूँजी की आवश्यकता को प्रभावित करती हैं।

## 2.4 कार्यशील पूँजी के स्रोत (Sources or Means of Working capital)

संस्था के चालू सम्पत्तियों का एक स्तर सदैव बनाकर रखा जाता है। साथ ही दैनंदिनी कार्यों के संपादन हेतु कार्यशील पूँजी की सदैव आवश्यकता होती है। यह फर्म में स्थाई रूप से विनियोजित रहती है। अतः इसे स्थिर/ दीर्घकालीन कार्यशील पूँजी कहा जाता है। स्थिर कार्यशील पूँजी का वित्त पोषण स्थाई पूँजी स्रोत से किया जाता है।

व्यवसाय में मौसमी आवश्यकताओं एवं माँगों के साथ-साथ विशिष्ट परिस्थितियों में कार्यशील पूँजी की आवश्यकता रहती है, अस्थायी रूप से कार्यशील पूँजी की आवश्यकता होती है। अस्थायी/अल्पकालीन कार्यशील पूँजी को अल्पकालीन स्रोतों से पूरा किया जाता है। कार्यशील पूँजी दो प्रकार के साधनों से प्राप्त की जा सकती है - (अ) दीर्घकालीन साधन, तथा (ब) अल्पकालीन साधन। इनका विवेचन निम्नलिखित है:-

**(अ) दीर्घकालीन साधन** - स्थायी कार्यशील पूँजी का वित्त पोषण करने के लिए संस्थान को दीर्घकालीन साधनों को ही अपनाना चाहिए। दीर्घकालीन साधनों से ही लम्बे समय तक के लिए, वित्त प्राप्त हो सकता है। कार्यशील पूँजी के दीर्घकालीन साधन निम्नलिखित हो सकते हैं –

1. **अंश** - नये अंशों का निर्गमन कार्यशील पूँजी का मुख्य साधन है। एक कम्पनी समता और पूर्णाधिकार अंशों का निर्गमन कर सकती है। पहले स्थगित अंशों के निर्गमन का अधिकार कम्पनियों को प्राप्त था जिसे भारतीय कम्पनी अधिनियम 1956 के द्वारा रोक दिया गया है। पूर्वाधिकार अंशों को एक निश्चित दर से लाभांश प्राप्ति के सम्बन्ध में और कम्पनी समापन के समय पूँजी के पुनर्भुगतान के लिए प्राथमिकता प्राप्त होती है। समता अंश धारकों को, लाभ की उपलब्धता के आधार पर लाभांश प्रदान किया जाता है। कम्पनी को अंशों के निर्गमन से स्थायी कार्यशील पूँजी की अधिकतम राशि की व्यवस्था करनी चाहिए।
2. **ऋणपत्र** - ऋण पत्र निर्गमन भी अंशों की ही भाँति कार्यशील पूँजी का महत्वपूर्ण साधन है। ऋणपत्र, किसी भी धारक को, कम्पनी द्वारा ऋण की स्वीकृति का निर्गमित प्रपत्र होता है। ऋणपत्र धारक कम्पनी के लेनदार होते हैं और निश्चित दर से ब्याज प्राप्त करने के हकदार होते हैं।

3. **सार्वजनिक निक्षेप (Public Deposits)**- सार्वजनिक निक्षेप व्यावसायिक उपक्रम द्वारा सीधे जनता से स्वीकार किये गये स्थाई जमा होते हैं। अल्पकालीन एवं मध्यकालीन वित्त प्राप्त करने का लोकप्रिय साधन है। यह वित्त प्राप्ति का कम खर्चीला साधन है।
4. **लाभों का पुर्ननिवेश (Ploughing back of profits)**- कम्पनी अपने लाभों का व्यवसाय में पुर्ननिवेश करती है। लाभों की संपूर्ण राशि लाभांश के रूप में वितरित न करके लाभ की राशि को संस्था के विस्तार विकास एवं आधुनिकीकरण हेतु प्रयोग करती है। यह वित्त प्राप्ति का लागत रहित स्रोत है एवं सदैव गतिमान रहता है। लाभों का पुर्ननिवेश कार्यशील पूँजी की आवश्यकताओं को संतुष्ट करने में किया जाता है।
5. **वित्तीय संस्थाओं से ऋण (Loan from financial institutions)**- वाणिज्यिक बैंक, जीवन बीमा निगम, भारतीय औद्योगिक विकास निगम, राज्य वित्त निगम, राज्य औद्योगिक विकास निगम, भारतीय औद्योगिक विकास बैंक आदि संस्थाएँ अल्पकालीन, मध्यकालीन एवं दीर्घकालीन ऋणों को प्रदान करते हैं। कार्यशील पूँजी की मध्यकालीन आवश्यकताओं हेतु यह उपयुक्त वित्त स्रोत हैं।
6. **प्राचीन सम्पत्तियों का विक्रय** - अप्रयुक्त स्थायी सम्पत्तियों को बेचकर भी कार्यशील पूँजी की व्यवस्था की जा सकती है। प्रबन्धन, इस साधन पर कम ही निर्भर रहता है, क्योंकि यह सामयिक, अनियमित और अविश्वसनीय होता है।
7. **दीर्घकालीन ऋण** - बैंकों, विनियोग कम्पनियों व विशिष्ट वित्तीय संस्थाओं से दीर्घकालीन ऋण प्राप्त करके भी कार्यशील पूँजी का वित्तीयन किया जा सकता है। भारतीय औद्योगिक वित्त निगम (IFCI), राज्य वित्त निगमों (SFCs), भारतीय औद्योगिक विकास बैंक (IDBI), नाबार्ड (NABARD) आदि इसके उदाहरण हैं।

**(ब) अल्पकालीन साधन-** अल्पकालीन साधनों से अस्थायी कार्यशील पूँजी की व्यवस्था की जाती है। जिसकी लागत भी अपेक्षाकृत कम होती है। प्रमुख अल्पकालीन साधन निम्नलिखित हैं-

1. **वाणिज्यिक बैंक** - अल्पकालीन कार्यशील पूँजी के सबसे महत्वपूर्ण स्रोत वाणिज्यिक बैंक होते हैं। बैंक सामान्यतया अग्र चार रूपों में ऋण प्रदान करते हैं:
  - i. **नकद साख (Cash Credit)** - इस व्यवस्था के अन्तर्गत बैंक तथा ग्राहक के मध्य एक औपचारिक समझौता होता है जिसमें साख की अधिकतम सीमा निर्धारित कर दी जाती है। ग्राहक निर्दिष्ट सीमा के भीतर आवश्यकतानुसार राशि का आहरण कर सकता है। ब्याज, आहरित किए गये ऋण पर ही लगता है न कि सम्पूर्ण अधिकतम सीमा पर।

- ii. **बैंक अधिविकर्ष (Bank Overdraft)** – अधिविकर्ष, बैंक के साथ की गई ऐसी व्यवस्था है जिसमें चालू खाता के ग्राहक अपने खाते में जमा शेष के अतिरिक्त एक निर्धारित सीमा तक धन के आहरण की स्वीकृति बैंक से लेता है। इससे ग्राहक चेक अनादृत होने पर उत्पन्न विषम स्थिति से बच जाता है और कुछ समय के लिए ऋण सुविधा भी मिल जाती है। व्यवहार में नकद साख और बैंक अधिविकर्ष में कोई खास अन्तर नहीं होता है लेकिन इतना अवश्य है कि अधिविकर्ष अति अल्पकाल के लिए स्वीकृत किया जाता है और यह एक अस्थायी व्यवस्था (Short-term arrangement) होती है जबकि नकद साख अपेक्षाकृत अधिक अवधि के लिए स्वीकृत होता है।
  - iii. **सुरक्षित ऋण (Secured Loans)** - बैंक जब सम्पत्तियों की जमानत के आधार पर एकमुश्त अग्रिम देता है तो उसे सुरक्षित ऋण कहते हैं। प्रायः बैंक बॉण्ड्स, रहतिया व व्यक्तिगत जमानत के आधार पर इस प्रकार का अल्पकालीन ऋण देती है। ऋण की वापसी एकमुश्त या किस्तों में की जा सकती है।
  - iv. **बिलो की कटौती (Discounting of Bills)**- इसमें ग्राहक बैंक को अपने प्राप्य बिलों की अपेक्षाकृत कम मूल्य पर बेच देते हैं अथवा वर्तमान ब्याज की दर पर कटौती करा लेता है। परिपक्वता की तिथि पर बैंक सम्बद्ध पक्ष से बिल का पूर्ण अंकित मूल्य प्राप्त कर लेता है। इस प्रकार ग्राहक कटौती की धनराशि की हानि उठाकर आवश्यकतानुसार वित्त प्राप्त कर लेता है।
2. **व्यापार साख** - प्रायः सभी व्यावसायिक इकाइयों को माल विक्रेता से अल्पकाल के लिए अपनी ख्याति के अनुसार उधार मिल जाता है जिसका भुगतान बाद में एकमुश्त या किस्तों में किया जाता है। कभी-कभी इस उधार माल के लिए विपत्र, प्रतिज्ञा-पत्र, हुण्डी, आदि लिख दिए जाते हैं। इस विधि में उधार पर ब्याज नहीं दिया जाता है परन्तु बहुधा विक्रेता माल की कीमत बढ़ा करके ही बेचता है। इस प्रकार अधिक कीमत लेकर ब्याज की पूर्ति कर ली जाती है। व्यापार साख की अवधि प्रायः 15 दिन से 3 माह तक की होती है।
  3. **देशी साहूकार** - छोटे तथा मध्यम आकार के उपक्रम अपनी कार्यशील पूंजी का महत्वपूर्ण हिस्सा देशी साहूकारों से प्राप्त करते हैं। ये लोग ब्याज की दर अधिक वसूल करते हैं अतः इनकी शरण में व्यावसायिक गृह अन्त में ही जाते हैं। आजकल वाणिज्यिक बैंकों का प्रचलन बढ़ने से देशी साहूकारों की महत्ता दिन प्रतिदिन घट रही है।

4. **जन निक्षेप (Demand Draft)** - मुम्बई एवं अहमदाबाद की सूती वस्त्र मिलों में जन निक्षेप, कार्यशील पूंजी का प्रचलित स्रोत रहे हैं। वर्तमान में निजी व सार्वजनिक क्षेत्र की कम्पनियां इस साधन का प्रयोग निरन्तर कर रही हैं। इसमें जनता अपना धन तब तक कम्पनियों के पास जमा रखती है जब कि उन्हें ब्याज मिलता है। यह साधन कम्पनियों के लिए सुखद समय का साथी (Fair Weather Friend) सिद्ध होता है और संकट की स्थिति में जमाकर्ता वापसी की मांग कर सकते हैं।
5. **ग्राहको से अग्रिम (Advance from customers)** - कुछ व्यावसायिक गृह अपने ग्राहकों से माल के आदेश के साथ सम्पूर्ण या आंशिक भुगतान अग्रिम में प्राप्त कर लेते हैं जो कार्यशील पूंजी का अल्पकालीन साधन होता है। यह पूंजी प्राप्त करने का लागत विहीन साधन है क्योंकि इस पर कोई ब्याज नहीं देना पड़ता है। परन्तु प्रायः एकाधिकारी संस्थाएँ ही इस साधन को प्रयोग करने की स्थिति में होती है जहाँ पर ग्राहक कोई भी शर्त स्वीकार करने का बाध्य होता है। प्रतिस्पर्धी वातावरण में और जिस संस्था की साख निर्बल हो, इस साधन का सहारा नहीं ले सकती है।
6. **वाणिज्यिक पत्र (Commercial Papers)** - वाणिज्यिक पत्र का आशय व्यावसायिक संस्थाओं द्वारा अल्पकालीन वित्त के सृजन हेतु निर्गत अरक्षित प्रतिज्ञा पत्र है। रिजर्व बैंक के दिशानिर्देश के अनुसार ही इसे जारी किया जा सकता है। 91 से 180 दिनों के लिए वाणिज्यिक पत्र जारी किये जाते हैं। अंकित मूल्य से कटौती पर बिक्री की जाती है और परिपक्वता अवधि पर अंकित मूल्य पर शोधन होता है। वित्तीय संस्थाएँ इस साधन का प्रयोग करते हैं।
7. **आन्तरिक साधन (Internal sources)**- कार्यशील पूंजी के लिए हास कोष, करों के लिए प्रावधान व उपार्जित व्यय जैसे आन्तरिक साधनों का भी उपयोग किया जा सकता है। लाभ में से कुछ भाग निकालकर बनाए गये हास कोष उस समय तक कार्यशील पूंजी प्रदान करते हैं जब तक कि कोई स्थायी सम्पत्ति न क्रय की जाए अथवा लाभांश के रूप में वितरित न किया जाये। इसी तरह करों के लिए जो प्रावधान किया जाता है वह एक निश्चित अन्तराल पर भुगतान किया जाता है। इस बीच की अवधि में यह अल्पकालीन कार्यशील पूंजी के रूप में प्रयुक्त होता है। उपार्जित व्ययों की राशि भी भुगतान होने तक अल्पकालीन साधन होते हैं।
8. **अन्य साधन (Other sources)**- कुछ अन्य साधन हैं - (अ)- सरकारी सहायता, (ब)- प्रबंधकों व संचालकों के ऋण (स)- कर्मचारियों की प्रतिभूतियाँ।

## 2.5 कार्यशील पूंजी के प्रबंधन के लिए टंडन समिति और कोर समिति की सिफारिशें (Tandon Committee and Chore Committee Recommendations for Working Capital Management)

श्री. पी. एल. टंडन की अध्यक्षता में, वर्ष 1974 में, एक अध्ययन समूह का गठन, बैंकों के अनुवर्ती और पर्यवेक्षण के लिए वाणिज्यिक बैंकों के दिशानिर्देशों के लिए दिशानिर्देश तैयार करने के लिए किया गया था ताकि धन का उचित उपयोग सुनिश्चित किया जा सके। समूह ने अगस्त 1975 में अपनी रिपोर्ट जमा की, जिसे वर्किंग कैपिटल पर टंडन कमेटी रिपोर्ट के रूप में जाना जाने लगा। सूची और प्राप्ति, उधार देने के दृष्टिकोण, क्रेडिट की शैली, अनुवर्ती और सूचना प्रणाली के मानदंडों से संबंधित इसकी मुख्य सिफारिशें। यह भारत में बैंक ऋण के इतिहास में एक ऐतिहासिक स्थल था। भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा प्रमुख सिफारिशों की स्वीकृति के साथ, भारत में उधार देने का एक नया युग शुरू हुआ।

### टंडन समिति की सिफारिशें

सुरक्षा उन्मुख उधार देने के पारंपरिक तरीकों से दूर होकर, समिति ने बैंकों को आवश्यकता आधारित ऋण की ओर बढ़ने का आनंद लिया। समिति ने बताया कि बैंक ऋण की सबसे अच्छी सुरक्षा एक अच्छी तरह से कामकाजी व्यापार उद्यम है, न कि संपार्श्विक।

टंडन समिति की प्रमुख सिफारिशें निम्नानुसार थीं:

1. उधारकर्ता की अपनी व्यावसायिक योजनाओं के आधार पर तर्कसंगत आधार पर आवश्यकता आधारित क्रेडिट का आकलन।
2. बैंक क्रेडिट केवल उधारकर्ता के संसाधनों के लिए पूरक होगा और उन्हें प्रतिस्थापित नहीं करेगा, यानी बैंक उधारकर्ता की कार्यशील पूंजी आवश्यकता का सौ प्रतिशत वित्तपोषित नहीं करेंगे।
3. बैंक को उधारकर्ता के व्यवसाय पर बारीकी से नजर रखकर बैंक क्रेडिट का उचित अंत उपयोग सुनिश्चित करना चाहिए, और उन पर वित्तीय अनुशासन लगा देना चाहिए।
4. कार्यशील पूंजीगत वित्त उधारकर्ताओं को अलग-अलग मौजूदा संपत्तियों के आयोजन के लिए उद्योगवार मानदंडों (पहले टंडन समिति द्वारा निर्धारित करें और फिर भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा निर्धारित) के आधार पर उपलब्ध होगा।

- निर्माण प्रक्रिया में उपयोग की जाने वाली दुकानों और अन्य वस्तुओं सहित कच्चे माल।
- प्रक्रिया में स्टॉक।
- तैयार माल।
- प्राप्य खाते।

5. नकद क्रेडिट जैसे विभिन्न घटकों में उधारकर्ताओं को क्रेडिट उपलब्ध कराया जाएगा; विभिन्न मौजूदा संपत्तियों की होल्डिंग की प्रकृति के आधार पर खरीदे गए बिल और छूट वाली पूंजी, सावधि ऋण इत्यादि।

6. उधारकर्ताओं के संचालन के तहत घनिष्ठ घड़ी की सुविधा के लिए, बैंक को उन्हें अतीत और भविष्य की अवधि दोनों के लिए नियमित अंतराल, उनके व्यापार और वित्तीय परिचालनों के संबंध में डेटा जमा करने की आवश्यकता होगी।

### मानदंड

टंडन कमेटी ने शुरुआत में पंद्रह विभिन्न उद्योगों के लिए विभिन्न मौजूदा संपत्तियों को रखने के मानदंडों का सुझाव दिया था। इनमें से कई मानदंडों को संशोधित किया गया था और कम से कम देश के लगभग सभी प्रमुख उद्योगों को कवर करने के लिए विस्तारित किया गया था।

विभिन्न मौजूदा संपत्तियों को रखने के मानदंड इस प्रकार व्यक्त किए गए थे:

1. कच्चे माल के रूप में कई महीनों की खपत। इनमें निर्माण की प्रक्रिया में उपयोग किए जाने वाले स्टोर और अन्य सामान शामिल हैं।
2. स्टॉक-इन-प्रोसेस, उत्पादन के इतने महीनों की लागत के रूप में।
3. माल और खातों को क्रमशः बिक्री और बिक्री की इतनी महीनों की लागत के रूप में प्राप्त किया जा सकता है। ये आंकड़े केवल औसत स्तर का प्रतिनिधित्व करते हैं। तैयार माल और प्राप्ति के अलग-अलग सामान अलग-अलग अवधि के लिए हो सकते हैं जो निर्धारित मानदंडों से अधिक हो सकते हैं, जब तक कि तैयार माल और प्राप्ति का औसत औसत स्तर मानक के संदर्भ में निर्धारित राशि से अधिक न हो।
4. मानदंडों में स्पेयरों का स्टॉक शामिल नहीं था। वित्तीय शर्तों में, इन्हें कुल परिचालन व्यय का एक छोटा सा हिस्सा माना जाता था। बैंकों से मामले-दर-मामले आधार पर स्पेयर की आवश्यकता का आकलन

करने की उम्मीद थी। हालांकि, अगर वे कुल सूची के 5% से अधिक हो तो उन्हें सावधान नजर रखना चाहिए।

मानदंड एक विशेष वर्तमान संपत्ति के होल्डिंग के औसत स्तर पर आधारित थे, न कि समूह के अलग-अलग सामानों पर। उदाहरण के लिए, यदि किसी उद्योग के मानदंड रखने वाले प्राप्तिदाता दो महीने थीं और एक इकाई ने इस मानदंड को संतुष्ट किया था, औसत प्राप्तकर्ताओं के साथ वार्षिक बिक्री को विभाजित करके गणना की जाती है, तो यूनिट से कुछ खातों को प्राप्त करने योग्य नहीं माना जाएगा, जो कि आयोजित किए जा रहे थे दो महीने से अधिक

विभिन्न मौजूदा परिसंपत्तियों के आयोजन के मानदंडों को निर्धारित करते समय टंडन कमेटी ने यह स्पष्ट किया कि यह किसी भी कठोरता और सीधे जैकेटिंग के खिलाफ था। एक तरफ, समिति ने कहा कि विभिन्न मौजूदा संपत्तियों को रखने के लिए मानदंडों को बाहरी सीमा के रूप में माना जाना चाहिए, लेकिन इन स्तरों पर मौजूदा संपत्तियों को रखने के लिए इन्हें अधिकार नहीं माना जाना चाहिए। यदि एक उधारकर्ता अतीत में कम से कम प्रबंधित करता था, तो उसे ऐसा करना जारी रखना चाहिए। दूसरी तरफ, समिति ने कहा कि पुनः परीक्षा की आवश्यकता को न्यायसंगत परिस्थितियों में कुछ लचीलापन के लिए भत्ता बनाया जाना चाहिए।

समिति ने स्वयं ही कल्पना की कि निम्नलिखित परिस्थितियों में मानदंडों का विचलन हो सकता है।

1. आयात सहित कच्चे माल की बनी रसीदा
2. बिजली कटौती, हमलों या अन्य अपरिहार्य परिस्थितियों के कारण उत्पादन में व्यवधान।
3. परिवहन देरी या बाधाएं।
4. निर्यात के लिए शिपिंग स्थान की अनुपलब्धता या बिक्री में अन्य व्यवधान के कारण तैयार माल का संचय।
5. खरीदार के हिस्से में विफलता के कारण, मशीनरी जैसे तैयार माल के स्टॉक का निर्माण, जिनके लिए इन्हें विशेष रूप से डिजाइन और निर्मित किया गया था।
6. कम अवधि के विशिष्ट निर्यात अनुबंध के लिए कच्चे माल की पूर्ण या पर्याप्त आवश्यकता को कवर करने की आवश्यकता है।

उपरोक्त अपवादों को अनुमति देते हुए, समिति ने पाया कि विचलन ज्ञात और विशिष्ट परिस्थितियों और उधारकर्ता इकाई की अस्थायी कठिनाई पर ज्वार करने के लिए सीमित अवधि के लिए ही अनुमति दी जानी चाहिए। सामान्य स्थिति में वापस आने पर मानदंडों पर वापसी स्वचालित होगी।

### उधार देने के तरीके

टंडन कमेटी द्वारा प्रस्तावित उधार ढांचा 20 वर्षों से अधिक समय में भारत में वाणिज्यिक बैंक उधार देने पर प्रभुत्व रखता है और 1997 में भारतीय रिज़र्व बैंक के अनिवार्य प्रावधान को वापस लेने के बावजूद ऐसा जारी है।

जैसा कि पहले संकेत दिया गया है, टंडन कमेटी की सिफारिशों का सार उधारकर्ताओं के कामकाजी जरूरतों के केवल एक हिस्से को वित्त पोषित करना था। ऐसा माना जाता था कि धीरे-धीरे, उधारकर्ता को बैंकों पर अपनी कार्यशील पूंजी जरूरतों को निधि देने के लिए कम निर्भर होना चाहिए। इस दृष्टिकोण से समिति ने उधार देने के तीन स्नातक तरीके, जिन्हें अधिकतम स्वीकार्य बैंक वित्त प्रणाली या लघु एमपीबीएफ प्रणाली के रूप में जाना जाने लगा।

### उधार देने की पहली विधि

उधारकर्ता इकाई द्वारा योगदान दीर्घकालिक निधियों से कम से कम 25% कार्यशील पूंजीगत अंतर पर तय किया जाता है। उद्देश्य के लिए अधिक आंतरिक नकदी उत्पादन लाने के द्वारा उधारकर्ताओं के बैंक उधार पर निर्भरता को कम करने के लिए, कामकाजी पूंजीगत अंतर के 25% से उच्च स्तर तक योगदान का हिस्सा उठाना आवश्यक होगा। शेष 75% कार्यशील पूंजीगत अंतर बैंक द्वारा वित्त पोषित किया जाएगा। उधार देने की यह विधि, केवल 1:1 का वर्तमान अनुपात देती है। यह स्पष्ट रूप से कम तरफ है।

### उधार देने की दूसरी विधि

यह सुनिश्चित करने के लिए कि उधारकर्ता कार्यशील पूंजी में उनके योगदान को बढ़ाते हैं और अपने वर्तमान अनुपात में सुधार करने के लिए, उन्हें टंडन समिति द्वारा अनुशंसित ऋण की दूसरी विधि के तहत रखना आवश्यक है जो न्यूनतम वर्तमान अनुपात 1.33:1 प्रदान करेगा। उधारकर्ता को दीर्घकालिक निधि से कुल मौजूदा परिसंपत्तियों का न्यूनतम 25% प्रदान करना होगा। हालांकि, बैंक वित्त सहित कुल देनदारियां सकल मौजूदा परिसंपत्तियों का 75% से अधिक नहीं होनी चाहिए। चूंकि कई उधारकर्ता उधार देने की दूसरी विधि के तहत काम करने की स्थिति में तुरंत नहीं हो सकते हैं, इसलिए अतिरिक्त उधार को अलग किया जाना चाहिए और कार्यशील पूंजी अवधि ऋण के रूप में माना जाना चाहिए जिसे किशतों में चुकाया जाना चाहिए। इस ऋण को चुकाने के लिए उधारकर्ताओं को प्रेरित करने के लिए, इसे ब्याज की उच्च दर पर चार्ज किया

जाना चाहिए। वर्तमान में, समूह अनुशंसा करता है कि सापेक्ष नकदी क्रेडिट सीमाओं पर लागू दर पर अतिरिक्त ब्याज प्रति वर्ष 2% पर तय किया जा सकता है। यह प्रक्रिया सभी उधारकर्ताओं (बीमार इकाइयों को छोड़कर) के लिए अनिवार्य करनी चाहिए, जिनकी कुल कार्यशील पूंजी सीमा 10 लाख और उससे अधिक है।

### उधार देने की तीसरी विधि

तीसरी विधि के तहत, अनुमत बैंक वित्त की गणना दूसरी विधि के रूप में की जाएगी, लेकिन कुल मौजूदा परिसंपत्तियों से चार मौजूदा परिसंपत्तियों का कटौती करने के बाद ही।

दीर्घकालिक निधियों से उधारकर्ता का योगदान संपूर्ण कोर वर्तमान परिसंपत्तियों की सीमा तक, परिभाषित किया गया है, और न्यूनतम 25% शेष परिसंपत्तियों का योगदान होगा, इस प्रकार वर्तमान अनुपात को और मजबूत करेगा। यह विधि बैंक वित्त का सबसे बड़ा गुणक प्रदान करेगी।

कोर भाग वर्तमान संपत्ति को स्थायी स्तर माना जाता था जो आमतौर पर व्यापार के संचालन के स्तर के साथ भिन्न होता है। उदाहरण के लिए, सामग्रियों के स्टॉक के मामले में कोर लाइन आदेश स्तर से क्षैतिज रूप से जाती है ताकि जब स्टॉक का आदेश दिया जाता है तो सामग्री समय सीमा के दौरान आदेश स्तर को कम कर लेती है और कोर लेवल को स्पर्श करती है, लेकिन आगे जाने की अनुमति नहीं है। यह कोर स्तर बाजार में सामग्री की अचानक कमी या प्रसव के समय को बढ़ाने के खिलाफ सुरक्षा कुशन प्रदान करता है। इस कोर स्तर को निश्चित संपत्ति के बराबर माना जाता है और इसलिए, लंबी अवधि के स्रोतों से वित्त पोषित करने की सिफारिश की गई थी।

## 2.6 तरलता का मापन और तरलता मापन का अनुपात (Measurement of Liquidity and Ratios of Measuring Liquidity)

**तरलता अनुपात: यह क्या है?** तरलता अनुपात, एक कंपनी की अल्पकालिक ऋण दायित्वों के भुगतान करने की क्षमता को मापते हैं। तरलता अनुपात अल्पकालिक उधार और वर्तमान देनदारियों द्वारा नकदी और अन्य तरल परिसंपत्तियों को विभाजित करने का परिणाम है। वे नकद और तरल परिसंपत्तियों द्वारा अल्पकालिक ऋण दायित्वों को कवर करने की संख्या दिखाते हैं। यदि मान 1 से बड़ा है, तो इसका मतलब है कि अल्पकालिक दायित्व पूरी तरह से कवर किए गए हैं।

आम तौर पर, तरलता अनुपात जितना अधिक होता है, उतना अधिक सुरक्षा का मार्जिन जितना अधिक कंपनी को अपनी वर्तमान देनदारियों को पूरा करना पड़ता है। 1 से अधिक तरलता अनुपात इंगित करता है कि कंपनी अच्छी वित्तीय स्वास्थ्य में है और वित्तीय कठिनाइयों में कम संभावना है।

तरलता अनुपात के सबसे आम उदाहरणों में वर्तमान अनुपात, एसिड परीक्षण अनुपात (त्वरित अनुपात के रूप में भी जाना जाता है), नकदी अनुपात और कार्यशील पूंजी अनुपात शामिल हैं। विभिन्न विश्लेषकों द्वारा विभिन्न संपत्तियों को प्रासंगिक माना जाता है। कुछ विश्लेषकों को केवल नकदी और नकद समकक्षों को प्रासंगिक संपत्ति के रूप में माना जाता है क्योंकि आपातकालीन स्थिति में अल्पकालिक देनदारियों को पूरा करने के लिए उपयोग की जाने वाली सबसे अधिक संभावना है। कुछ विश्लेषकों को नकदी और नकद समकक्षों के अलावा देनदार और व्यापार प्राप्तियां प्रासंगिक संपत्ति के रूप में मानती हैं। कुछ विश्लेषकों द्वारा तरलता अनुपात की गणना के लिए वास्तुसूची का मूल्य प्रासंगिक संपत्ति भी माना जाता है।

तरलता अनुपात की बेहतर समझ के लिए नकदी चक्र की अवधारणा भी महत्वपूर्ण है। एक कंपनी के संचालन के माध्यम से लगातार चक्र नकद। एक कंपनी की नकदी आमतौर पर तैयार माल, कच्चे माल और व्यापार देनदारों में बंधी जाती है। यह तब तक नहीं है जब तक सूची बेची जाती है, बिक्री चालान उठाए जाते हैं, और देनदार भुगतान करते हैं कि कंपनी को नकदी मिलती है। नकदी चक्र में बंधे नकदी को कार्यशील पूंजी के रूप में जाना जाता है, और तरलता अनुपात मौजूदा संपत्तियों और वर्तमान देनदारियों के बीच संतुलन को मापने का प्रयास करता है।

लेनदारों को भुगतान की मांग करते समय एक कंपनी को अपने वित्तीय दायित्वों को पूरा करने के लिए नकदी चक्र से नकदी जारी करने की क्षमता होनी चाहिए। दूसरे शब्दों में, एक कंपनी को अपनी अल्पकालिक परिसंपत्तियों को नकद में अनुवाद करने की क्षमता होनी चाहिए। तरलता अनुपात एक कंपनी की इस क्षमता को मापने का प्रयास करता है।

### एसिड-टेस्ट अनुपात (Acid-Test ratio)

"एसिड-टेस्ट अनुपात" शब्द को त्वरित अनुपात के रूप में भी जाना जाता है। एसिड परीक्षण अनुपात की सबसे बुनियादी परिभाषा यह है कि, "यह वर्तमान (अल्पकालिक) तरलता और कंपनी की स्थिति को मापता है"। त्वरित अनुपात, इसकी सबसे अधिक परिसंपत्तियों (नकदी या त्वरित परिसंपत्तियों के पास) का उपयोग करके अपने अल्पकालिक दायित्वों को पूरा करने की कंपनी की क्षमता की गणना, का एक उपाय है। त्वरित परिसंपत्तियों में उन मौजूदा परिसंपत्तियों को शामिल किया जाता है जिन्हें संभावित रूप से उनके बुक मूल्यों के करीब नकदी में परिवर्तित किया जा सकता है। त्वरित अनुपात को कंपनी की वित्तीय ताकत या कमजोरी के संकेत के रूप में देखा जाता है; यह कंपनी की अल्पकालिक तरलता के बारे में जानकारी देता है। अनुपात

लेनदारों को बताता है कि कंपनी की अल्पकालिक ऋण को कंपनी की तरल परिसंपत्तियों को बहुत कम नोटिस पर बेचकर कितना मिल सकता है।

त्वरित अनुपात को एसिड-टेस्ट अनुपात या त्वरित संपत्ति अनुपात के रूप में भी जाना जाता है।

### गणना सूत्र

त्वरित अनुपात की गणना मौजूदा देनदारियों द्वारा तरल परिसंपत्तियों को विभाजित करके की जाती है:

त्वरित अनुपात = (वर्तमान संपत्ति - सूची) / वर्तमान देयताएं

तरल परिसंपत्तियों की सूची की गणना सभी मौजूदा परिसंपत्तियों से कम तरल के रूप में की जाती है (सूची अक्सर नकद में परिवर्तित करना मुश्किल होती है)। उन सभी चर बैलेंस शीट (वित्तीय स्थिति का बयान) पर दिखाए जाते हैं।

त्वरित अनुपात के लिए वैकल्पिक और अधिक सटीक सूत्र निम्नलिखित है:

त्वरित अनुपात = (नकद और नकद समकक्ष + विपणन योग्य प्रतिभूतियां + खाता प्राप्य) / वर्तमान देयताएं

फॉर्मूला के न्यूमेरेटर में सबसे अधिक तरल संपत्तियां (नकद और नकद समकक्ष) और उच्च तरल संपत्तियां (तरल प्रतिभूतियां और वर्तमान प्राप्तियां) शामिल हैं।

### मानदंड और सीमाएं

जितना तेज़ अनुपात उतना ही बेहतर होगा, कंपनी की स्थिति बेहतर होगी। आमतौर पर स्वीकार्य वर्तमान अनुपात 1 है, लेकिन उद्योग से उद्योग में भिन्न हो सकता है। 1 से कम के त्वरित अनुपात वाले एक कंपनी वर्तमान में अपनी वर्तमान देनदारियों का भुगतान नहीं कर सकती है; निवेशकों और भागीदारों के लिए यह बुरा संकेत है।

तैयार अनुपात विश्लेषणात्मक सॉफ्टवेयर (आईएफआरएस कथन प्रारूप के आधार पर) में सटीक फॉर्मूला।

त्वरित अनुपात = (एफ 1 [नकद और नकद समकक्ष] + एफ 1 [अन्य वर्तमान वित्तीय संपत्ति] + एफ 1 [व्यापार और अन्य वर्तमान प्राप्तियां]) / एफ 1 [वर्तमान देयताएं]

एफ 1 - वित्तीय स्थिति का विवरण (आईएफआरएस)।

**उदाहरण:**

आइए मान लीजिए कि एकसवाईजेड कंपनी के पास अपने बैंक खाते और नकद में कुल Rs.2 करोड़ है। प्राप्त खातों की राशि (XYZ कंपनी के अल्पकालिक डेबिटर्स) Rs.11 करोड़ है। अल्पकालिक निवेश की राशि Rs.4 करोड़ है। वर्तमान देनदारियों की राशि (दूसरों के लिए बकाया अल्पकालिक क्रेडिट) Rs.12 करोड़ है। इसलिए कंपनी एक्स का एसिड-टेस्ट अनुपात  $(2 \text{ करोड़} + 11 \text{ करोड़} + 4 \text{ करोड़}) / (12 \text{ करोड़}) = 1.42:1$  है।

यदि एसिड-टेस्ट अनुपात का मूल्य 1 से कम है, तो ऐसा कहा जाता है कि ऐसी कंपनी स्थिर नहीं है और कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है अपने कर्ज (अल्पकालिक) का भुगतान करना। अल्पकालिक ऋण को साफ़ करने के लिए उन्हें शायद अपनी कुछ संपत्तियां बेचने की आवश्यकता होगी। लेकिन ऐसा विकल्प कंपनी की समग्र स्थिति को प्रभावित करता है क्योंकि अगर कंपनी की बहुत कम संपत्तियां हैं।

एसिड परीक्षण अनुपात का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह कंपनी को अंतिम परिणाम को समझने में मदद करता है। एसिड-टेस्ट अनुपात के साथ एकमात्र बड़ा मुद्दा खातों की प्राप्य और वर्तमान देनदारियों की निर्भरता है जो परेशानी का कारण बन सकता है। यदि किसी विवाद के कारण लेनदार या देनदार के साथ अनुबंध गड़बड़ हो जाता है तो पूरी प्रक्रिया असंतुलित हो जाती है। और, गणना में एक मामूली गलती सिर्फ भ्रामक परिणामों को नष्ट कर सकती है और समाप्त कर सकती है।

**नकद अनुपात (Cash Ratio)**

नकद अनुपात (जिसे नकद परिसंपत्ति अनुपात भी कहा जाता है) कंपनी की नकद और नकद समकक्ष संपत्तियों का अनुपात कुल देनदारियों का अनुपात है। नकद अनुपात त्वरित अनुपात का परिशोधन है और यह दर्शाता है कि किस सीमा तक आसानी से उपलब्ध फंड वर्तमान देनदारियों का भुगतान कर सकते हैं। संभावित लेनदार इस अनुपात का उपयोग कंपनी की तरलता के माप के रूप में करते हैं और यह कितनी आसानी से ऋण की सेवा कर सकता है और अल्पकालिक देनदारियों को कवर कर सकता है।

नकद अनुपात तीन तरलता अनुपात (वर्तमान, त्वरित और नकद अनुपात) का सबसे कड़ा और रूढ़िवादी है। यह केवल कंपनी की सबसे तरल अल्पकालिक परिसंपत्तियों - नकद और नकद समकक्षों को देखता है - जिन्हें वर्तमान दायित्वों का भुगतान करने के लिए सबसे आसानी से उपयोग किया जा सकता है।

**गणना सूत्र**

वर्तमान देनदारियों द्वारा पूर्ण तरल परिसंपत्तियों को विभाजित करके नकद अनुपात की गणना की जाती है:

नकद अनुपात = नकद और नकद समकक्ष / वर्तमान देयताएं

दोनों चर बैलेंस शीट (वित्तीय स्थिति का बयान) पर दिखाए जाते हैं।

### मानदंड और सीमाएं

वर्तमान या त्वरित अनुपात के रूप में नकद अनुपात वित्तीय विश्लेषण में उतना लोकप्रिय नहीं है, इसकी उपयोगिता सीमित है। नकद अनुपात के लिए कोई आम मानक नहीं है। कुछ देशों में 0.2 से कम नहीं का नकद अनुपात स्वीकार्य माना जाता है। लेकिन जो अनुपात बहुत अधिक है, वह अपनी बैलेंस शीट पर बड़ी मात्रा में नकद रखने वाली कंपनी के लिए खराब परिसंपत्ति उपयोग दिखा सकता है।

**नकद अनुपात** विश्लेषणात्मक सॉफ्टवेयर में सटीक फॉर्मूला

नकद अनुपात = एफ 1 [कैश एंड कैशइक्वाइवलेंट्स] / एफ 1 [वर्तमान लचीलापन]

एफ 1 - वित्तीय स्थिति का विवरण (आईएफआरएस)।

### वर्तमान अनुपात(Current Ratio)

वर्तमान अनुपात कंपनी तरलता के बैलेंस शीट वित्तीय प्रदर्शन उपाय है।

वर्तमान अनुपात अल्पकालिक ऋण दायित्वों को पूरा करने की कंपनी की क्षमता को इंगित करता है। मौजूदा अनुपात यह मापता है कि फर्म के पास अगले 12 महीनों में अपने कर्ज का भुगतान करने के लिए पर्याप्त संसाधन हैं या नहीं। संभावित लेनदारों यह निर्धारित करने में इस अनुपात का उपयोग करते हैं कि अल्पकालिक ऋण करना है या नहीं। वर्तमान अनुपात किसी कंपनी के परिचालन चक्र की दक्षता या उसके उत्पाद को नकद में बदलने की क्षमता को भी समझ सकता है। वर्तमान अनुपात को कार्यशील पूंजी अनुपात के रूप में भी जाना जाता है।

### गणना सूत्र

मौजूदा अनुपात की वर्तमान देनदारियों द्वारा मौजूदा परिसंपत्तियों को विभाजित करके गणना की जाती है:

वर्तमान अनुपात = वर्तमान संपत्ति / वर्तमान देयताएं

दोनों चर बैलेंस शीट (वित्तीय स्थिति का बयान) पर दिखाए जाते हैं।

## मानदंड और सीमाएं

अनुपात जितना अधिक होगा, कंपनी उतनी तरल होगी। आम तौर पर स्वीकार्य वर्तमान अनुपात 2 है; यह ज्यादातर उद्यमों के लिए एक आरामदायक वित्तीय स्थिति है। स्वीकार्य वर्तमान अनुपात उद्योग से उद्योग में भिन्न होते हैं। अधिकांश औद्योगिक कंपनियों के लिए 1.5 1.5 स्वीकार्य वर्तमान अनुपात हो सकता है।

वर्तमान अनुपात के लिए कम मूल्य (1 से कम मान) इंगित करता है कि एक फर्म को मौजूदा दायित्वों को पूरा करने में कठिनाई हो सकती है। हालांकि, एक निवेशक को अपनी तरलता की बेहतर समझ प्राप्त करने के लिए कंपनी के परिचालन नकदी प्रवाह पर भी ध्यान देना चाहिए। एक कम वर्तमान अनुपात अक्सर एक मजबूत ऑपरेटिंग नकद प्रवाह द्वारा समर्थित किया जा सकता है। यदि वर्तमान अनुपात बहुत अधिक है (2 से अधिक), तो हो सकता है कि कंपनी अपनी वर्तमान संपत्ति या इसकी अल्पकालिक वित्त पोषण सुविधाओं का कुशलता से उपयोग न करे। यह कार्यशील पूंजी प्रबंधन में समस्याएं भी इंगित कर सकता है।

अन्य सभी चीजें बराबर होती हैं, लेनदारों एक उच्च वर्तमान अनुपात को कम वर्तमान अनुपात से बेहतर मानते हैं, क्योंकि उच्च वर्तमान अनुपात का मतलब है कि कंपनी अगले 12 महीनों में देय होने वाली देनदारियों को पूरा करने की अधिक संभावना है।

तैयार अनुपात विश्लेषणात्मक सॉफ्टवेयर में सटीक फॉर्मूला

वर्तमान अनुपात = एफ 1 [वर्तमान संपत्ति] / एफ 1 [वर्तमान देयताएं]

एफ 1 - वित्तीय स्थिति का विवरण (आईएफआरएस)।

## 2.7 सारांश

कार्यशील पूंजी एक वित्तीय मीट्रिक है जो एक व्यापार के लिए उपलब्ध ऑपरेटिंग तरलता का प्रतिनिधित्व करती है। इस तरह के संयंत्र और उपकरण के रूप में अचल संपत्ति के साथ साथ, कार्यशील पूंजी परिचालन पूंजी का एक हिस्सा माना जाता है। इसकी वर्तमान परिसंपत्तियों की मौजूदा देनदारियों के रूप में गणना की जाती है। यदि वर्तमान संपत्ति मौजूदा देनदारियों से कम है, तो एक इकाई की कार्यशील पूंजी की कमी होती है, जिसे एक कार्यशील पूंजी घाटा भी कहा जाता है। कार्यशील पूंजी कंपनी के साथ दिन-प्रतिदिन के संचालन के लिए उपलब्ध धन का प्रतिनिधित्व करती है। कार्यशील पूंजी नकदी रूपांतरण चक्र का वित्तपोषण करती है। कंपनी नकारात्मक कामकाजी पूंजी के साथ जीवित नहीं रह सकती है जो दर्शाती है कि कंपनी के पास दिन-

प्रतिदिन के संचालन के लिए कोई धन नहीं है। फर्म के कामकाजी पूंजी स्तर को प्रभावित करने वाले कुछ कारक व्यवसाय के प्रकार / प्रकृति, बिक्री की मात्रा, मौसमी और परिचालन और नकद चक्र की लंबाई हैं।

कार्यशील पूंजी व्यापार को आसानी से और लाभप्रद चलाने का साधन है, और अंत नहीं। आमतौर पर, कार्यशील पूंजी का सकारात्मक संतुलन है क्योंकि वर्तमान देनदारियों पर वर्तमान संपत्तियों की अपनी अतिरिक्त संपत्ति है, लेकिन कभी-कभी कार्यशील पूंजी के उपयोग स्रोतों से अधिक हो सकते हैं जिसके परिणामस्वरूप कार्यशील पूंजी का नकारात्मक मूल्य होता है। यह ऋणात्मक शेष राशि आमतौर पर निम्नलिखित अवधि में लाभ से ऑफसेट होती है।

कार्यशील पूंजी के उपयोग और स्रोतों में परिवर्तनों का अध्ययन उस दक्षता का मूल्यांकन करना आवश्यक है जिसके साथ व्यवसाय में कार्यशील पूंजी नियोजित की जाती है। इसमें कार्यशील पूंजी विश्लेषण की आवश्यकता शामिल है। 70 के दशक के बाद से बैंक द्वारा काम कर रहे पूंजीगत वित्त के मानदंड मुख्य रूप से टंडन कमेटी की सिफारिशों पर आधारित थे। चोर कमेटी ने बैंकों द्वारा कामकाजी पूंजीगत वित्त के लिए प्रक्रियाओं और मानदंडों को मजबूत करने के लिए और सिफारिशें कीं। हाल ही में भारत में विनियमित आर्थिक माहौल में, बैंकों ने उधार देने के अपने मानदंडों को काफी कम किया है। वास्तव में, प्रत्येक बैंक कार्यकारी पूंजी वित्त के लिए अपना मानदंड विकसित कर सकता है।

## 2.8 बोध प्रश्न

1. मौजूदा देनदारियों का एक हिस्सा फर्म में कौन सा धन होगा?
2. क्या हो सकता है यदि फर्म की वर्तमान देनदारियां मौजूदा संपत्तियों की तुलना में बड़ी हों? फर्म के काम पर इसका असर क्या होगा?
3. आक्रामक कार्यशील पूंजी नीति के तहत, मौजूदा संपत्तियों में निवेश बहुत कम है। टिप्पणी करें।
4. एक व्यापार संगठन के लिए कार्यशील पूंजी के अल्पकालिक वित्त पोषण, विस्तार से चर्चा करें।
5. क्या आपको लगता है कि चोर कमेटी द्वारा सुझाए गए डिस्काउंट हाउसों का भारतीय प्रतिभा में कोई महत्व है? अच्छी तरह से आधारभूत कारणों से अपने उत्तर को जस्टिफ़ाई करें।
6. नकद प्रबंधन पर टंडन कमेटी द्वारा की गई सिफारिशों के महत्व की जांच करें।
7. टंडन कमेटी द्वारा छोड़े जाने के सुझाव के अनुसार आप उधार देने की तीसरी विधि से सहमत / असहमत क्यों हैं?

## 2.9 संदर्भ ग्रंथ

- D.R. Mehta, *Working Capital Management*, Prentice-Hall Inc., 1974.
- K.V. Smith, *Management of Working Capital*, McGraw-Hill, New York.
- Khan and Jain, *Financial Management*, Tata McGraw-Hill.
- Pandey, *Financial Management*, Vikas Annex. 54.J.3 -MBA - Finance - SDE  
Page 20 of 23.
- Prasanna Chandra, *Financial Management, Theory and Practice*, Tata McGraw-Hill.
- V.K. Bhalla, *Working Capital Management – Text and Cases*, Sixth Edition, Anmol Publications.

## इकाई – III: कार्यशील पूंजी प्रबंधन का परिचय

### इकाई की संरचना

- 3.1 उद्देश्य
- 3.2 प्रस्तावना
- 3.3 नकदी रखने के कारण
- 3.4 नकद प्रबंधन का उद्देश्य
- 3.5 नकद जरूरतों का निर्धारण के कारक
- 3.6 युक्ततम नकद बनाए रखने के लाभ
- 3.7 नकद प्रबंधन में मुद्दे
- 3.8 नकद अधिशेष का उपयोग
- 3.9 कैश मॉडल्स
- 3.10 नकद पूर्वानुमान के तरीके
- 3.11 सारांश
- 3.12 बोध प्रश्न
- 3.13 संदर्भ ग्रंथ

### 3.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप निम्नलिखित को समझ सकेंगे:

- नकदी रखने के कारणों तथा नकद प्रबंधन के उद्देश्यों को ।
- नकद पूर्वानुमान के तरीकों को ।

### 3.2 प्रस्तावना

नकद किसी भी व्यवसाय की नींव है। कोई भी व्यवसाय पर्याप्त नकदी के बिना सफलतापूर्वक और कुशलता से काम नहीं कर सकता है। उसी समय, नकदी एक निष्क्रिय संपत्ति है जो अपने आप में कुछ भी नहीं कमाती है और इसलिए अत्यधिक नकदी का व्यवसाय की लाभप्रदता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। नकदी को बुद्धिमानी और कुशल तरीके से प्रबंधित करना पड़ता है। अधिकांश व्यवसाय, अपनी कुल संपत्ति में किसी न किसी रूप में, एक निश्चित मात्रा में नकदी रखते हैं। सवाल यह है कि, किसी व्यवसाय को नकदी के रूप में कम से कम कुछ संपत्ति रखने का फैसला क्यों करना चाहिए? नकदी रखने के क्या इरादे हैं?

### 3.3 नकदी रखने के कारण (Motives for Holding Cash)

#### नकदी रखने के महत्व (Importance of Holding Cash)

- 1. नकद योजना** - नकदी सबसे महत्वपूर्ण संपत्तियों के साथ-साथ कम से कम अनुत्पादक है। हालांकि, संस्था के दायित्वों को पूरा करना जरूरी है, फिर भी निष्क्रिय नकद कुछ भी कमाता नहीं है, इसलिए, एक सशक्त नकद योजना हमेशा संस्था में नकद की स्थिति इस प्रकार रखती है की न तो वह अतिरिक्त हो और न ही अपर्याप्त हो।
- 2. नकदी प्रवाह का प्रबंधन** - यह नकद प्रबंधन का एक और महत्वपूर्ण पहलू है। नकद प्रवाह (inflow) और नकदी बहिर्वाह (outflow) के बीच तुल्यकालन शायद ही कभी होता है। कभी-कभी, देनदारों की रसीदों और भारी मात्रा में नकद बिक्री की वजह से नकद प्रवाह, बहिर्वाह से अधिक होगा। दूसरी बार, कर, ब्याज और लाभांश आदि के भुगतान के कारण नकदी बहिर्वाह, प्रवाह से अधिक हो जाता है। इसलिए, नकद प्रवाह बेहतर नकदी प्रबंधन के लिए प्रबंधित किया जाना चाहिए।
- 3. इष्टतम (Optimum) नकदी शेष बनाए रखना** - प्रत्येक संस्था को इष्टतम नकद शेष राशि बनाए रखना चाहिए। प्रबंधन को, नकदी शेष निर्धारित करने वाले विभिन्न बिंदुओं पर और प्रभावित करने वाले कारकों पर भी विचार करना चाहिए। नकदी शेष के इष्टतम स्तर को निर्धारित करने के लिए अतिरिक्त नकद और अपर्याप्त नकद के खतरे का मिलान किया जाना चाहिए।
- 4. अतिरिक्त नकदी का निवेश** - संस्था को अल्पावधि प्रतिभूतियों या मुनाफा कमाने के लिए अतिरिक्त या निष्क्रिय कोष को निवेश करना है क्योंकि निष्क्रिय कोष, रिटर्न नहीं कमाते हैं। यह नकदी के प्रबंधन के महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक है।  
इस प्रकार, नकदी प्रबंधन का उद्देश्य एक तरफ पर्याप्त नकदी शेष बनाए रखना और दूसरी तरफ कुछ लाभदायक तरीके से अतिरिक्त नकदी का उपयोग करना है।

## नकदी रखने के कारण (Motives for Holding Cash)

नकदी रखने के इरादे या इच्छाएं विभिन्न उद्देश्यों को संदर्भित करती हैं। व्यक्ति और स्थिति के सन्दर्भ में यह उद्देश्य अलग-अलग हो सकता है। नकद रखने के चार महत्वपूर्ण उद्देश्य हैं।

1. **लेनदेन का उद्देश्य (Transactional Motive)**- यह उद्देश्य व्यापार में नियमित नकद आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नकदी के आयोजन को संदर्भित करता है। एक संस्था कई के लेनदेन होते हैं जिसके लिए नकद भुगतान की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, सामग्रियों की खरीद, मजदूरी का भुगतान, वेतन, कर, ब्याज इत्यादि। इसी तरह, एक संस्था को नकद बिक्री, देनदारों से संग्रह, निवेश पर वापसी आदि से नकदी मिलती है लेकिन नकद प्रवाह और नकद बहिर्वाह पूरी तरह से तुल्यकालन नहीं होते हैं। कभी-कभी, नकद रसीद भुगतान से अधिक होती है जबकि कभी भुगतान रसीद अधिक हो सकती है। यदि भुगतान रसीदों से अधिक है तो संस्था को पर्याप्त (धन) नकद-शेष राशि बनाए रखना होगा। इसी प्रकार, लेनदेन के अपेक्षित दायित्वों को पूरा करने के लिए नकद जरूरी होता है। हालांकि, लेनदेन के उद्देश्य के लिए व्यापार का एक बड़ा हिस्सा नकदी के रूप में होता है, इसका एक हिस्सा विपणन योग्य प्रतिभूतियों में निवेश किया जा सकता है, जिनकी परिपक्वता का समय लाभांश, कर आदि जैसे अपेक्षित भुगतान के अनुरूप होता है।
2. **एहतियाती उद्देश्य (Precautionary Motive)**- अपेक्षित नकद रसीदों और व्यापार में भुगतान के गैर तुल्यकालन के अलावा, एक फर्म अप्रत्याशित आकस्मिकताओं के लिए नकदी का भुगतान करने में विफल हो सकती है। उदाहरण के लिए, हमले, कच्चे माल की लागत में अचानक वृद्धि, आदि। इन अप्रत्याशित परिस्थितियों को पूरा करने के लिए आयोजित नकद, एहतियाती नकदी शेष के रूप संशय की जाती है। एहतियाती उद्देश्य के तहत नकद शेष राशि की राशि दो कारकों से प्रभावित होती है - पहला की, नकदी प्रवाह की भविष्यवाणी और दूसरा की, अल्पकालिक उधार की उपलब्धता। अप्रत्याशित और अधिक विपरीत परिस्थितियों, नकद प्रवाह की आवश्यकता होती है। अगर संस्था शॉर्ट-नोटिस पर उधार ले सकती है, तो आकस्मिकताओं को पूरा करने के लिए इसे अपेक्षाकृत कम संतुलन की आवश्यकता होगी और इसके विपरीत अगर संस्था शॉर्ट-नोटिस पर उधार नहीं ले सकती है, तो आकस्मिकताओं को पूरा करने के लिए इसे अपेक्षाकृत ज्यादा संतुलन की आवश्यकता होगी। आमतौर पर एहतियाती नकदी शेष को विपणन योग्य प्रतिभूतियों में निवेश किया जाता है ताकि वे लाभप्रदता में कुछ योगदान दे सकें।
3. **सट्टा/ काल्पनिक उद्देश्य (Speculative Motive)**- कभी-कभी लाभदायक अवसरों का फायदा उठाने के लिए नकद रखना आवश्यक होता है खास कर जब भविष्य में माल की कीमत बढ़ने का अनुमान हो। इस उद्देश्य को सट्टा/ काल्पनिक उद्देश्य कहा जाता है। उदाहरण के लिए, अगर फर्म को उम्मीद है कि

माल की भौतिक कीमते गिरावट आ सकती है, तो यह माल की खरीद को स्थगित कर सकती है और कीमत में गिरावट के दौरान भविष्य में खरीदारी कर सकती है।

4. **मुआवजा उद्देश्य (Compensatory Motive):** कुछ सेवाओं और ऋण प्रदान करने के लिए बैंकों और अन्य वित्तीय संस्थानों को क्षतिपूर्ति के लिए, नकद शेष रखने की आवश्यकता होती है। बैंक व्यापारिक फर्मों को विभिन्न प्रकार की सेवाएं प्रदान करते हैं जैसे चेक, ड्राफ्ट्स, नकद जमा, फंडों के हस्तांतरण, फंडों की निकासी, इत्यादि। बैंक अप्रत्यक्ष मुआवजे के रूप में, ग्राहकों से उनकी सेवाओं के लिए, कमीशन या शुल्क लेते हैं। ग्राहकों को बैंक में न्यूनतम नकदी शेष राशि बनाए रखने की आवश्यकता होती है। लेनदेन उद्देश्यों के लिए इस संतुलन का उपयोग नहीं किया जा सकता है। ग्राहक, बैंक सेवाओं की अपनी लागत की भरपाई करने के लिए, खाते की शेष राशि का उपयोग कर धन अर्जित कर सकता है। बैंक और उसके ग्राहकों के बीच कुछ ऋण समझौते में इन शेषों की भी आवश्यकता होती है। बैंकों को उधार की आपूर्ति प्रतिबंधित होने पर ब्याज दरों में वृद्धि होती है। बैंक को क्षतिपूर्ति करने के लिए अपने खाते में न्यूनतम नकद शेष राशि बनाए रखने की आवश्यकता होती है।

इस प्रकार उपर्युक्त उद्देश्यों को पूरा करने के लिए नकदी की आवश्यकता होती है। नकद शेषराशि रखने के चार उद्देश्यों में से, लेनदेन उद्देश्य और मुआवजे के उद्देश्य बहुत महत्वपूर्ण हैं। बिजनेस फर्म आमतौर पर अटकलें नहीं करते हैं और इसलिए सट्टा संतुलन की आवश्यकता नहीं होती है। और उसी प्रकार, सावधानी बरतने की आवश्यकता को अल्प-कालिक उधार से बाहर की जा सकती है।

### **नकद प्रबंधन का अर्थ (Meaning of Cash Management) -**

नकद प्रबंधन (Cash Management), कार्यशील पूंजी प्रबंधन के प्रमुख क्षेत्रों में से एक है। नकद सबसे अधिक तरल वर्तमान संपत्ति है। नकद के लिए सभी मौजूदा संपत्तियों को कम किया जा सकता है क्योंकि अन्य प्रमुख तरल संपत्ति, यानी प्राप्य और वास्तुसूची; अंततः नकद में परिवर्तित हो जाती है। यह नकद प्रबंधन के महत्व को रेखांकित करता है।

नकदी के प्रबंधन के संदर्भ में "नकद" शब्द दो तरीकों से उपयोग किया जाता है। एक संकीर्ण अर्थ में नकदी; बैंकों में सिक्के, मुद्रा, चेक, ड्राफ्ट और जमा को संदर्भित किया जाता है। नकदी के व्यापक दृष्टिकोण में नकद संपत्तियां जैसे मार्केटबल प्रतिभूतियां और बैंकों में समय जमा शामिल हैं। नकद में इन नजदीकी नकदी संपत्तियों को शामिल करने का कारण यह है कि वे आसानी से नकद में परिवर्तित हो सकते हैं।

आमतौर पर, अतिरिक्त नकद विपणन योग्य प्रतिभूतियों में निवेश किया जाता है क्योंकि यह लाभप्रदता में योगदान देता है। नकदी वर्तमान संपत्ति के सबसे महत्वपूर्ण घटकों में से एक है। प्रत्येक संस्था के पास पर्याप्त नकदी होनी चाहिए, न तो अधिक और न ही कम। अपर्याप्त नकदी उत्पादन बाधाओं का कारण बन जाएगी,

जबकि अत्यधिक नकदी निष्क्रिय रहती है और लाभप्रदता में कमी लाती है, इसलिए नकद प्रबंधन की आवश्यकता होती है।

### 3.4 नकद प्रबंधन का उद्देश्य (Objectives of Cash Management)

नकद प्रबंधन के मूल उद्देश्य हैं

**1. भुगतान अनुसूची का पालन** - नकद प्रबंधन का मूल उद्देश्य भुगतान अनुसूची को पूरा करना है। व्यवसाय के सामान्य नियमित गतिविधियों में, कच्चे माल, कर्मचारियों का वेतन भुगतान और नियमित रूप से आपूर्तिकर्ताओं को नकदी का भुगतान करना पड़ता है, और ऐसा माना जाता है की फर्मों को, समय पर, नकद बिक्री और देनदारों से नियमित आधार पर नकदी मिल जाएगी। इस प्रकार, प्रत्येक फर्म के पास भुगतान अनुसूची को पूरा करने के लिए पर्याप्त नकदी होगी। दूसरे शब्दों में, जब फर्म देय से दायित्वों को पूरा करने में सक्षम होना चाहिए।

फर्म पर्याप्त नकद बनाए रखने के साथ जुड़े कुछ फायदों का आनंद ले सकती है। वो हैं:

**2. नकद शेष राशि के स्तर को कम करना** - नकद प्रबंधन का दूसरा महत्वपूर्ण उद्देश्य नकद शेष को कम करना है। नकदी शेष को कम करने में दो विरोधाभासी पहलुओं को सुलझाना होगा। पहला, उच्च स्तर की नकदी शेष सभी फायदों के साथ तत्काल भुगतान सुनिश्चित करती है, लेकिन साथ ही, एक गैर-कमाई करने वाली संपत्ति बन जाती है जिससे नकद हानि होती है जो लाभप्रदता को काम कर देती है। दूसरी तरफ, नकद शेष राशि का निम्न स्तर भुगतान अनुसूची को पूरा करने के लिए फर्म की अक्षमता का कारण बन सकता है, जिससे फर्म के दिवालिया होने की स्थिति या क्रेडिट योग्यता पर संकट आ सकता है। इस प्रकार नकद प्रबंधन का उद्देश्य इष्टतम नकदी शेष स्तर को बनाये रखने का होता है।

**नकद प्रबंधन के लाभ (Benefits of Cash Management) –**

- i. **दिवालियापन** - दिवालियापन का सवाल उठता ही नहीं है क्योंकि फर्म अपने दायित्वों को पूरा करने में सक्षम होगी।
- ii. **अच्छे संबंध** - फर्म में पर्याप्त नकद शेष राशि, लेनदारों और कच्चे माल के आपूर्तिकर्ताओं के साथ अच्छे संबंध विकसित करने में मदद करती है।
- iii. **क्रेडिट योग्यता** - पर्याप्त नकदी शेष की उपलब्धता, फर्म की क्रेडिट योग्यता में वृद्धि करती है, जिसके कारण फर्म को कच्चा माल खरीदते समय अनुकूल भुगतान और उधार शर्तों को चयन करने में सक्षम मिलती हैं।

- iv. **छूट सुविधाओं का लाभ** - फर्म देय तिथि से पहले भुगतान के लिए लेनदारों द्वारा दी गई छूट का लाभ उठा सकती है।
- v. **अप्रत्याशित सुविधाओं को पूरा करने के लिए** - फर्म आसानी से अप्रत्याशित नकदी व्यय, जैसे कि हड़ताल, ग्राहकों से प्रतिस्पर्धा आदि से बच या निपट सकती है। इसलिए, प्रभावी फर्म प्रबंधन के लिए प्रत्येक फर्म के पास पर्याप्त नकद शेष होना चाहिए।
- vi. **आंतरिक नकद संकोचन को कम /खत्म करें:** 2011 के वैश्विक खुदरा चोरी बैरोमीटर के अनुसार, बेईमान कर्मचारी 41 बिलियन डॉलर या 35% से अधिक संकोचन के लिए जिम्मेदार थे। इसके अलावा, कर्मचारियों द्वारा चोरी की गई औसत राशि दुकानदारों द्वारा चुराए गए औसत से पांच गुना से अधिक थी। उचित नकदी प्रबंधन ऐसी समस्याओं को दूर कर सकता है।
- vii. **सुविधा:** नकद, सुलभ उपयोग करने के लिए अपेक्षाकृत, सस्ता विकल्प है। इसे लेनदेन के दौरान जल्दी से संसाधित किया जा सकता है और प्रौद्योगिकी, व्यक्तिगत पहचान संख्या (पिन), या हस्ताक्षर के उपयोग के बिना व्यक्ति से व्यक्ति में स्थानांतरित किया जा सकता है।
- viii. **गोपनीयता की सुरक्षा:** नकदी लेनदेन को व्यक्तिगत जानकारी के प्रकटीकरण की आवश्यकता नहीं होती है और पहचान की चोरी का कोई खतरा नहीं होता है।
- ix. **भुगतान अंतिमता:** लेनदेन पूरा होने के बाद बैंक नोटों का उपयोग निपटारे के अंतिम साधनों के लिए अनुमति देता है।
- x. **तरलता:** क्योंकि नकदी को भुगतान के साधन के रूप में आसानी से स्वीकार किया जाता है, इसलिए माल, सेवाओं और अन्य वित्तीय परिसंपत्तियों में इसकी परिवर्तनीयता के मामले में यह सबसे अधिक तरल संपत्ति है।
- xi. **विश्वास और स्वीकृति:** कम और स्थिर मुद्रास्फीति को बनाए रखने और नकद के उपयोग में विश्वास, केंद्रीय बैंक की विश्वसनीयता पर आधारित है यानी, मुद्रा की क्रय शक्ति को बनाए रखना और नकली के खतरे के खिलाफ सुरक्षा प्रदान करना।

### 3.5 नकद जरूरतों का निर्धारण के कारक (Factors affecting the estimation of Cash requirements)

नकदी प्रबंधन की मुख्य समस्या नकद इष्टतम स्तर का संतुलन है। नकद होल्डिंग का स्तर उद्योग से उद्योग, संगठन से संगठन, के लिए अलग है। उद्योग की नकदी जरूरतों को निर्धारित करने वाले कारक निम्नानुसार हैं:

1. **नकद प्रवाह का मेल-मिलाना (Matching of cash flows)** - नकद आवश्यकता के स्तर को निर्धारित करने वाला पहला और बहुत महत्वपूर्ण कारक नकद बहिर्वाह के साथ नकदी प्रवाह से मेल खाता है। यदि रसीदें और भुगतान पूरी तरह से मेल खाते हैं या एक दूसरे को संतुलित करते हैं, तो नकदी शेष की कोई आवश्यकता नहीं होगी। नकदी प्राप्तियों और वितरण के गैर-तुल्यकालन के कारण, नकद प्रबंधन की आवश्यकता होती है। इस उद्देश्य के लिए, नकद बजट की सहायता से १२ महीने का अनुमानित नकद प्रवाह की मात्रा और का समय को अनुमानित किया जाता है। नकद बजट उन महीनों को इंगित करेगा जब फर्म के पास नकदी की बहुतता या कमी होगी।
2. **कम लागत** - कम लागत को नकदी की कमी के परिणामस्वरूप किए गए व्यय के रूप में परिभाषित किया जाता है, जैसे कि आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नकद शेष की अप्रत्याशित या अपेक्षित कमी, कम लागत में कमी, कमी को दूर करने के लिए नकदी बढ़ाने से जुड़ी लेनदेन लागत, कमी को पूरा करने के लिए उधार लेने से जुड़ी लागत, उधार/ऋण पर ब्याज, व्यापार छूट का नुकसान, बैंकों द्वारा जुर्माना दरों में क्षतिपूर्ति, नकदी शेष और कमी में कमी को पूरा करने के लिए फर्म की क्रेडिट रेटिंग इत्यादि में गिरावट से जुड़ी लागतें जो ऋण पर उच्च बैंक शुल्क, बिक्री और मुनाफे में गिरावट में दिखाई देती हैं।
3. **अतिरिक्त शेष राशि पर नकदी की लागत** - नकद जरूरतों को निर्धारित करने वाले महत्वपूर्ण कारकों में से एक, नकद शेष बनाए रखने की लागत है यानी नकद शेष या निष्क्रिय नकद शेष। अतिरिक्त नकद शेष राशि को बनाए रखने की लागत को अतिरिक्त नकदी शेष लागत कहा जाता है। यदि बड़े धन निष्क्रिय हैं, तो निहितार्थ यह है कि फर्म निवेश के अवसरों में चूक गई है और इस तरह ब्याज खो दिया है। इसे अतिरिक्त लागत के रूप में जाना जाता है। इसलिए नकद प्रबंधन को नकदी की इष्टतम शेष राशि बनाए रखने के लिए आवश्यक माना जाता है।
4. **व्यवसाय में अनिश्चितता** - अनिश्चितता नकदी प्रबंधन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि नकदी प्रवाह की पूर्ण सटीकता के साथ भविष्यवाणी नहीं की जा सकती है। नकदी प्रबंधन की पहली आवश्यकता नकदी प्रवाह में अनियमितताओं का सामना करने के लिए सावधानी बरतनी है, संग्रह और वितरण में अप्रत्याशित देरी, चूक और अपेक्षित नकदी की जरूरतों को कर भुगतान, लाभांश, पूंजीगत व्यय इत्यादि की सटीक भविष्यवाणी के माध्यम से, अनिश्चितता से दूर किया जा सकता है। मसौदा सुविधा के माध्यम से फर्म धन उधार ले सकती है।
5. **नकदी की खरीद और प्रबंधन की लागत** - नकद प्रबंधन कर्मचारियों की स्थापना और संचालन के साथ जुड़ी लागत और व्यावसायिक फर्म की नकदी जरूरतों को निर्धारित करने वाली गतिविधियों की लागतों को आम तौर पर तय किया जाता है और वेतन, भंडारण और हैंडलिंग आदि लागतों के

लिए जिम्मेदार माना जाता है। उपर्युक्त कारकों को एक व्यापारिक फर्म की नकदी जरूरतों को निर्धारित करने के लिए माना जाता (assume) है।

### 3.6 युक्ततम नकद बनाए रखने के लाभ (Advantages of Maintaining Optimum Cash)

पर्याप्त कार्यशील पूंजी के फायदे निम्नलिखित हैं।

- 1. व्यापार की शोधन क्षमता:** पर्याप्त कार्यशील पूंजी उत्पादन के निर्बाध प्रवाह को सुनिश्चित करती है। तैयार माल बेचे जा सकें जिससे बिक्री कारोबार में वृद्धि हो और परिणामस्वरूप पर्याप्त नकद स्तर बना रहे। इस तरह, व्यापार की शोधन-क्षमता बानी रहती है।
- 2. नकद छूट:** यदि उचित नकद शेष राशि बनाए रखा जाता है, तो व्यापार आपूर्तिकर्ताओं द्वारा प्रदान की गई नकदी छूट सुविधाओं का लाभ उठा सकता है।
- 3. सदभावना:** जब भी व्यवसाय अपनी शोधन क्षमता बनाए रखता है, व्यापार बहुत आसानी से निर्धारित समय के भीतर भुगतान करने में सफल होता है। जिससे व्यावसायिक सौहार्द्रता बनानी रखी जा सकती है।
- 4. तरलता:** एक सक्षम व्यवसायी कार्यशील पूंजी आवश्यकताओं की सीमा निर्धारित कर सकता है। इस संदर्भ में, पर्याप्त कार्यशील पूंजी की सहायता से व्यापार में भी तरलता बनाई जा सकती है।
- 5. आसान ऋण:** यदि कोई व्यापार उच्च शोधन क्षमता बनाए रखती है तो बैंक और वित्तीय संस्थान सीमा शर्तों को अनुकूल कर, ऋण प्रदान करने के लिए तैयार हो जाते हैं। इस तरह, व्यापार आसानी से ऋण प्राप्त कर सकता है।
- 6. अनदेखी आकस्मिकताओं की पूर्ति:** यह अदृश्य आपात स्थिति के लिए धन प्रदान करता है ताकि एक व्यवसाय आकस्मिकताओं का सफलतापूर्वक सामना कर सके और व्यापार संचालन पर, आकस्मिकताओं का प्रभाव अधिकतम स्तर पर कम किया जा सकता है।
- 7. कच्चे माल की नियमित आपूर्ति:** पर्याप्त कार्यशील पूंजी उत्पादन के निरंतर प्रवाह के लिए कच्चे माल की नियमित आपूर्ति सुनिश्चित करता है।
- 8. उच्च मनोबल:** धन के उपयोग कर्मचारियों की दक्षता में वृद्धि और उच्च आय में परिणाम सुनिश्चित करता है। इस तरह, कर्मचारियों के बीच उच्च मनोबल बनाए रखा जाता है।
- 9. प्रतिबद्धताओं का नियमित भुगतान:** मजदूरी और वेतन और दिन-प्रतिदिन परिचालन खर्च निर्धारित समय के भीतर भुगतान किया जाना चाहिए। पर्याप्त कार्यशील पूंजी बनाए रखने के कारण ही यह संभव होता है। प्रतिबद्धताओं का नियमित भुगतान कर्मचारियों की दक्षता में वृद्धि करता है और अपव्यय, लागत को कम करता है और उत्पादन और मुनाफे को बढ़ाता है।

10. **बैंकों और वित्तीय संस्थानों के साथ अच्छे संबंध:** एक व्यावसायिक संस्थान, पर्याप्त कार्यशील पूंजी होने के कारण देय तिथि के भीतर ब्याज के साथ अपने ऋण का भुगतान कर सकती है। इस प्रकार का अभ्यास बैंकों और वित्तीय संस्थानों के साथ अच्छे संबंध सुनिश्चित करता है।
11. **अनुकूल बाजार स्थितियों का लाभ:** यदि बाजार की स्थिति इस तरह से है कि थोक खरीद के लिए व्यापार छूट और कम कीमत उपलब्ध है तो इस प्रकार की अनुकूल बाजार स्थितियों का लाभ केवल तभी प्राप्त किया जा सकता है जब पर्याप्त कार्यशील पूंजी बनाए रखा जाए।
12. **बढ़ी हुई अचल सम्पत्ति उत्पादकता:** आम तौर पर, व्यापारिक संस्थान की कमाई क्षमता बढ़ाने के लिए निश्चित संपत्तियां अधिग्रहित की जाती हैं। इसलिए, निश्चित संपत्तियों का सही ढंग से उपयोग किया जाना चाहिए। पर्याप्त कार्यशील पूंजी की सहायता से उत्पादकता में वृद्धि के लिए निश्चित संपत्ति का उच्चतम उपयोग किया जा सकता है।
13. **संकट का सामना करने की क्षमता:** पर्याप्त कार्यशील पूंजी एक व्यावसायिक संस्थान को आपातकालीन अवधि जैसे अवसाद के दौरान संकट का सामना करने में सक्षम बनाती है। अधिकांश व्यावसायिक संस्थान में अवसाद अवधि के दौरान पर्याप्त कार्यशील पूंजी नहीं होती है, यदि संस्थान में पर्याप्त कार्यशील पूंजी हो, तो निर्दिष्ट व्यावसायिक संस्थान अधिक लाभ प्राप्त कर सकती है।
14. **अनुसंधान और नवाचार कार्यक्रम:** पर्याप्त शोध कार्यशील पूंजी के बिना कोई शोध कार्यक्रम, नवाचार और तकनीकी विकास संभव नहीं किया जा सकता है।
15. **निवेश पर त्वरित और नियमित वापसी:** निवेशक हमेशा त्वरित रुपये कमाने के लिए रास्ता तलाशता है। वे अपने निवेश पर नियमित रिटर्न की भी उम्मीद करते हैं। एक कंपनी, पर्याप्त मात्रा में कामकाजी पूंजी बनाए रखकर, अपने शेयरधारकों को नियमित रूप से लाभांश का भुगतान कर सकती है। इस प्रकार का अभ्यास शेयरधारकों के बीच विश्वास प्राप्त करने में मदद करता है।
16. **विस्तार सुविधा:** किसी भी प्रकार के व्यवसाय कार्यक्रम के विस्तार के लिए अतिरिक्त धन की आवश्यकता होती है। पर्याप्त कार्यशील पूंजी विस्तार कार्यक्रम के सफल कार्यान्वयन के लिए व्यावसायिक संस्थान को सुविधा प्रदान करती है।
17. **बढ़ी हुई लाभप्रदता:** निश्चित संपत्तियों और वर्तमान संपत्तियों का सही अनुपात होना चाहिए। पर्याप्त कार्यशील पूंजी का रखरखाव निश्चित संपत्तियों और वर्तमान संपत्तियों का सही अनुपात सुनिश्चित करता है जो व्यवसाय की लाभप्रदता में वृद्धि होने का एक मजबूत आधार हो सकता है।

### 3.7 नकद प्रबंधन में मुद्दे (Issues in Cash Management)

#### I. नकदी के स्तर को नियंत्रित करना: -

- i. **नकद बजट तैयार करना:** बजट की तैयारी के माध्यम से, नकदी की आवश्यकता की पहचान की जा सकती है जो आम तौर पर फर्म को अत्यधिक नकदी को बंद करने में मदद करेगी।
- ii. **अप्रत्याशित विसंगतियों के लिए जगह प्रदान करना:** विसंगतियों को पूरा करने के उद्देश्य से अलग राशि को बनाए रखा जाना चाहिए।

#### II. नकदी के प्रवाह की रोकथाम

- i. **संकेन्द्रण बैंकिंग:** उद्यम के प्रधान कार्यालय के पास संग्रह केंद्र होता है, जिनका कार्य विभिन्न स्रोतों से नकदी एकत्र करना होते हैं, नकदी प्रवाह को बढ़ाने के लिए ऐसे सभी स्थानों पर संग्रह केंद्र खोले जा सकते हैं। इस प्रणाली के तहत ग्राहक को संबंधित क्षेत्र के संग्रह केंद्रों को चेक द्वारा भुगतान भेजने की आवश्यकता होती है, और इस तरह के चेक उनके विभागों में जमा किए जाएंगे। पूर्व निर्धारित न्यूनतम राशि से अधिक जमा की गई राशि को स्थानीय बैंक खाते से केंद्रीय या संवितरण बैंक या एकाग्रता बैंक खाते में प्रतिदिन स्थानांतरित किया जाएगा। एकाग्रता बैंक वह बैंक होता है जिसमें उद्यम का मुख्य खाता या संवितरण खाता होता है।
- ii. **लॉक बॉक्स सिस्टम:** पारगमन में डाक देरी से बचने के लिए संग्रह की प्रक्रिया केवल स्थानीय डाकघरों की मदद से की जाती है। यह प्रणाली संग्रह की गति को तेजी से बढ़ाती है और आखिर में स्थानीय शाखा मैसेंजर, संग्रह की प्रक्रिया के लिए, आवंटित निर्दिष्ट पोस्ट बॉक्स के माध्यम से पार्टियों से चेक एकत्र करता है।

#### III. नकद बहिर्वाह का नियंत्रण

- i. **भुगतान वितरित करने का केंद्रीकरण:** भुगतान की प्रक्रिया को केंद्रीकृत करने से उद्यम को भुगतान की समस्या को सुलझाने का समय मिल सकता है, जिससे तत्काल नकदी आवश्यकताओं में कमी की जा सकती है।
- ii. **भुगतान अनुसूची में उदारता:** नकदी संसाधनों का सबसे प्रभावी ढंग से उपयोग करके भुगतान स्थगित करने के लिए अधिकतम संभव क्रेडिट अवधि का लाभ उठाने का यह एक और तरीका है।

#### IV. अधिशेष नकद की गणना

जब इष्टतम नकद आवश्यकता ज्ञात होती है, तो उपलब्ध समस्त अतिरिक्त धनराशि, अधिशेष हो जाती हैं। इसलिए, सर्वप्रथम इष्टतम नकद आवश्यकता की गणना की जानी चाहिए। फर्म द्वारा

आवश्यक न्यूनतम स्तर की नकदी उन दिनों की संख्या पर निर्भर करती है जिनके लिए भुगतान और अन्य दायित्वों और औसत दैनिक नकद बहिर्वाहों को पूरा करने के लिए नकदी शेष पर्याप्त होगा।

#### V. अत्यधिक नकद अधिशेष निवेश करना

- i. विभिन्न निवेश अवसरों की पहचान करने के बाद, अत्यधिक नकदी संसाधनों को मंद अवधि के दौरान (जब फर्म को कामकाजी पूंजी की अधिक मात्रा की आवश्यकता नहीं होती है), वापसी की उचित दर कमाने के लिए, निवेश किया जाना चाहिए।
- ii. अधिशेष नकदी, किसी संगठन या फर्म में सामान्य नकदी आवश्यकताओं के ऊपर उपलब्ध अतिरिक्त नकद को संदर्भित करती है। कोई भी निष्क्रिय नकदी, अतिरिक्त धन और ब्याज नहीं कमाती है और स्वयं उत्पादक नहीं होती है। इसलिए, इसे ब्याज असर प्रतिभूतियों या जमा में निवेश किया जाना है।
- iii. इन कार्यों को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए, नकद प्रबंधक को पहले, सामान्य संचालन करने के लिए आवश्यक अधिकतम इष्टतम स्तर की गणना करना लेना चाहिए जिससे अधिशेष नकद, यदि कोई हो तो, की उपलब्धता ज्ञात हो सकती हैं। इसके बाद, उन्हें निवेश विकल्पों में से सर्वोत्तम लाभ प्रदान करने वाले विकल्प का चयन कर अधिशेष राशि को निवेश करना होगा।

#### VI. निवेश के विकल्पों का चयन करना (Selection of Investment Avenues)

अधिशेष नकद उपलब्ध कराने का अनुमान लगाने के बाद, अगला कदम लाभदायक निवेश में अधिशेष नकद, निवेश करना है। निवेश विकल्प चुनने से पहले कई कारकों पर विचार किया जाना चाहिए। वो हैं:

##### i. निवेश की तरलता (Liquidity of Investment):

नकद, मौजूदा परिसंपत्ति होने के कारण तरलता बनाए रखने के लिए अत्यधिक आवश्यक है। इसलिए, तरल वर्तमान परिसंपत्ति का निवेश, किसी शीर्ष तरल होने वाली प्रतिभूतियां होना चाहिए। उदाहरण: विपणन योग्य प्रतिभूतियां और अल्पकालिक निवेश। ऐसा इसलिए है क्योंकि किसी भी अप्रत्याशित आकस्मिकताओं और आपात स्थिति को पूरा करने के लिए इन प्रतिभूतियों को बेचकर शीर्ष नकद लाया जा सकता है।

##### ii. बचाव और सुरक्षा(Safety and Security):

चुने गए किसी भी निवेश विकल्प को न्यूनतम राशि निवेशित करने के लिए पर्याप्त सुरक्षित होना चाहिए। इसलिए, सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अत्यधिक जोखिम भरा प्रतिभूतियों में निवेश से बचा चाहिए।

## iii. निवेश से धन-प्राप्ति (Return on investments):

अधिशेष नकद का निवेश, समय आने पर, विनिवेश करके नकद प्राप्ति के लिए किया जाता है। इसलिए, हर एक उपज की वापसी की तुलना करने के बाद संविभाग (portfolio) में विभिन्न निवेशों पर विचार किया जाना चाहिए। प्रत्येक निवेश में जोखिम निहित होता है और निवेश से जुड़ी हर धन-प्राप्ति (return) जोखिम के स्तर से जुड़ी होती है। निवेश को इष्टतम जोखिम और उससे धन-प्राप्ति के आधार पर चुना जाना चाहिए।

## iv. परिपक्वता अवधि (Maturity Period):

वर्तमान संपत्ति लंबे समय तक अधिशेष नहीं रहती है, इसलिए, विभिन्न परिपक्वता अवधि वाले, विभिन्न निवेश विकल्पों पर विचार किया जाना चाहिए। भविष्य में एक निश्चित नकदी दायित्व के बराबर परिपक्वता अवधि वाले निवेश का चयन भी किया जा सकता है।

### 3.9 कैश मॉडल्स (Cash Management Models)

नकद प्रबंधन मॉडल, उन विधियों का विश्लेषण करते हैं जो फर्म में नकद प्रबंधन कैसे आयोजित किए जाते हैं, इस बारे में कुछ संरचना प्रदान करते हैं। नकद प्रबंधन मॉडल गणितीय अनुप्रयोगों के साथ विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण में सैद्धांतिक अवधारणाओं का विकास कर रहे हैं। नकद प्रबंधन के तीन मॉडल, वित्त क्षेत्र में बहुत लोकप्रिय हैं।

नकद प्रबंधन मॉडल के तीन प्रमुख मॉडल हैं:-

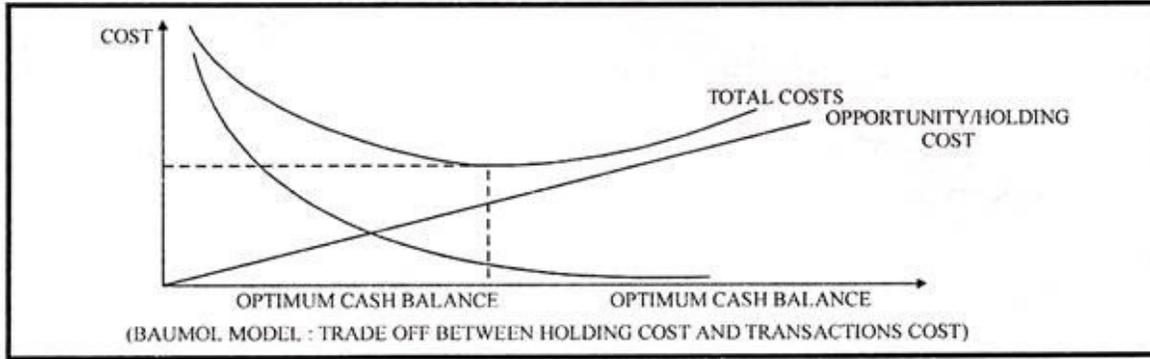
1. नकद चक्र मॉडल (Cash Cycle Model), 2. बाउमोल मॉडल (Baumol Model), 3. मिलर-ऑर मॉडल (Miller-Orr Model)

**1. नकद चक्र मॉडल (Cash Cycle Model):** नकद चक्र वह प्रक्रिया है जो एक उद्यम खाते के माध्यम से नकदी प्रवाह की पूरी प्रक्रिया को सूचित करने के लिए उपयोग किया जाता है। नकदी का उपयोग कच्चे माल की खरीद के लिए किया जाता है जो माल का उत्पादन करने के लिए उपयोग किया जाता है। इन वस्तुओं के उत्पादन में मजदूरी का भुगतान करने और अन्य खर्चों को पूरा करने के लिए नकदी का उपयोग भी शामिल है। उत्पादित वस्तुओं को नकद के साथ-साथ क्रेडिट पर भी बेचा जाता है। क्रेडिट बिक्री के मामले में बिलों की, बाद की तारीख में, पावती की जाती है। यह चक्र एक लेखांकन वर्ष में कई बार दोहराया जाता है।

नकद चक्र = रूपांतरण अवधि (Inventory holding period) + औसत संग्रह अवधि (Average Collection Period) - औसत भुगतान अवधि (Average Payment Period)

## 2. बाउमोल मॉडल:

विलियम जो बाउमोल (1952) ने सुझाव दिया कि किसी भी अन्य सूची के रूप में नकदी का प्रबंधन किया जा सकता है और यह कि सूची मॉडल लागत-मात्रा संबंधों के साथ-साथ नकद प्रवाह को उचित रूप से प्रतिबिंबित कर सकता है। इस तरह, सूची प्रबंधन के आर्थिक आदेश मात्रा (Economic Order Quantity- EOQ) मॉडल, नकद प्रबंधन पर लागू किया जा सकता है। यह नकदी प्रबंधन की समस्या के लिए एक उपयोगी वैचारिक आधार प्रदान करता है।



इस मॉडल के तहत दो प्रकार की लागतों को संतुलित करने का प्रयास किया जाता है - नकद रखने की लागत और लेनदेन की लागत। नकद रखने की लागत में (carrying cost of cash), नकद और विपणन योग्य प्रतिभूतियों का निवेश नहीं करने से ब्याज की हानि, और अन्य अवसर लागत, शामिल है। लेनदेन की लागत में (transaction cost), बाजार की प्रतिभूतियों को नकदी में परिवर्तित करने पर देय ब्रोकरेज, कमीशन और अन्य शुल्क, शामिल है। बाउमोल मॉडल, नकद रखने की लागत और लेनदेन की लागत को जोड़कर सही संतुलन मिलता है, ताकि नकद रखने की कुल लागत को कम किया जा सके।

कैश बैलेंस का इष्टतम स्तर पाया जाता है:

$$C = \sqrt{\frac{2AT}{I}}$$

जहाँ पे,

C = कैश बैलेंस का इष्टतम स्तर

A = वार्षिक नकद भुगतान अनुमानित

T = विपणन योग्य प्रतिभूतियों की खरीद या बिक्री के लेनदेन प्रति लागत

I = विपणन योग्य प्रतिभूतियों पर ब्याज। (यानी नकद प्रति रुपये लागत लेना)

मॉडल के अनुसार, इष्टतम नकद स्तर वह नकदी का स्तर है जहाँ नकद रखने की लागत और लेनदेन लागत न्यूनतम होती है। नकद रखने की लागत का मतलब नकद रखने की लागत को दर्शाता है यानी मार्केट योग्य

प्रतिभूतियों पर ब्याज भूल जाता है। लेनदेन लागत नकद में परिवर्तित बाजार योग्य प्रतिभूतियों को प्राप्त करने में शामिल लागत को संदर्भित करती है और इसके विपरीत।

**मान्यता (Assumptions):** इस मॉडल के आधार पर, कार्यशील नकदी संतुलन, निम्नलिखित मान्यताओं के तहत निर्धारित किया जाता है

- (A) सभी नकदी प्रवाह निश्चित हैं।
- (B) नकदी प्रवाह आवधिक और तात्कालिक हैं।
- (C) नकदी बहिर्वाह स्थिर दर पर होता है।

**सीमाएं (Limitations):** बाउमोल के मॉडल में महत्वपूर्ण सीमाएं निम्नानुसार हैं:

- (i) मॉडल केवल तभी लागू किया जा सकता है जब भुगतान की स्थिति का उचित मूल्यांकन किया जा सके।
- (ii) मॉडल तब लागू नहीं होगा जब, नकदी प्रवाह लेनदेन की भविष्यवाणी में अनिश्चितता की डिग्री अधिक है।
- (iii) मॉडल केवल धारणाओं के एक सेट के तहत इष्टतम संतुलन का सुझाव देता है। लेकिन वास्तविक स्थिति में यह हमेशा सच नहीं हो सकता है। फिर भी यह एक वैचारिक ढांचे की पेशकश करता है और सावधानी के साथ मापदंड के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

## 2. मिलर-ओरर कैश प्रबंधन मॉडल:

मिलर-ओरर मॉडल (1966) मानते हैं कि फर्म का नगद प्रवाह, स्टोकैस्टिक (stochastic) है, यानी विभिन्न बिंदुओं पर नकदी भुगतान की विभिन्न मात्राएं अनुमानित की जाती हैं। यह माना जाता है कि नकद शेष में यादृच्छिक (randomly) प्रवृत्ति होती है। मिलर-ओरर ने नियंत्रण सीमा वाले मॉडल का सुझाव दिया, जो निवेश खाते और नकद खाते के बीच, स्थानान्तरण के समय और आकार के लिए, नियंत्रण बिंदु निर्धारित करता है।

मॉडल का दावा है कि जब भी शेष राशि निचली या ऊपरी सीमा से बाहर हो जाती है तो शेष राशि को पूर्व निर्धारित सामान्य बिंदु पर वापस करने के लिए, खाते में या बाहर, स्थानांतरित करें।

निचली सीमा, प्रबंधन द्वारा निर्धारित की जाएगी, और ऊपरी सीमा और वापसी बिंदु सूत्रों के माध्यम से निर्धारित किये जायेंगे। जो मानते हैं कि नकद प्रवाह (inflow) और बहिर्वाह (outflow) यादृच्छिक हैं, उनके फैलाव को, आमतौर पर यह माना जाता है कि, वे अतीत में प्रदर्शित पैटर्न को दोहराएंगे।

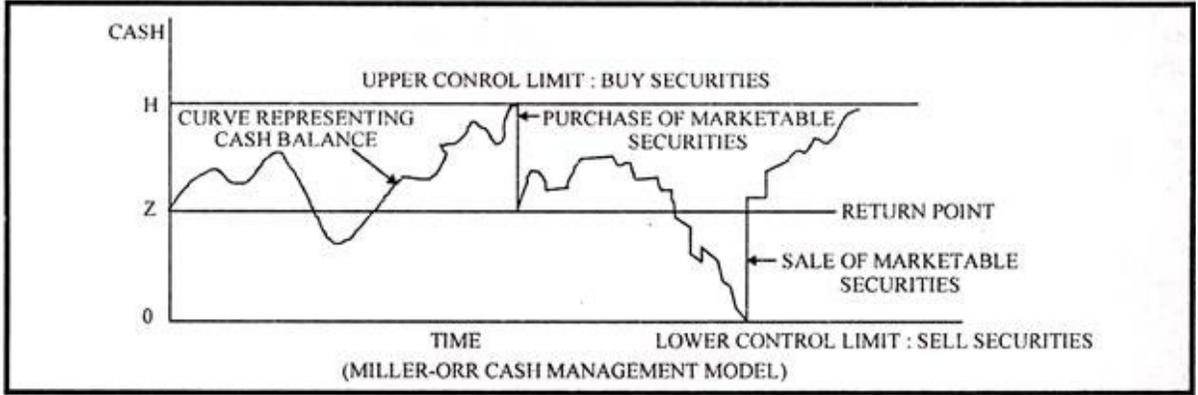
मॉडल निम्नलिखित दो नियंत्रण सीमा निर्दिष्ट करता है:

$H$  = नकदी संतुलन से परे ऊपरी नियंत्रण सीमा नहीं लेनी चाहिए।

= निचली नियंत्रण सीमा, नकद शेष राशि की निचली सीमा निर्धारित करती है, यानी फर्म को निचली सीमा तक कम से कम नकद संसाधन बनाए रखना चाहिए।

$Z$  = नकद शेष राशि के लिए वापसी बिंदु

यह आंकड़े में दर्शाया गया है:



मिलर-ऑर मॉडल, निम्नानुसार काम करेगा:

- (i) जब नकद शेष राशि, ऊपरी नियंत्रण सीमा (एच) को छूए, तो प्रतिभूतियों की कीमत रु. (H-Z)
- (ii) फिर नई नकद शेष राशि Z आती है।
- (iii) जब नकद शेष राशि कम नियंत्रण सीमा (O) को छूती है, तो योग्य विपणन प्रतिभूतियों को, रुपये की सीमा तक (Z-O) बेचा जाएगा।
- (iv) फिर नई नकदी शेष राशि फिर से बिंदु Z पर वापस आती है।

**मान्यता(Assumptions):** मॉडल की बुनियादी मान्यताएं हैं:

- (A) फर्म के पास न्यूनतम आवश्यक नकदी शेष है।
- (B) नकदी प्रवाह सामान्य रूप से वितरित किया जाता है।
- (C) अपेक्षित नकदी प्रवाह शून्य है।
- (D) नकदी प्रवाह में कोई स्वतः सहसंबंध (auto-correlation) नहीं है।
- (E) नकदी प्रवाह का मानक विचलन समय के साथ नहीं बदलता है।
- (F) 'एच' और 'जेड' के इष्टतम मूल्य न केवल अवसर लागत पर निर्भर करते हैं, बल्कि नकदी शेष में संभावित उतार-चढ़ाव की डिग्री पर भी निर्भर करते हैं।

मॉडल अनिश्चितता और यादृच्छिक नकदी प्रवाह के समय में इस्तेमाल किया जा सकता है। यह सिद्धांत पर आधारित है कि नियंत्रण सीमा निर्धारित की जा सकती है जब लेनदेन से ट्रिगर हो जाता है। नियंत्रण सीमा नकद प्रवाह में दिन-प्रति-दिन परिवर्तनशीलता और सरकारी प्रतिभूतियों को खरीदने और बेचने की निश्चित लागत पर आधारित होती है। नियंत्रण सीमाओं के बीच फैलाना (spread):

$$= 3 \left( \frac{3/4 \times \text{Transaction Cost} \times \text{Variance of Cash Flows}}{\text{Interest Rate}} \right)^{1/3}$$

$$\text{Return Point} = \text{Lower Limit} + \frac{\text{Spread}}{3}$$

नकदी प्रवाह और लेनदेन लागत में परिवर्तनशीलता जितनी अधिक होगी, उतनी ही अधिक नियंत्रण सीमा होगी। इसके विपरीत, ब्याज दर जितनी अधिक होगी, उतनी ही कम और करीब हो जाएगी। नियंत्रण सीमा के भीतर, नकद शेष राशि अप्रत्याशित रूप से उतार-चढ़ाव करती है। जब यह ऊपरी या निचली सीमा से टकराती है, तो नियंत्रण बिंदुओं के भीतर संतुलन को सामान्य स्तर पर बहाल करने के लिए प्रतिभूतियों को खरीदने या बेचने की कार्रवाई की जाती है। मॉडल को लागू करने में नकद शेष राशि के लिए निचली सीमा निर्धारित करनी होगी। यह शून्य या कुछ न्यूनतम सुरक्षा मार्जिन हो सकता है।

### 3.10 नकद पूर्वानुमान के तरीके (Methods of Cash Forecast)

नकद प्रवाह पूर्वानुमान महत्वपूर्ण है, क्योंकि यदि कोई व्यवसाय नकद संकट की स्थिति में होता है और वह नया वित्त प्राप्त करने में सक्षम नहीं होता है, तो यह उसके लिए दिवालिया होने का संकेत देता है। नकद प्रवाह सभी व्यवसायों का जीवन-रक्त है, विशेष रूप से स्टार्ट-अप और छोटे उद्यम। नतीजतन, यह आवश्यक है कि प्रबंधन, पूर्वानुमान (भविष्यवाणी) नकद प्रवाह से, यह सुनिश्चित कर लें कि क्या व्यापार को सुचारु ढंग से चलाने के लिए पर्याप्त धन है? प्रबंधन को कितनी बार, नकदी प्रवाह का पूर्वानुमान करना चाहिए, यह व्यापार की वित्तीय सुरक्षा पर निर्भर है। यदि व्यापार संघर्ष कर रहा है, या अपने वित्त पर सावधानीपूर्वक नजर रख रहा है, तो व्यवसाय के मालिक को दैनिक आधार पर अपने नकद प्रवाह का पूर्वानुमान और संशोधन करना चाहिए। हालांकि, यदि व्यापार का वित्त अधिक स्थिर और 'सुरक्षित' है, तो साप्ताहिक या मासिक नकदी प्रवाह का पूर्वानुमान और संशोधन करना पर्याप्त है। नकद प्रवाह पूर्वानुमान निम्न कारणों से महत्वपूर्ण है:

- "प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली" के रूप में, नकदी प्रवाह में संभावित कमी को पहचानने- नकद प्रवाह पूर्वानुमान के बारे में सोचें। नकद प्रवाह पूर्वानुमान के लिए यह अब तक का सबसे महत्वपूर्ण कारण है।
- सुनिश्चित करें कि व्यवसाय आपूर्तिकर्ताओं और कर्मचारियों का भुगतान कर सकता है। जिन आपूर्तिकर्ता को समय पर भुगतान प्राप्त नहीं होता वे जल्द ही व्यापार की आपूर्ति बंद कर देंगे; यदि कर्मचारियों को समय पर भुगतान नहीं किया जाता है तो संस्था की बुरी स्थिति को दर्शाता है।
- पूर्वानुमानित ग्राहक भुगतान समस्याएं और उनसे निपटने के लिए पहले से ही तैयारी करने से व्यवसाय को प्रोत्साहित किया जाता है, ताकि ग्राहक जल्द-से-जल्द से अपने कर्ज का भुगतान कर सकें।

- वित्तीय नियोजन के एक महत्वपूर्ण अनुशासन के रूप में - नकद प्रवाह पूर्वानुमान, व्यापार बजट तैयार करने के समान ही, एक महत्वपूर्ण प्रबंधन प्रक्रिया है।
- बैंकों जैसे बाहरी हितधारकों को नियमित पूर्वानुमान की आवश्यकता हो सकती है। निश्चित रूप से, यदि व्यापार में बैंक ऋण है, तो बैंक नियमित अंतराल पर नकद प्रवाह पूर्वानुमान देखना चाहता है।

नकद पूर्वानुमान या बजट नकदी प्रबंधन का मुख्य साधन हैं। उन्हें दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है: अल्पकालिक नकद पूर्वानुमान (Short-term Cash Forecast) और दीर्घकालिक नकद पूर्वानुमान (Long-term Cash Forecast)। अल्पकालिक नकद पूर्वानुमान और दीर्घकालिक नकद पूर्वानुमान के बीच विभाजित रेखा आमतौर पर एक वर्ष की होती है, हालांकि यह भेद कुछ हद तक मनमाना है।

### 1. अल्पकालिक पूर्वानुमान:

लघु अवधि के पूर्वानुमान या नकद बजट, नियमित रूप से व्यावसायिक फर्मों द्वारा तैयार किए जाते हैं:

- i) नकद आवश्यकता का आंकलन,
- ii) अल्पकालिक वित्त पोषण योजना,
- iii) पूंजी व्यय परियोजनाओं के संबंध में भुगतान निर्धारण,
- iv) सामग्री की खरीद योजना,
- v) क्रेडिट नीतियों का विकास, और
- vi) दीर्घकालिक पूर्वानुमान की सटीकता की जांच करना।

फर्म विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उपयुक्त विभिन्न अवधि और विस्तार के कई अल्पकालिक पूर्वानुमानों का उपयोग करते हैं।

अल्पकालिक नकद पूर्वानुमान के लिए आमतौर पर उपयोग किए जाने वाले योजनाएं हैं:

- i) एक वर्ष, तिमाहियों या महीनों में विभाजित है,
- ii) एक चौथाई महीनों में विभाजित, और
- iii) एक महीने विभाजित, हफ्तों में।

तरलता की कमी के साथ, साप्ताहिक नकदी पूर्वानुमान भी दिनों में विभाजित कर सकते हैं। यहां पर जोर दिया जाने वाला बिंदु यह है कि ये कई प्रारूप विभिन्न उद्देश्यों को पूरा करते हैं और उन्हें पारस्परिक रूप से अनन्य नहीं माना जाना चाहिए।

अल्पकालिक नकदी पूर्वानुमान की मुख्य विधि रसीदें और वितरण विधि है। कभी-कभी समायोजित आय विधि का उपयोग भी किया जाता है, हालांकि इस विधि को मुख्य रूप से दीर्घकालिक नकदी पूर्वानुमान के लिए नियोजित किया जाता है।

#### **प्राप्तियां और वितरण विधि:**

इस विधि के तहत तैयार नकदी पूर्वानुमान, पूर्वानुमान अवधि के दौरान अपेक्षित नकद रसीदों और वितरण के समय एवं परिमाण को दर्शाता है। इसमें सभी अपेक्षित रसीदें और वितरण शामिल हैं चाहे वे किसी भी प्रकार से लेखांकन में वर्गीकृत हैं।

**लाभ:** इस विधि में निम्नलिखित लाभ है:

- यह अपेक्षित नकदी प्रवाह की एक पूरी तस्वीर प्रदान करता है।
- दिन-प्रतिदिन लेनदेन पर नियंत्रण का उपयोग करने के लिए यह एक अच्छा वाहन है।

**नुकसान:** इसमें निम्नलिखित कमी हैं:

- इसकी विश्वसनीयता, संग्रह में देरी, बड़े भुगतान और अन्य समान कारकों की अचानक मांग से प्रभावित है।
- यह कंपनी के कामकाजी पूंजी चक्र में महत्वपूर्ण बदलावों की स्पष्ट तस्वीर प्रदान करने में विफल रहता है, खासतौर से स्टॉक और प्राप्तियों से संबंधित।

## **2. दीर्घकालिक नकद पूर्वानुमान:**

लंबी अवधि के नकद पूर्वानुमान आम तौर पर 2 से 5 साल की अवधि के लिए तैयार किए जाते हैं और भविष्य में फर्म, अधिशेष की वित्त पोषण आवश्यकताओं और उपलब्धता की एक तस्वीर, निवेशकों को, प्रदान करने का काम करते हैं। लंबी अवधि के नकद पूर्वानुमान, पूंजी व्यय परियोजनाओं की योजना बनाने और लंबी अवधि के फंडों को बढ़ाने की योजना बनाने, में सहायक होते हैं। सैद्धांतिक रूप से, रसीदें और वितरण विधि, लंबी अवधि के पूर्वानुमान के लिए उपयोग की जा सकती है। हालांकि, आमतौर पर इसके लिए, विधि समायोजित शुद्ध आय विधि का उपयोग किया जाता है।

#### **समायोजित शुद्ध आय विधि:**

नकदी पूर्वानुमान की यह विधि, धन प्रवाह विवरण जैसा दिखता है। भविष्य में फर्म की नकदी आवश्यकता का आकलन करता है और यह इंगित करता है कि क्या यह आवश्यकता आंतरिक स्रोतों से पूरी की जा सकती है या नहीं। समायोजित शुद्ध आय पूर्वानुमान तैयार करने के लिए आवश्यक जानकारी मुख्य रूप से कॉर्पोरेट बजट से ली जाती है।

नकदी पूर्वानुमान की शुद्ध आय विधि का मुख्य लाभ यह है कि यह कार्यशील पूंजीगत परिवर्तनों पर घनिष्ठ प्रहरा प्रदान करता है और फर्म को अपनी वित्त पोषण आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सक्षम बनाता है। इसकी बड़ी कमी यह है कि यह नकद प्रवाह की अनुमति नहीं देता है, भले ही यह फंड प्रवाह के संचयी प्रभाव को दर्शाने के लिए एक उत्कृष्ट उपकरण है।

### 3.11 सारांश

नकद, एक व्यापारिक फर्म का जीवन-स्रोत है। नकद, फर्म द्वारा प्रदान किए गए उत्पादों और सेवाओं को उत्पन्न करने में उपयोग की जाने वाली आपूर्ति, संसाधन, उपकरण और अन्य संपत्तियों को प्राप्त करने की आवश्यकता है। श्रमिकों और प्रबंधकों को मजदूरी और वेतन का भुगतान करने, सरकारों को कर, ब्याज और लेनदारों को मूलधन, और शेयरधारकों को लाभांश का भुगतान करने के लिए भी नकद की आवश्यकता है। अधिक मौलिक रूप से, नकद विनिमय का माध्यम है, जो प्रबंधन को दिन-प्रतिदिन की विभिन्न गतिविधियों को जारी रखने की अनुमति देता है। जब तक फर्म के पास इन दायित्वों को पूरा करने के लिए नकद है, वित्तीय विफलता असंभव है। नकदी की मात्रा में कमी से, दिवालियापन एक गंभीर संभावना बन जाता है।

आधुनिक कॉर्पोरेट नकदी प्रबंधन का उभरता हुआ दृश्य यह है कि, एक फर्म को समय पर बकाया निपटारे के लिए न्यूनतम राशि नकदी बनाए रखना पड़ता है। कच्चे माल, लेनदारों, दिन-प्रतिदिन के खर्च, लाभांश इत्यादि खरीदने के लिए नकदी की आवश्यकता होती है। फर्म की तरलता का परीक्षण यह है कि वह समय पर विभिन्न दायित्वों को पूरा करने में सक्षम है। एक फर्म के साथ इष्टतम नकद शेष निर्धारित करने के लिए विभिन्न मॉडल हैं। इन मॉडलों के लक्ष्य, बिल भुगतान के लिए पर्याप्त मात्रा में नकदी सुनिश्चित करना है, और साथ ही नकदी कमी होने पर नकद प्राप्त करने में लेनदेन लागत को कम करने के लिए, अधिशेष उत्पन्न होने पर नकदी का निपटान करना है।

### 3.12 बोध प्रश्न

1. आपकी राय में, एक कंपनी के पास तरल संपत्ति रखने के लिए क्या उद्देश्य हो सकता है? तरल संपत्ति रखने के साथ जुड़े लागत और लाभ बताएं।
2. " कंपनी के वित्तीय प्रबंधक के लिए वांछनीय नकद होल्डिंग्स निर्धारित करने में नकदी बजट पर महत्व रखना सामान्य बात है।" बाउमोल ने कंपनी के इष्टतम नकदी संतुलन को निर्धारित करने के लिए उपयुक्त मॉडल विकसित करने के लिए इस दृष्टिकोण का उपयोग कैसे किया?

3. किसी कंपनी की नकद आवश्यकताओं को कम करने के लिए वित्तीय प्रबंधक क्या कार्रवाई कर सकता है?
4. "अल्पावधि प्रतिभूतियों में निवेश के बारे में निर्णय लेने में वापसी जोखिम की तुलना में तरलता जोखिम अधिक महत्व का है।" चर्चा करें।
5. आपकी राय में, बाउमोल मॉडल नकद प्रबंधन का सबसे लोकप्रिय मॉडल होने के क्या कारण हैं?
6. उन कारकों की जांच करें जो फर्म में इष्टतम नकद शेष निर्धारित करते हैं।

### 3.13 संदर्भ ग्रंथ

- D.R. Mehta, *Working Capital Management*, Prentice-Hall Inc., 1974.
- K.V. Smith, *Management of Working Capital*, McGraw-Hill, New York.
- Khan and Jain, *Financial Management*, Tata McGraw-Hill.
- Pandey, *Financial Management*, Vikas Annex. 54.J.3 -MBA - Finance - SDE  
Page 20 of 23.

## इकाई – IV: धन के प्रवाह का विवरण

### इकाई की संरचना

#### 4.1 उद्देश्य

#### 4.2 प्रस्तावना

#### 4.3 धन के प्रवाह अर्थ और संकल्पना

#### 4.4 धन प्रवाह तथा आय विवरण में अंतर

#### 4.5 क्या एक लेनदेन धन का प्रवाह होता है या नहीं जानने की प्रक्रिया

#### 4.6 कार्यशील पूंजी में परिवर्तन की अनुसूची तैयार करने के लिए प्रक्रिया

#### 4.7 सारांश

#### 4.8 बोध प्रश्न

#### 4.9 संदर्भ ग्रंथ

### 4.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप निम्नलिखित को समझ सकेंगे:

- धन प्रवाह की मूल अवधारणा को ।
- कार्यशील पूंजी में परिवर्तन की अनुसूची तैयार करने की प्रक्रिया ।

### 4.2 प्रस्तावना

व्यवसाय के मौलिक उद्देश्यों में से एक लाभ कमाना है। व्यापार की दीर्घ स्थिरता और अस्तित्व के लिए, यह आवश्यकता है कि अल्प अवधि में उत्पन्न होने वाली किसी भी तरलता की समस्याओं से निपटने में, व्यापार का सक्षम होना अनिवार्य है। व्यवसाय का वित्तीय विवरण किसी विशेष तारीख पर परिसंपत्तियों, देनदारियों

और पूंजी को इंगित करता है और अवधि के दौरान लाभ या हानि भी दर्शाता है। लेकिन यह संभव है कि व्यापार में पर्याप्त लाभ हो और वित्तीय स्थिति भी अच्छी है और फिर भी व्यापार में नकद या कार्यशील पूंजी की कमी हो सकती है।

यदि प्रबंधन यह जानना चाहता है कि नकद का उपयोग किस प्रकार किया जा रहा है, तो वित्तीय विवरण मदद नहीं कर सकता है। लाभ और हानि खाता एकाउंटिंग अवधि के दौरान दर्ज वित्तीय लेनदेन की सीमित सीमा से संबंधित वित्तीय जानकारी प्रदान करता है। बैलेंस शीट में पूंजीगत ऋण या खरीदी गई संपत्ति से संबंधित जानकारी होती है। परिसंपत्तियों और देनदारियों, या लाभ और हानि के बारे में जानकारी के साथ-साथ यह जानना भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि लेखांकन वर्ष के दौरान कौन-कौन से फंड उपलब्ध हो गए थे और यह फंड कैसे लागू किए गए थे। यह जानकारी धन प्रवाह विश्लेषण से प्राप्त की जा सकती है।

धन प्रवाह विश्लेषण, एक व्यवसाय के वित्तीय विवरण के विश्लेषण और व्याख्या की महत्वपूर्ण तकनीक है। इस तकनीक के तहत, हम दो अलग-अलग समय अवधि के बीच एक फर्म के फंड में परिवर्तन की मात्रा का पता लगाते हैं और ऐसे परिवर्तनों के लिए जिम्मेदार कारणों का विश्लेषण करते हैं। इन परिवर्तनों और विश्लेषणों का खुलासा करने वाले बयान को फंड फ्लो स्टेटमेंट के रूप में जाना जाता है।

### 4.3 धन के प्रवाह अर्थ और संकल्पना (Meaning and Concept of Flow of Funds)

"फ्लो ऑफ फंड" शब्द का अर्थ व्यापार लेनदेन के सामान्य कार्यप्रणाली में धन या परिवर्तन की गति या कार्यशील पूंजी में परिवर्तन को संदर्भित करता है। कार्यशील पूंजी के अन्तर्वाह या बहिर्वाह के रूप में हो सकती है। दूसरे शब्दों में, लेनदेन होने पर, कार्यशील पूंजी में हुई वृद्धि या कमी को "फंड का प्रवाह" कहा जाता है। यदि कामकाजी पूंजी के घटकों के परिणामस्वरूप फंड की वृद्धि हुई है, तो इसे फंड के स्रोत (Source) के रूप में जाना जाता है। इसी तरह, यदि वित्तीय स्थिति में कमी के कामकाजी पूंजी प्रभाव के घटक इसे फंड के अनुप्रयोग (Application) के रूप में माना जाता है।

उदाहरण के लिए, यदि अंश (Shares) जारी करने के माध्यम से प्राप्त राशि को, फंड के स्रोत या फंड के प्रवाह के रूप में लिया जाएगा। इस लेनदेन के परिणामस्वरूप वित्तीय स्थिति में वृद्धि हुई है। इस तरह, मशीनरी की खरीद के लिए उपयोग किए जाने वाली राशि को, फंड के बहिर्वाह या निधि के उपयोग के रूप में लिया जाएगा, क्योंकि यह फंड की स्थिति को कम करता है। यदि लेनदेन के परिणामस्वरूप धन की वृद्धि हुई है, तो इसे "धन के स्रोत" के रूप में जाना जाएगा। यदि किसी लेनदेन के परिणामस्वरूप धन की कमी होती है तो उसे

“धन के उपयोग” के रूप में लिया जाएगा। यदि कोई लेनदेन धन की स्थिति में कोई बदलाव नहीं करता है, तो ऐसा कहा जाता है कि यह एक गैर-निधि लेनदेन है।

कुछ लेनदेन, फंड की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं करते हैं, इस तरह के लेनदेन व्यापार के भीतर शामिल हैं। जैसे लेनदेन में, मौजूदा संपत्तियों और वर्तमान देनदारियों और गैर-चालू परिसंपत्तियों और गैर-मौजूदा देनदारियों दोनों शामिल होती हैं जिसके कारण प्रवाह नहीं होता है। उदाहरण के लिए, ऋणपत्र का अंशों में रूपांतरण। इस तरह के लेन-देन में केवल गैर-चालू खातों के बीच सौदा होता है और यह गतिविधि कार्यशील पूंजी स्थिति में वृद्धि या कमी में प्रभाव नहीं डालती है। यह एक बयान है, जो व्यवसाय के अंदर और बाहर धन की आवाजाही दिखाता है। दूसरे शब्दों में यह एक बयान है जो स्रोतों और निधि के आवेदन को दिखाता है। एक फंड प्रवाह विवरण व्यावसायिक गतिविधियों को चलाने के लिए आवश्यक वित्तीय संसाधनों से संबंधित है। यह बताता है कि धन कैसे प्राप्त किए गए थे और उनका उपयोग कैसे किया गया था।

एक निधि प्रवाह विवरण एक तकनीकी उपकरण है, जो दो तिथियों के बीच एक व्यापारिक उद्यमकी वित्तीय स्थितियों में परिवर्तन का विश्लेषण करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इसे “सूत्रों का विवरण और धन के अनुप्रयोग” कहा जाता है, जैसा कि यह चित्रित करता है, स्रोतों और कामकाजीपूंजी के अनुप्रयोग और संसाधनों में मूल परिवर्तन और संस्था के वित्तीय ढांचे पर प्रकाश डालता है। एक निधि प्रवाह विवरण प्रबंधन में लोकप्रिय है, क्योंकि यह न केवल वित्तीयसंचालन का विश्लेषण करने में मदद करता है, बजट के साथ तुलना करने के लिए आधार प्रदानकरता है, और संचार के एक उपकरण के रूप में सेवा करने में भी मदद करता है, लेकिन यह कई खामियों की इंगित भी करता है जैसे कि वे कारण जिससे कंपनी को लेनदारों को भुगतान करने में कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है या बैंक बैलेंस की स्थिति खराब क्यों हो रहा है।

फंड प्रवाह विवरण, एक विशेष अवधि के दौरान, फंड के स्रोत और अनुप्रयोग पूंजी के साथ-साथ राजस्व प्रकृति के भी हो सकते हैं। एक फंड प्रवाह विवरण शुरुआत में और अवधि के अंत में, अवधि के लाभ और हानि खाते और बैलेंस शीट के बीच, एक सार्थक कड़ी प्रदान करते हैं।

### **"फंड" की अवधारणा:**

'फंड' शब्द को विभिन्न विशेषज्ञों द्वारा अलग-अलग परिभाषित और व्याख्या किया गया है। व्यापक रूप से 'फंड' शब्द कंपनी के सभी वित्तीय संसाधनों को संदर्भित करता है। वही दूसरी ओर, फंड को केवल 'नकदी' के रूप में समझा गया है। अंतरराष्ट्रीय लेखा मानक संख्या 7 (IAS-7) के अनुसार, फंड शब्द आम तौर पर नकद, कार्यशील पूंजी और नकद समकक्ष (दीर्घकालिक वित्तीय स्रोत) को संदर्भित करता है।

**A) फंड का मतलब नकद है:** इस अवधारणा के तहत, "धन" शब्द का उपयोग केवल नकदी और बैंक संतुलन के अर्थ में किया जाता है। यहां, नकद और बैंक में केवल बदलावों पर विचार किया जाता है।

इसलिए, बयान को "कैश फ्लो स्टेटमेंट" कहा जाता है। इस कथन का लक्ष्य विभिन्न वस्तुओं को सूचीबद्ध करना है, जो दो बैलेंस शीट तिथियों के बीच नकद शेष में परिवर्तन लाते हैं। नकद योजना, नियंत्रण उद्देश्यों के लिए उपयोगी हो जाती है। चूंकि नकदी को अल्पकालिक परिसंपत्तियों के रूप में माना जाता है, इसलिए वे अल्पकालिक उतार-चढ़ाव के अधीन होती है। आपूर्तिकर्ताओं को भुगतान करने में देरी और भूमि खरीद का भुगतान करने के लिए एक महीने के क्रेडिट के प्रावधान पर्याप्त नकदी प्रवाह दिखा सकते हैं। वे एक संतोषजनक स्थिति को प्रतिबिंबित कर सकते हैं, लेकिन यह वास्तविकता नहीं है। इसलिए, निधि की नकद समकक्ष अवधारणा केवल अल्पकालिक वित्तीय नियोजन के लिए उपयोगी है, न कि लंबी अवधि के लिए। इस प्रकार नकदी और बैंक, निधि का एक हिस्सा है।

**B) फंड का मतलब है कार्यशील पूंजी:** कार्यशील पूंजी, वर्तमान दायित्व पर वर्तमान संपत्तियां की अधिकता को मापती है। इसका मतलब है कामकाजी पूंजी = वर्तमान संपत्तियां - वर्तमान दायित्व। यह वित्तीय स्थिति में बदलाव का एक वैकल्पिक उपाय है। वे सभी लेन-देन जो कार्यशील पूंजी को बढ़ाते या घटाते हैं, इस कथन में शामिल हैं। इसमें ऐसी वस्तुओं को शामिल नहीं किया गया है जो कार्यशील पूंजी को प्रभावित नहीं करते हैं। धन की कार्यशील पूंजी अवधारणा, सामान्य लेखांकन प्रक्रियाओं के अनुरूप है इसलिए, इस अवधारणा के आधार पर एक धन प्रवाह विवरण, अन्य बयानों के साथ अच्छी तरह से उपयुक्त बैठता है। इसके अलावा, कार्यशील पूंजी भी फर्म की अल्पकालिक तरलता का एक उपाय है। इसलिए, नेट वर्किंग कैपिटल की मात्रा में बदलाव लाने वाले कारकों का विश्लेषण- शेयरधारकों, लेनदारों और प्रबंधन द्वारा निर्णय लेने के लिए उपयोगी है। इन कारणों से, धन के लिए कार्यशील पूंजी दृष्टिकोण, नकद दृष्टिकोण से अधिक उपयोगी है।

**C) फंड का मतलब है कुल वित्तीय संसाधन:** "धन" शब्द का प्रयोग अक्सर उपयोगी वित्तीय संसाधनों के अर्थ में भी किया जाता है। नकद दृष्टिकोण और कार्यशील पूंजी दृष्टिकोण दोनों अपूर्ण और अपर्याप्त हैं क्योंकि वे कुछ प्रमुख वित्तीय और निवेश लेनदेन को छोड़ देते हैं। ऐसी चीजें शुद्ध कार्यशील पूंजी को प्रभावित नहीं करती हैं लेकिन, यदि वे शामिल हैं, तो वे निश्चित रूप से निर्णय लेने के लिए गुणात्मक जानकारी प्रदान करेंगे। उदाहरण के लिए भवनों या परिसंपत्तियों की खरीद के लिए इक्विटी शेयर और डिबेंचर्स जारी करना से कामकाजी पूंजी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। लेकिन यह एक महत्वपूर्ण वित्तीय लेनदेन है जिसका खुलासा किया जाना चाहिए। इसलिए, यह अवधारणा अन्य अवधारणाओं की तुलना में वित्तीय स्थिति में बदलावों का खुलासा करने का सबसे अच्छा तरीका प्रतीत होता है।

**निधि प्रवाह का उद्देश्य (Objectives of Flow of Fund):**

निधि प्रवाह का विवरण वित्तीय प्रबंधक के विश्लेषणात्मक किट में एक उपयोगी उपकरण है। इस विवरण के महत्वपूर्ण उद्देश्यों हैं:

1. वर्तमान वित्तीय प्रबंधन के परिणाम को इंगित करने के लिए।
2. एक विशिष्ट अवधि के दौरान हुई सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तनों पर जोर देना के लिए।
3. यह दिखाने के लिए कि व्यवसाय में सामान्य विस्तार को वित्तपोषित किया गया है या नहीं, साथ ही उन स्रोतों का वर्णन किया गया है जिनसे अतिरिक्त धन अर्जित किए गए थे।
4. संचालन, लाभांश के वितरण और नई पूंजी बढ़ाने या ऋणों के दावों से मुनाफे के बीच संबंध स्थापित करने के लिए।
5. इस तथ्य को मान्यता देने के लिए कि एक व्यापार में धन का प्रवाह है और यह एक गतिहीन संगठन नहीं है।

**निधि प्रवाह स्टेटमेंट (Fund Flow Statement) के उद्देश्यों:** फंड प्रवाह विवरण का मुख्य उद्देश्य है:

(1) कुछ महत्वपूर्ण वित्तीय प्रश्नों के उत्तर खोजने में सहायक: - निम्नलिखित प्रश्नों के संतोषजनक उत्तर देने के लिए एक निधि प्रवाह विवरण तैयार किया जाता है: -

- a) अवधि के दौरान धन का मुख्य स्रोत और आवेदन की स्थिति?
- b) व्यापार संचालन से कितना धन उत्पन्न हुआ है?
- c) मुनाफा का विनियोग कहां और कैसे किया गया?
- d) लाभांश में वृद्धि न होने के कारण को जानना?
- e) वर्तमान कमाई से अधिक या अवधि के लिए शुद्ध हानि की उपस्थिति में, लाभांश वितरित करना कैसे संभव था?
- f) इस अवधि के लिए शुद्ध हानि होने के बावजूद शुद्ध वर्तमान संपत्ति क्यों बढ़ रही है?
- g) संयंत्र और उपकरणों में विस्तार कैसे वित्त पोषित किया गया था?
- h) दीर्घकालिक ऋण का भुगतान कैसे हुआ?
- i) कार्यशील पूंजी में वृद्धि कैसे वित्त पोषित हुई?

(2) **वित्तीय विश्लेषण में सहायक:** - निधि प्रवाह विवरण, एक फर्म की वित्तीय स्थिति का एक पूर्ण विश्लेषण प्रदान करता है।

(3) **यह व्यापार के लाभ और हानि के अधिक विश्वसनीय आंकड़े प्रदान करता है:** - यह लाभ और हानि खाते द्वारा दिखाए गए आंकड़ों की तुलना में व्यापार के मुनाफे का अधिक विश्वसनीय आंकड़ा देता है क्योंकि लाभ और हानि खाते द्वारा दिखाए गए, प्रारंभिक विस्तार आदि के लेखन के संबंध में मूल्यहास और अन्य समायोजन की राशि का निर्णय, प्रबंधन के व्यक्तिगत निर्णय से, प्रभावित होता है।

(4) **यह जानने में सक्षम बनाता है कि धन का सही ढंग से उपयोग किया गया है:** - धन प्रवाह विवरण प्रबंधन को यह जानने में सक्षम बनाता है कि विभिन्न संपत्तियों को खरीदने या ऋण चुकाने आदि में धन का उचित उपयोग किया गया है या नहीं।

(5) **कार्यशील पूंजी के उचित प्रबंधन में सहायक:** - किसी व्यवसाय में कार्यशील पूंजी प्रबंधन करते समय, यह सुनिश्चित करना आवश्यक हो जाता है कि यह न तो अत्यधिक और न ही अपर्याप्त हो। एक फंड प्रवाह विवरण कार्यशील पूंजी में अत्यधिकता या अपर्याप्तता को इंगित करता है।

(6) **अगली अवधि के लिए बजट तैयार करने में मदद करता है:** - अगले वर्ष के लिए, एक फंड प्रवाह विवरण तैयार किया जाता है, यह प्रबंधन को अपने वित्तीय संसाधनों की उचित योजना बनाने में सक्षम बनाता है। जिससे फर्म को पता चलेगा कि उनके लिए कितना धन जरूरी है, फर्म आंतरिक रूप से कितना प्रबंधन कर सकती है और इसे बाहरी स्रोत से कितना व्यवस्थित करना चाहिए। यह भविष्य की अवधि के लिए बजट तैयार करने में मददगार होता है।

(7) **यह उधार संचालन में फर्म की मदद करता है:** - भविष्य की अवधि के लिए तैयार फंड प्रवाह विवरण इंगित करता है कि कंपनी के पास समय पर ब्याज और ऋण चुकाने के लिए पर्याप्त धनराशि होगी या नहीं।

(8) **लाभांश नीति निर्धारित करने में सहायक:** - कभी-कभी, पर्याप्त लाभ हो सकता है लेकिन व्यापार की तरलता और कार्यशील पूंजी पर इसके प्रतिकूल प्रभाव के कारण लाभांश का वितरण संभव नहीं हो सकता है। ऐसे मामलों में फंड प्रवाह विवरण लाभांश को वितरित करने या न करने के लिए अग्रणी है, क्योंकि फंड प्रवाह विवरण से पता चलता है कि लाभांश वितरित करने के लिए कहां और कितने धन प्रबंधित किए जा सकते हैं।

(9) **शेयरधारकों के लिए उपयोगी:** - शेयरधारकों को फंड प्रवाह विवरण की सहायता से उद्यम की वित्तीय नीतियों के बारे में जानकारी भी मिलती है।

**स्रोतों और उपयोगों के आवेदन (आवेदन):** चूंकि एक फंड प्रवाह विवरण बताता है कि धन और स्रोतों के उपयोग अलग-अलग होते हैं, इसलिए यह जरूरी है कि इसके बारे में जानकारी हो:

**निधियों का स्रोत (Sources of Funds):**

- |   |                               |
|---|-------------------------------|
| 1. व्यवसाय का संचालन आय   | 5. संपत्ति की बिक्री          |
| 2. निवेश से आय  | 6. दीर्घकालिक निवेश की बिक्री |
| 3. उपहार, कानूनी कार्रवाई आदि में सम्मानित नुकसान योगदान                | 7. शेयर धारकों का             |
| 4. दीर्घकालिक देनदारियों में वृद्धि, उदाहरण के लिए, डिबेंचरों का मुद्दा |                               |

**धन का अनुप्रयोग (Application of Funds):**

- |  |                              |
|--|------------------------------|
| 1. व्यवसाय का संचालन हानि                    | 4. वरीयता शेयर पूंजी का मोचन |
| 2. दीर्घकालिक ऋण और डिबेंचरों का पुनर्भुगतान | 5. नकद लाभांश का भुगतान      |
| 3. स्थायी संपत्तियों की खरीद                 | 6. दीर्घकालिक निवेश की खरीद  |

**फंड प्रवाह विवरण की सीमा:** फंड प्रवाह विवरण की मुख्य सीमाएं निम्नानुसार हैं:

- (1) बयान में मौलिकता की कमी है, क्योंकि यह खाता पुस्तकों में दिखाई देने वाले डेटा का पुनर्गठन है।
- (2) यह केवल पिछली स्थिति इंगित करता है न कि भविष्य की।
- (3) यह इंगित करता है कि, फंड प्रवाह एक सारांश रूप है, और यह लगातार होने वाले विभिन्न परिवर्तन नहीं दिखाता है।
- (4) जब लेनदेन के दोनों पहलू चालू होते हैं, तो उन्हें नहीं माना जाता है।
- (5) जब लेनदेन के दोनों पहलू गैर-चालू होते हैं, तब भी वे इस कथन में शामिल नहीं होते हैं।
- (6) यह वित्तीय विश्लेषण के लिए एक आदर्श उपकरण नहीं है।
- (7) यह एक मूल बयान नहीं है बल्कि केवल दो बयान या वित्तीय डेटा का पुनर्गठन है।
- (8) यह आय विवरण या बैलेंस शीट का विकल्प नहीं है। यह केवल उनके लिए एक पूरक है।

**फंडों के प्रवाह के घटक:** स्रोतों और निधियों के आवेदन का विश्लेषण करने के लिए, नीचे दिए गए धन के प्रवाह के अर्थ और घटकों को जानना आवश्यक है:

- |   |                        |
|---|------------------------|
| (1) वर्तमान संपत्ति                                   | (4) वर्तमान देयताएं    |
| (2) गैर-चालू संपत्तियां (निश्चित या स्थायी संपत्ति)   | (5) कर के लिए प्रावधान |
| (3) गैर-वर्तमान देयताएं (पूंजी और दीर्घकालिक देयताएं) | (6) प्रस्तावित लाभांश  |

**1. वर्तमान संपत्ति:** "वर्तमान संपत्ति" शब्द एक क्षणिक प्रकृति के व्यवसाय की संपत्तियों का संदर्भ देता है जिसका उद्देश्य व्यवसाय संचालन के दौरान अलग-अलग रूप में पुनर्विक्रय या रूपांतरण के लिए किया जाता है। उदाहरण के लिए, कच्चे माल को खरीदा जाता है और व्यापार अवधि के अंत में अप्रयुक्त राशि स्टॉक के रूप में वर्तमान का हिस्सा बनती है। व्यापार अवधि के अंत में, प्रक्रिया में सामग्री और उसके प्रसंस्करण में किए गए श्रम भी मौजूदा संपत्ति का हिस्सा बनते हैं।

**2. गैर-चालू संपत्तियां (स्थायी संपत्ति):** गैर-चालू संपत्तियों को स्थायी संपत्ति या निश्चित संपत्ति के रूप में भी संदर्भित किया जाता है। परिसंपत्ति के इन वर्गों में मूर्त और अमूर्त प्रकृति के विशिष्ट मूल्य होते हैं और जो व्यापार और व्यापार के दौरान उपभोग नहीं होते हैं बल्कि बिक्री योग्य वस्तुओं के उत्पादन या सेवाओं को उपलब्ध कराने के साधन प्रदान करते हैं। भूमि और भवन, संयंत्र और मशीनरी, गुडविल और पेटेंट इत्यादि गैर-चालू संपत्तियों के कुछ उदाहरण हैं।

**3. वर्तमान देयताएं:** वर्तमान देयताएं शब्द व्यापार में वर्तमान भुगतान राशि का संदर्भ देता है। उनमें लेनदारों के कारण राशि, पुनर्भुगतान के लिए बैंक ऋण, प्रस्तावित लाभांश और भुगतान के लिए प्रस्तावित कर और देय खर्च, शामिल हैं।

**4. गैर-वर्तमान देयताएं:** गैर-वर्तमान देयताएं शब्द पूंजी और दीर्घकालिक ऋण का संदर्भ देता है। इसे स्थायी देयता भी कहा जाता है। लंबे समय तक देय, व्यवसाय के कारण कोई भी राशि, यानी, एक वर्ष के बाद गैर-वर्तमान देनदारियों के रूप में संदर्भित किया जाता है। बंधक आदि पर देनदारी, दीर्घकालिक ऋण, गैर-मौजूदा देनदारियों, कुछ उदाहरण हैं।

**5. कराधान के लिए प्रावधान:** कराधान के लिए प्रावधान, वर्तमान देयता या लाभ के विनियमन के रूप में माना जा सकता है। जब यह वर्ष के दौरान किया जाता है तो इसका शुद्ध लाभ समायोजित करने के लिए उपयोग नहीं किया जाता है, यह सलाह दी जाती है कि वह वर्तमान देयता के समान व्यवहार करे। वर्ष के दौरान भुगतान की गई किसी भी राशि को धन या गैर-वर्तमान देयता के रूप में माना जाना चाहिए। क्योंकि इसका उपयोग साल के दौरान किए गए शुद्ध लाभ को समायोजित करने के लिए किया जाता है।

6. प्रस्तावित लाभांश: कराधान के प्रावधान की तरह, इसे वर्तमान देयता और गैर-वर्तमान देयता के रूप में भी माना जाता है, जब लाभांश घोषित किया जा सकता है। और इस प्रकार, इसका उपयोग साल के दौरान किए गए शुद्ध लाभ को समायोजित करने के लिए नहीं किया जाएगा। यदि इसे विनियमन के रूप में माना जाता है, यानी, वर्ष के दौरान भुगतान किए जाने वाले लाभांश, तो यह एक गैर-वर्तमान देयता है।

7. वर्तमान संपत्तियों और वर्तमान देनदारियों के खिलाफ प्रावधान: बुरे और संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान, सूची पर हानि के प्रावधान, लेनदारों पर छूट के प्रावधान और निवेश के खिलाफ किए गए प्रावधान वर्ष के दौरान किए जाते हैं, इन्हें मौजूदा संपत्तियों के रूप में अलग से रेकार्ड किया जा सकता है या वर्तमान देनदारियां या परिसंपत्तियों या देनदारियों के संबंधित सकल मूल्य से इसे कम करें।

तालिका संख्या 1: एक कंपनी 'ए' के फंड प्रवाह विवरण

विवरण	2013-14	2012-13	2011-12	2010-11
निधियों का स्रोत:				
संचालन से नकद लाभ	195.87	146.05	179.10	154.72
निवेश में कमी	1.89	61.11	0.00	0.00
शेयर पूंजी में वृद्धि	1.66	0.00	0.00	0.00
शेयर में वृद्धि वारंट / बकाया	0.00	10.94	0.00	0.00
सुरक्षित ऋण में वृद्धि	0.00	52.86	0.00	0.00
असुरक्षित ऋण में वृद्धि	165.13	51.15	824.97	0.00
कार्यशील पूंजी में कमी	186.50	45.68	0.00	115.56
अन्य	211.92	164.75	233.11	149.80
कुल	762.97	532.55	1237.17	420.08

निधि का आवेदन:				
सकल ब्लॉक में वृद्धि	625.42	532.55	285.61	204.48
शेयर पूंजी में कमी	0.00	0.00	0.00	0.00
सुरक्षित ऋण में कमी	126.61	0.00	97.76	124.41
असुरक्षित ऋण में कमी	0.00	0.00	0.00	91.19
शेयर में कमी वारंट / बकाया	10.94	0.00	0.00	0.00

निवेश में वृद्धि	0.00	0.00	85.78	0.00
अंतरिम लाभांश भुगतान	0.00	0.00	0.00	0.00
इक्विटी लाभांश भुगतान	0.00	0.00	0.00	0.00
कॉर्पोरेट लाभांश कर भुगतान किया	0.00	0.00	0.00	0.00
कार्यशील पूंजी में वृद्धि	0.00	0.00	768.02	0.00
अन्य	0.00	0.00	0.00	0.00
कुल	762.97	532.55	1237.17	420.08

**विश्लेषण:**

उपरोक्त तालिका संख्या 1, 2010-11 से 2013-14 की अवधि के दौरान एक कंपनी 'ए' के फंड प्रवाह विवरण प्रस्तुत करती है। यह धन के दीर्घकालिक स्रोतों और कार्यशील पूंजी की मात्रा में परिवर्तनों के बारे में मूल्यवान जानकारी प्रदान करेगा। बयान का पहला हिस्सा धन के स्रोत दिखाता है। संचालन से लाभ अवधि के दौरान मिश्रित प्रवृत्ति दिखाता है। यह 2013-14 में 146.05 और 2013-14 में 195.87 के बीच है। कंपनी ने अवधि के पिछले दो वर्षों के दौरान निवेश बेचा है। 2013-14 में कंपनी ने अतिरिक्त शेयर पूंजी 1.66 करोड़ जारी की है। फिर से यह दिखाता है कि वर्ष 2012-13 में कंपनी ने 52.86 का सुरक्षित ऋण लिया है। वर्ष 2011-12, 2012-13 और 2013-14 में कंपनी ने असुरक्षित ऋण के रूप में बड़ी राशि उधार ली है। वर्ष 2010-11 की तुलना में 2011-12 में असुरक्षित ऋण में 824.97% की वृद्धि हुई। वर्ष 2010-11, 2012-13 और 2013-14 में कार्यशील पूंजी में राशि भी कम हुई थी। बयान का दूसरा हिस्सा धन का आवेदन दिखाता है। कंपनी ने वर्ष 2010-11, 2011-12, 2012-13 और 2013-14 में क्रमशः 204.48 करोड़ रुपये, 2,85.61 करोड़ रुपये, 532.55 करोड़ रुपये और 625.42 करोड़ रुपये की निश्चित संपत्तियां खरीदी हैं। यह अध्ययन अवधि के दौरान प्रगतिशील रुझान दिखाता है। वर्ष 2011-12 की तुलना में 2012-13 में निश्चित परिसंपत्तियों में 86.46% की वृद्धि हुई। कंपनी ने वर्ष 2010-11, 2011-12 और 2013-14 में सुरक्षित ऋण चुकाया है। वर्ष 2011-12 में कंपनी की कार्यकारी पूंजी 768.02 करोड़ रुपये की वृद्धि हुई थी। वर्ष 2011-12 में कंपनी ने निवेश में 85.78 करोड़ रुपये का निवेश किया है।

**कोष प्रवाह विवरण एवं रोकड़ प्रवाह विवरण में तुलना (Funds Flow Statement and Cash Flow Statement)**

‘कोष’ शब्द को विभिन्न अर्थों में लिया जाता है। संकुचित अर्थ में इसका आशय ‘रोकड़’ है, एवं रोकड़ आधार पर तैयार किया गया वित्तीय स्थिति में परिवर्तनों का विवरण ‘रोकड़ प्रवाह विवरण’ कहलाता है। सर्वाधिक प्रचलित अर्थ में, कोष शब्द का तात्पर्य कार्यशील पूंजी से लिया जाता है और इस आधार पर तैयार

किये गए वित्तीय स्थिति में परिवर्तनों के विवरण को 'कोष प्रवाह विवरण' कहते हैं। रोकड़ प्रवाह विवरण बहुत कुछ कोष प्रवाह विवरण के समान होता है क्योंकि ये दोनों ही एक व्यवसाय के वित्तीय स्थिति में होने वाले परिवर्तनों के कारणों को सारांश रूप में प्रस्तुत करने के लिए तैयार किये जाते हैं। फिर भी, कोष प्रवाह विवरण एवं रोकड़ प्रवाह विवरण में मुख्य अन्तर निम्नलिखित हैं:

### फंड फ्लो स्टेटमेंट और नकदी प्रवाह विवरण की तुलना

फंड फ्लो स्टेटमेंट	नकदी प्रवाह विवरण
1. यह विश्लेषण दो अवधि के बीच कार्यशील पूंजी निश्चित परिसंपत्तियों आदि में परिवर्तन दिखाता है	1. यह विश्लेषण दो अवधि के बीच नकद स्थिति में परिवर्तन दिखाता है।
2. धन में वृद्धि का मतलब हमेशा नकद में वृद्धि का मतलब नहीं है।	2. नकदी में वृद्धि हमेशा फंड में वृद्धि का मतलब है।
3. फंड प्रवाह विश्लेषण कंपनी के धन में समग्र परिवर्तन नोट करता है और हम व्यापार इकाई की समग्र स्थिरता तय कर सकते हैं।	3. नकदी प्रवाह विश्लेषण केवल नकद स्थिति में परिवर्तनों को नोट करता है और कोई भी इस विश्लेषण द्वारा कंपनी की स्थिरता को नहीं जानता
4. यह व्यापार की दीर्घकालिक स्थिरता का खुलासा करता है।	4. यह व्यापार की अल्पकालिक नकद स्थिति का खुलासा करता है।
5. प्रबंधन इस कथन की मदद से दीर्घकालिक प्रमुख निर्णय ले सकता है।	5. प्रबंधन केवल नकदी के संबंध में अल्पकालिक निर्णय ले सकता है।
6. इस विश्लेषण में नकद प्रवाह विश्लेषण शामिल है क्योंकि नकद कार्यशील पूंजी का हिस्सा है।	6. इस विश्लेषण में फंड प्रवाह विश्लेषण शामिल नहीं है क्योंकि इसमें केवल नकदी लेनदेन शामिल हैं।
7. मौजूदा परिसंपत्तियों में वृद्धि या मौजूदा ऋण में कमी होने पर कार्यशील पूंजी में बदलाव का बयान तैयार करते समय, कार्यशील पूंजी बढ़ जाती है।	7. वर्तमान परिसंपत्तियों में कमी या नकद प्रवाह विश्लेषण में मौजूदा ऋण में नकद में कमी का मतलब है।

#### 4.4 धन प्रवाह तथा आय विवरण में अंतर (Difference between Fund Flow and Income Statement)

नकदी प्रवाह का बयान, या नकदी प्रवाह का बयान, किसी कंपनी के नकदी के स्रोतों को मापता है और एक विशिष्ट समय अवधि में इसके नकदी के उपयोग करता है। आय वक्तव्य, या वित्तीय प्रदर्शन का बयान, किसी कंपनी के वित्तीय प्रदर्शन को मापता है, जैसे विशिष्ट अवधि के दौरान राजस्व, व्यय, मुनाफा या नुकसान। एक

नकदी प्रवाह का बयान दिखाता है कि किसी कंपनी ने कितना पैसा प्राप्त किया है और पारंपरिक रूप से एक महीने की अवधि में कितना खर्च किया है। यह वर्तमान ऑपरेटिंग परिणाम और बैलेंस शीट पर बदलावों को लेता है, जैसे खाता प्राप्त करने योग्य या खाते में देरी या घटती जाती है, और इसमें गैर-क्रास अकाउंटिंग शामिल नहीं है जैसे मूल्यहास और परिशोधन एक नकदी प्रवाह विवरण का उपयोग कंपनी की अल्पकालिक व्यवहार्यता और चलनिधि को निर्धारित करने के लिए किया जाता है, विशेष रूप से यह बिलों और विक्रेताओं को भुगतान करने के लिए कितनी अच्छी स्थिति में है।

एक आय स्टेटमेंट सबसे आम वित्तीय विवरण है और कंपनी के राजस्व को दर्शाता है; कुल खर्च, जिसमें गैर-धन लेखा शामिल है, जैसे मूल्यहास; और लाभ या हानि, परंपरागत रूप से एक महीने की अवधि में। एक आय स्टेटमेंट का उपयोग किसी कंपनी के वित्तीय प्रदर्शन को निर्धारित करने के लिए किया जाता है, विशेष रूप से यह कितना राजस्व करता है, कितना खर्च किया जाता है, और परिणामी लाभ या राजस्व और व्यय से नुकसान। नकदी प्रवाह का बयान शुद्ध लाभ द्वारा आय स्टेटमेंट से जुड़ा हुआ है। आय विवरण पर लाभ या जला तो आपरेशनों से नकदी प्रवाह की गणना करने के लिए उपयोग किया जाता है। इसे अप्रत्यक्ष विधि के रूप में संदर्भित किया जाता है। नकदी प्रवाह के बयान को तैयार करने के लिए प्रत्यक्ष विधि का भी उपयोग किया जा सकता है, जहां प्राप्त धन नेट नकदी प्रवाह की गणना करने के लिए खर्च किए गए धन से घटाया जाता है।

#### 4.5 क्या एक लेनदेन धन का प्रवाह होता है या नहीं जानने की प्रक्रिया (Procedure for knowing whether a Transaction results in the flow of Funds)

- (1) लेनदेन का विश्लेषण करें और शामिल दो खातों का पता लगाएं।
- (2) लेनदेन की जर्नल प्रविष्टि बनाओ।
- (3) यह निर्धारित करें कि लेनदेन में शामिल खाते वर्तमान या गैर-चालू हैं या नहीं।
- (4) यदि दोनों खाते शामिल हैं, यानी वर्तमान संपत्ति या वर्तमान देनदारियां हैं, तो इसका परिणाम धन का प्रवाह नहीं होता है।
- (5) यदि दोनों खाते शामिल हैं, तो वर्तमान में, या तो स्थायी संपत्ति या स्थायी देनदारियां हैं, फिर भी इसका परिणाम धन का प्रवाह नहीं होता है।
- (6) यदि शामिल खाते ऐसे हैं कि एक चालू खाता है जबकि दूसरा एक गैर-चालू खाता है, यानी, वर्तमान संपत्ति और स्थायी देयता, या वर्तमान संपत्ति और निश्चित संपत्ति, या वर्तमान देयता और निश्चित संपत्ति, या वर्तमान देयता और स्थायी देयता तो इसके परिणामस्वरूप धन के प्रवाह में परिवर्तन प्रत्यक्ष होता है।

**उदाहरण:**

(A) लेनदेन जो केवल वर्तमान खातों को शामिल करते हैं और इसलिए फंडों के प्रवाह में परिणाम नहीं देते हैं:

- |   |  |
|---|--|
| 1. देनदारों से एकत्रित नकद।                 | 6. बिल प्राप्तियां एकत्रित नकद।            |
| 2. लेनदारों को नकद भुगतान किया।             | 7. देय बिलों का भुगतान या निर्वहना।        |
| 3. व्यापार लेनदारों को देय बिल जारी किए गए। | 8. ग्राहकों से स्वीकृति प्राप्त की।        |
| 4. अल्पकालिक ऋण बढ़ाना।                     | 9. अस्थायी या विपणन योग्य निवेश की बिक्री। |
| 5. नकद या क्रेडिट के लिए खरीदे गए सामान।    | 10. उपरोक्त लेनदेन का विश्लेषण             |

(B) लेनदेन जो केवल गैर-चालू खातों को शामिल करते हैं और इसलिए फंडों के प्रवाह में परिणाम नहीं देते हैं:

1. दो पुरानी मशीनों के बदले खरीदी, एक नई मशीन।
2. भूमि के आदान-प्रदान में इमारत या फर्नीचर की खरीद।
3. शेयरों में डिबेंचरों का रूपांतरण।
4. डिबेंचर के बदले में वरीयता शेयरों का रिडेम्प्शन।
5. सामान्य भंडार, आदि में स्थानान्तरण।
6. शेयरों के रूप में बोनस का भुगतान।
7. शेयर, डिबेंचर, बॉन्ड या दीर्घकालिक ऋण के बदले में निश्चित परिसंपत्तियों की खरीद।
8. फर्जी संपत्तियों से लिखना।
9. जमा किए गए नुकसान या शेयर जारी करने पर छूट का लेखन आदि।

(C) लेनदेन जो वर्तमान और गैर-चालू दोनों खातों को शामिल करते हैं और इसलिए फंडों के प्रवाह में परिणाम:

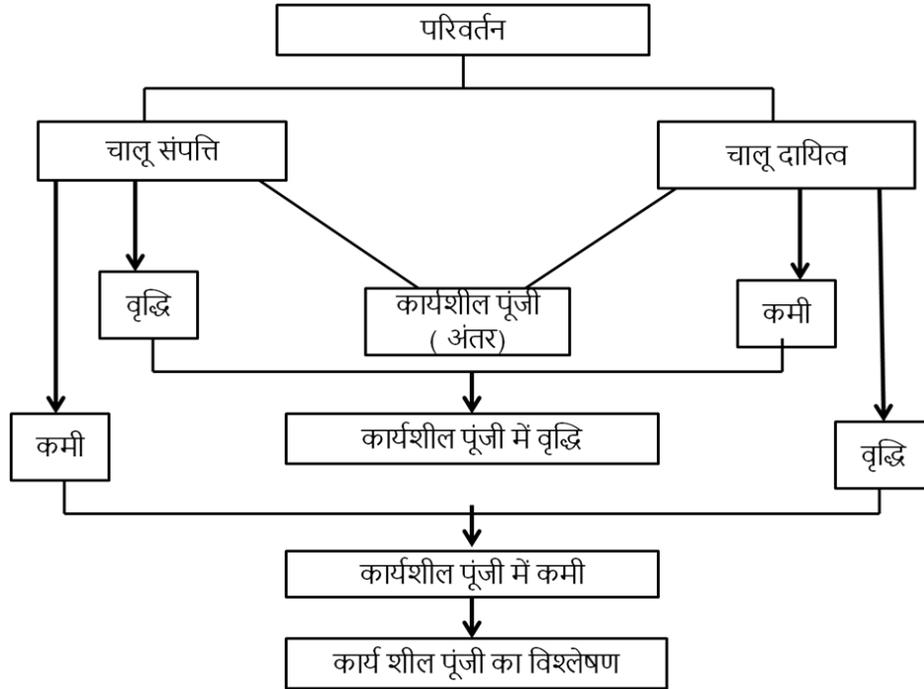
1. नकद के लिए शेयर जारी करना।
2. नकदी के लिए डिबेंचरों जारी करना।
3. दीर्घकालिक ऋण बढ़ाना।
4. नकद या क्रेडिट पर निश्चित संपत्तियों की बिक्री।
5. व्यापार निवेश की बिक्री।

6. वरीयता शेयरों का मोचन।
7. डिबेंचरों का मोचन।
8. नकदी या क्रेडिट पर निश्चित संपत्तियों की खरीद।
9. दीर्घकालिक / व्यापार निवेश की खरीद।
10. नकदी में बोनस का भुगतान।
11. दीर्घकालिक ऋण की चुकौती।
12. स्टॉक-इन-ट्रेड की खरीद के खिलाफ शेयर जारी करना।

मद	रुपये	मद	रुपये
निधियों का स्रोत		फंडों का आवेदन	
a) संचालन से फंड		a) संचालन में ऋण	
b) शेयर कैपिटल के मुद्दे		b) संरक्षित कैपिटल के पुनर्भुगतान	
c) डेबेंचर्स की आशंकाएं		c) डेबेंचर्स का रिडेम्पशन	
d) बॉन्ड के मुद्दे		d) बांडों का बहाव	
e) तय संपत्तियों की बिक्री		e) फिक्स्ड एसेट्स की खरीद	
f) लंबे समय तक ऋण की बिक्री		f) लंबे समय तक ऋण का बदला	
g) तय निवेश की बिक्री		g) लंबी अवधि के निवेश की खरीद	
h) गैर व्यापार प्राप्तियां		h) गैर व्यापार भुगतान	
i) कार्यशील पूंजी में कमी		i) कार्यशील पूंजी में वृद्धि	

#### 4.6 कार्यशील पूंजी में परिवर्तन की अनुसूची तैयार करने के लिए प्रक्रिया (Procedure for preparing Schedule of Changes in Working Capital)

चालू सम्पत्तियों का चालू दायित्वों पर आधिक्य कार्य शील पूंजी कहलाती है, चालू सम्पत्तियों में वृद्धि तथा चालू दायित्वों में कमी का परिणाम कार्यशील पूंजी में वृद्धि का संकेत है। जबकि चालू सम्पत्तियों में कमी तथा चालू दायित्वों में वृद्धि का परिणाम कार्यशील पूंजी में कमी का संकेतक है, जैसे:-



#### कार्यशील पूंजी में परिवर्तन की अनुसूची / वक्तव्य

एक बयान के रूप में प्रस्तुत किए गए दो अवधि के बीच वर्तमान प्रकृति के खातों में आये परिवर्तनों से संबंधित जानकारी देने वाली अनुसूची को, कार्यशील पूंजी में परिवर्तन का शेड्यूल/स्टेटमेंट कहते हैं।

#### कार्यशील पूंजी में बदलाव की अनुसूची / वक्तव्य तैयार करना

कार्यशील पूंजी में बदलावों के शेड्यूल/स्टेटमेंट की तैयारी करने के लिए हमें नीचे दिए गए प्रारूप में दो अवधि से संबंधित बैलेंस शीट के वर्तमान क्षेत्र से संबंधित जानकारी प्रस्तुत करना होगा और उनके भीतर परिवर्तन प्राप्त करना और प्रस्तुत करना होगा।

\_\_\_ से अवधि \_\_\_ के लिए कार्यशील पूंजी में परिवर्तन की अनुसूची / वक्तव्य

विवरण / खाता	31 मार्च को शेष राशि		कार्यशील पूंजी परिवर्तन	
	2016	2017	वृद्धि	कमी
<b>A) वर्तमान संपत्तियां</b>				
1) नकद शेष राशि	56,000	78,000	22,000	
2) बिल प्राप्त करने योग्य	5,75,000	8,25,000	2,50,000	
3) सुंदरी देनदार	9,15,000	12,25,000	3,10,000	
4) स्टॉक / सूची	9,48,000	12,00,000	2,52,000	
5) प्रीपेड व्यय	3,24,000	2,84,000		40,000
<b>कुल</b>	<b>28,18,000</b>	<b>36,12,000</b>	<b>8,34,000</b>	<b>40,000</b>
<b>B) मौजूदा देनदारियां</b>				
1) विविध लेनदारों	7,40,000	11,00,000		3,60,000
2) देय बिल	2,20,000	4,00,000		1,80,000
3) बैंक ओवरड्राफ्ट	2,81,000	2,50,000	31,000	
4) बकाया व्यय	1,23,000	1,00,000	23,000	
5) कराधान के लिए प्रावधान	2,38,000	3,00,000		62,000
6) लाभांश के लिए प्रावधान	1,98,000	2,50,000		52,000
7) खराब ऋण के लिए रिजर्व	18,000	12,000	6,000	
<b>कुल</b>	<b>18,18,000</b>	<b>24,12,000</b>	<b>60,000</b>	<b>6,72,000</b>
कार्यशील पूंजी [(a)-(b)]	10,00,000	12,00,000		
<b>कुल</b>			<b>8,94,000</b>	<b>6,94,000</b>
<b>कार्यशील पूंजी में शुद्ध परिवर्तन</b>			<b>2,00,000</b>	

## 4.7 सारांश

निधि प्रवाह स्टेटमेंट, काम के संचालन के अध्ययन और एक व्यवसाय की वित्तीय स्थिति के लिए आवश्यक है। फंड फ्लो स्टेटमेंट किसी संगठन के लिए न केवल उसके संचालन का प्रबंधन करने के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि संगठन के अन्य हितधारकों के लिए भी महत्वपूर्ण है। लाभ और हानि खाता लेखांकन अवधि के दौरान दर्ज वित्तीय लेनदेन की सीमित सीमा से संबंधित वित्तीय जानकारी प्रदान करता है और बैलेंस शीट में उठाए गए पूंजीगत ऋण या खरीदी गई संपत्ति से संबंधित जानकारी होती है। लाभ / हानि खाते और बैलेंस शीट के सभी उपलब्ध लाभों के साथ निधि प्रवाह स्टेटमेंट संगठनों को अल्पकालिक और दीर्घकालिक बाजार स्थितियों पर एक विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। एक नकदी प्रवाह का बयान दिखाता है कि किसी कंपनी ने कितना पैसा प्राप्त किया है और पारंपरिक रूप से एक महीने की अवधि में कितना खर्च किया है। यह वर्तमान ऑपरेटिंग परिणाम और बैलेंस शीट पर बदलावों को लेता है, जैसे खाता प्राप्त करने योग्य या खाते में देरी या घटती जाती है, और इसमें गैर-क्रास अकाउंटिंग शामिल नहीं है जैसे मूल्यहास और परिशोधन एक नकदी प्रवाह विवरण का उपयोग कंपनी की अल्पकालिक व्यवहार्यता और चलनिधि को निर्धारित करने के लिए किया जाता है, विशेष रूप से यह बिलों और विक्रेताओं को भुगतान करने के लिए कितनी अच्छी स्थिति में है। निधि प्रवाह स्टेटमेंट शेयरधारक के लिए किसी संगठन की दक्षता, तरलता और लाभप्रदता और इसके उपलब्ध संसाधनों और लाभांश, ब्याज, आदि का भुगतान करने की क्षमता का विश्लेषण करने के लिए भी महत्वपूर्ण है। बैंक और वित्तीय संस्थान हमेशा संगठन की तरलता और लाभ अर्जन क्षमता को जानने में रुचि रखते हैं, जो संगठन द्वारा स्रोत और अनुप्रयोग स्टेटमेंट का विश्लेषण करके संभव किया जाता है। निधि प्रवाह स्टेटमेंट, वित्तीय नियोजन और नियंत्रण के क्षेत्र में अनुसंधान करने के लिए अन्य पक्षों, जैसे कि शासन, प्रतियोगियों आदि की भी मदद करता है।

## 4.8 बोध प्रश्न

1. वित्तीय विवरण क्या है?
2. वित्तीय विवरण विश्लेषण क्या है?
3. विभिन्न प्रकार के वित्तीय विवरण विश्लेषण पर चर्चा करें।
4. वित्तीय विवरण विश्लेषण के विभिन्न तरीकों की व्याख्या करें।
5. फंड प्रवाह और नकद प्रवाह के बीच अंतर क्या हैं?
6. अनुपात विश्लेषण क्या है? इसके प्रकार बताओ।

#### 4.9 संदर्भ ग्रंथ

- D.R. Mehta, *Working Capital Management*, Prentice-Hall Inc., 1974.
- K.V. Smith, *Management of Working Capital*, McGraw-Hill, New York.
- Khan and Jain, *Financial Management*, Tata McGraw-Hill.
- Pandey, *Financial Management*, Vikas Annex. 54.J.3 -MBA - Finance - SDE Page 20 of 23.
- Prasanna Chandra, *Financial Management, Theory and Practice*, Tata McGraw-Hill.
- V.K. Bhalla, *Working Capital Management – Text and Cases*, Sixth Edition, Anmol Publications.

## इकाई – V: कार्यशील पूंजी प्रबंधन का परिचय

### इकाई की संरचना

5.1 उद्देश्य

5.2 प्रस्तावना

5.3 इन्वेंटरी के प्रकार तथा रखने की आवश्यकता

5.4 इन्वेंटरी नियंत्रण तकनीक

5.5 प्राप्य खातों को बनाए रखने की लागत

5.6 क्रेडिट नीतियों के निर्धारण

5.7 प्राप्तियों के आकार को प्रभावित करने वाले कारक

5.8 सारांश

5.9 बोध प्रश्न

5.10 संदर्भ ग्रंथ

### 5.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप निम्नलिखित को समझ सकेंगे:

- इन्वेंटरी की अवधारणा तथा इन्वेंटरी नियंत्रण तकनीक को ।
- क्रेडिट नीतियों के निर्धारण तथा प्राप्तियों के आकार को प्रभावित करने वाले कारकों को ।

## 5.2 प्रस्तावना

वस्तुसूची, इन्वेंटरी, स्टॉक, शेष माल या भंडार, खरीदे गए या असंबद्ध माल के उस हिस्से का प्रतिनिधित्व करती है जो लेखांकन अवधि के समाप्त होने पर अप्रयुक्त हो या बेचा ना गया हो। कोलिन्स इंग्लिश डिक्शनरी फॉर एडवांस्ड लर्नर्स के अनुसार, i) “इन्वेंट्री एक विशेष स्थान में सभी वस्तुओं की लिखित सूची है” और ii) एक इन्वेंट्री किसी चीज की आपूर्ति या स्टॉक है। इन्वेंट्री का इस्तेमाल कच्चे माल, निर्माण और तैयार माल की प्रक्रिया में विशेष समय पर वर्तमान स्टॉक को दर्शाने के लिए किया जाता है। एक विशेष अवधि के लिए सही आय का पता लगाने के लिए एवं लेखांकन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए, इन्वेंट्री गणना का प्राथमिक महत्व है। व्यापार के लाभ के निर्धारण में इन्वेंट्री गणना एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

## 5.3 इन्वेंटरी के प्रकार तथा रखने की आवश्यकता (Types and Need of holding Inventory)

### वस्तुसूची का वर्गीकरण (Types of Inventory):

वस्तुसूची को निम्नलिखित श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है:

**(ए) कच्चे माल की वस्तुसूची (Raw-material):** इसमें बुनियादी सामग्रियां शामिल हैं जो अभी तक विनिर्माण संस्था में उत्पादन के लिए प्रतिबद्ध नहीं हैं। निर्माण संगठनों के मामले में, उत्पादन प्रणाली में विभिन्न प्रकार के कच्चे माल का उपयोग किया जाता है। सुचारू उत्पादन कार्य सुनिश्चित करने और किसी भी प्रकार की उत्पादन देरी से बचने के लिए, संगठन को कच्चे माल की सूची रखने की आवश्यकता होती है।

**(बी) स्टोर और स्पेयर (Stores and Spares):** इसमें उन उत्पादों को शामिल किया गया है जो बिक्री के उद्देश्य के लिए उत्पादित मुख्य उत्पादों के सहायक उपकरण हैं। स्टोर्स और स्पेयर के उदाहरण बोल्ट, नट्स, क्लैप, शिफ्टर इत्यादि हैं। इन स्पेयर पार्ट्स को आम तौर पर बाहर से खरीदा जाता है।

**(सी) अर्धनिर्मित उत्पादन वस्तुसूची (Work-in-process inventory):** इसमें उन सामग्रियों को शामिल किया गया है जो उत्पादन प्रक्रिया के लिए प्रतिबद्ध हैं लेकिन पूरा नहीं हुए हैं। उत्पादन प्रक्रिया जितनी जटिल और लंबी होगी, अर्धनिर्मित उत्पादन वस्तुसूची विशाल होगी जिसमें अधिक निवेश करना पड़ता है।

**(डी) निर्मित माल वस्तुसूची (Finished goods inventory):** एक विशेष अवधि के दौरान सभी निर्मित सामान तुरंत नहीं बेचे जा सकते हैं। इस सामान को गोदाम में रखा जाता है। निर्मित माल वस्तुसूची का उद्देश्य उत्पादन और बिक्री कार्यों को अलग करना है ताकि बिक्री के पहले माल का उत्पादन करने के लिए दोहरी गणना न हो।

कार्यों के आधार पर, सूची को निम्नलिखित चार प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है:

**(i) लोट-साइज इन्वेंट्रीज़ (Lot-size inventory):** कुछ व्यवसायिक कंपनियां थोक में सामग्रियों को खरीदना पसंद करती हैं क्योंकि उन्हें थोक खरीद पर छूट मिलती है। बड़ी व्यावसायिक कंपनियां बड़ी मात्रा में खरीद सकती हैं। उनकी मांग की सटीक मात्रा में माल का उत्पादन आम तौर पर संभव और व्यावहारिक नहीं है। कुछ वस्तुएं जमा होती हैं। परिणामस्वरूप जमा की गई सूची को लॉट-साइज इन्वेंट्री के रूप में जाना जाता है।

**(ii) बाजारी अस्थिर में वस्तुसूचि (Inventory for Market Fluctuation):** मांग और आपूर्ति कारकों के कारण, कुछ वस्तुओं या कच्चे माल के लिए, बाजार में, उसकी मात्रा या कीमतों में उतार-चढ़ाव आ जाता है। यह उतार-चढ़ाव मूलतः कृषि उत्पादों में अधिकतर व्याप्त होता है। जब कच्चे माल की उपलब्धता मौसमी होती है, तो मांग की अस्थिरता बनी रहती है, जिसके कारण, स्टॉक बड़ी मात्रा में खरीदा जाता है ताकि उत्पादन प्रक्रिया में कोई बाधा न आये और समय पर माल का वितरण हो जाए। क्योंकि मांग समय के साथ उतार-चढ़ाव करती है और सटीक रूप से पूर्वानुमानित नहीं किया जा सकता है, इसलिए माल की कुछ मात्रा को, विपरीत परिस्थितियों में उपयोग के लिए, संशय किया जाता है। इस माल की सूचि को “सुरक्षा स्टॉक उतार-चढ़ाव सूची” कहा जाता है।

**(iii) मार्गस्थ माल सूची (Good-in-transit inventory):** कच्चे माल को उत्पादन की जगह से वितरण काउंटर तक ले जाया जाता है, क्योंकि पारगमन के दौरान माल की खपत या उपभोग नहीं किया जा सकता, अतः पारगमन में ये सामान या संसाधन परिवहन सूची का प्रतिनिधित्व करते हैं। कई बार व्यापार संगठनों के इन्वेंट्री मैनेजर, इन्वेंट्री लागत को कम करने की नीति का पालन करते समय, इन्वेंट्री की मात्रा को कम का समर्थन करता है, परन्तु इस नीति से स्टॉक-आउट, बैक-ऑर्डर, पेपर-वर्क, विशेष उत्पादन प्रक्रिया और उच्च लागत फास्ट-फ्रेट परिवहन बढ़ाती है, जिससे उत्पादन लगत बढ़ती है और लाभ घटता है।

**(iv) पूर्वानुमान सूची (Forecasted Inventory):** जब संस्था अपने माल की कीमत में वृद्धि की उम्मीद करती है, तो उसे इन्वेंट्री जमा करने की आवश्यकता होती है। कच्चे माल को, अर्द्ध तैयार माल के रूप में संग्रहीत किया जा सकता है या उनके मूल रूप में संग्रहीत किया जा सकता है। इन वस्तुओं को प्रत्याशित/पूर्वानुमान सूची के रूप में जाना जाता है।

### **वस्तुसूची के लिए आवश्यकता (Need of Inventory):**

एक व्यापारी को अपने व्यापार के दिन-प्रतिदिन के संचालन को आगे बढ़ाने के लिए **वस्तुसूची** की आवश्यकता होती है। जिस प्रकार व्यापार में विस्तार हो रहा है, उसी प्रकार इन्वेंट्री प्रबंधन भी जटिल हो गया है। व्यवसायी को अपनी दैनिक व्यावसायिक गतिविधियों का संचालन करने के लिए अधिक नकदी की आवश्यकता होती है। इसलिए स्टॉक की स्तर अधिक रखना से नकद के स्तर में कमी आती है।

व्यवसाय की विफलता के कई कारणों में, इन्वेंट्री की मात्रा का असंतुलन, एक बड़ा कारण है। व्यवसाय में बड़ी मात्रा में मौजूद इन्वेंट्री, स्वाभाविक रूप से चेतावनी अथवा खतरे का सूचक है। इन्वेंट्री की पर्याप्तता, इस बात पर निर्भर करती है कि संस्था इन्वेंट्री की मात्रा और नगद तरलता के बीच कैसे संतुलन स्थापित करता है। यदि संस्था, पहले से ही आवश्यक इन्वेंट्री को स्टॉक कर सकते हैं, तो वह, मशीनरी के निष्क्रिय समय और पुरुषों के निष्क्रिय समय की लागत को बचाने में सक्षम हो सकती है, जिससे माल बनाने की लागत कम हो सकती है और लाभ की संभावना बढ़ सकती है।

#### **वस्तुसूची की प्रकृति (Nature of Inventory):**

- 1. सुरक्षित भंडार सूची:** सुरक्षा सूची आपूर्ति में विफलताओं, मांग में अप्रत्याशित वृद्धि, यानी एक बीमा कवर प्रदान करता है।
- 2. अत्यधिक वस्तुसूची:** कभी-कभी प्रबंधन उन कारणों के लिए अत्यधिक इन्वेंट्री रखने के लिए मजबूर हो सकता है जो बाहरी हैं और इसके नियंत्रण से परे हैं। ऐसी इन्वेंट्री विलासिताका एहसास बनाये रखती है जिससे माल का दुरपयोग हो सकता है। बैंक को इसे प्रोत्साहित या बढ़ावा नहीं देना चाहिए।
- 3. सामान्य वस्तुसूची:** यह उत्पादन योजना और आपूर्ति के समय और आर्थिक आदेश मात्रा (economic order quantity) स्तर पर आधारित है। इसमें सुरक्षित भंडार का एक उचित कारक भी शामिल है।
- 4. प्लैबी वस्तुसूची:** इसमें खराब कामकाजी पूंजी प्रबंधन और अक्षम वितरण के कारण तैयार माल, कच्चे माल और भंडार शामिल होता है।
- 5. लाभार्जन वस्तुसूची:** यह कच्चे माल के स्टॉक का प्रतिनिधित्व करता है और स्टॉक लाभ को साकार करने के लिए तैयार सामानों का प्रतिनिधित्व करता है। इस तरह का भंडार कच्चे माल के साथ-साथ तैयार माल के उन सभी स्टॉक को शामिल करता है जो भंडार मुनाफे को साकार करने के लिए रखे जाते हैं। व्यापार के संचालन की पर्याप्तता के लिए लाभार्जन वस्तुसूची, जरूरी है।

#### **वस्तुसूची संचित करने के उद्देश्य (Purpose of Holding Inventory):**

वस्तुसूची रखने का निर्णय कुछ बुनियादी उद्देश्यों पर आधारित है। वस्तुसूची संचित करने के उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- 1. खोई हुई बिक्री से बचना के लिए:** यदि बिक्री के लिए तैयार माल को व्यवसाय में नहीं रखा जाता है, तो बिक्री के अवसर को चूकने की स्थिति हो सकती है, क्योंकि केवल कुछ ही ग्राहक सामानों की प्रतीक्षा करेंगे, वह भी केवल तब, जब सामान प्रतियोगियों के पास उपलब्ध न हो। दूसरे शब्दों में, ग्राहक की मांग पर आपूर्ति के लिए व्यवसाय को हमेशा भंडार रखना चाहिए।

2. **मात्रा छूट के लाभ के लिए:** कई आपूर्तिकर्ता हैं जो आपूर्ति की कीमतों को कम करते हैं, अगर खरीद थोक में की जाती है। यदि व्यवसाय बड़े ऑर्डर देता है, तो वह नियमित कीमतों पर भी छूट का लाभ उठा सकता है। इन छूटों से बिक्री की लागत कम होगी और सकल लाभ मार्जिन बढ़ेगा।
3. **आदेश लागत में कमी:** हर बार, जब व्यापार माल के लिए आदेश (order) देता है, तो उसे ऑर्डर पर खर्च उठाना पड़ता है। जिससे आदेश लागत कहा जाता है। प्रत्येक आदेश पर प्रसंस्करण लागत (processing cost) लगती है। जैसे कि प्रपत्रों को भरना और पूरा करना, अनुमोदन प्राप्त करना, आगमन के सामान पर माल का गिना जाना, निरीक्षण करना और स्वीकार करना, आदि शामिल हैं।
4. **सट्टा उद्देश्यों के लिए:** मुद्रास्फीति की स्थिति में, ऐसा हो सकता है कि स्टॉक का मूल्य उस दर पर बढ़ता है जो स्टॉक रखने की लागत से अधिक है। सट्टा उद्देश्यों के लिए स्टॉक रखने का उद्देश्य, स्टॉक रखने की लागत के मुकाबले मूल्य वृद्धि की अपेक्षाओं, पर निर्भर करेगा। यह इस बात पर भी निर्भर करेगा कि इसकी लागत में ब्याज या पूंजीगत लागत की प्रचुर बाजार दर, भंडारण की लागत, और गिरावट, आदि की लागत शामिल है।
5. **कुशल उत्पादन हासिल करना के लिए:** हर बार, उत्पादन के लिए, श्रमिकों और मशीनों को व्यवसाय द्वारा स्थापित किया जाता है और हर बार श्रमिकों और मशीनों को स्थापित करना के लिए लागत लगाई जाती है। जिससे स्थापना लागत (Set-up cost) भी कहा जाता है। बार-बार मशीन स्थापना में उच्च-लागत शामिल हो सकती है, लेकिन लंबे समय तक उत्पादन चलने से लागत कम होगी। व्यवसाय में हमेशा, विशेष समस्याओं को दूर करने के लिए, जैसे बिजली की कमी, परिवहन की बाधाएं, श्रम अशांति इत्यादि, को ध्यान में रखते हुए स्टॉक रखना अनिवार्य है।
6. **बढ़ती मांगों को पूरा करने के लिए:** मांग को पूरा करने के लिए स्टॉक आयोजित करने अति महत्वपूर्ण है। यह ध्यान रखना आवश्यक है कि मांग एक अप्रत्याशित तरीके से बदलती है, वास्तु की मांग में बदलाव, किसी भी व्यवसाय के नियंत्रण में नहीं होता है।

### वस्तुसूची प्रबंधन का अर्थ (Meaning of Inventory Management)

वस्तुसूची प्रबंधन, वस्तुसूची आदेश पर नज़र रखने और नियंत्रित करने का एक अभ्यास है, बिक्री के लिए तैयार माल के प्रबंधन, उपयोग और भंडारण में इसका बहुत महत्व है। यदि वस्तुसूची ठीक तरह से प्रबंधित नहीं होती है, तो इससे भंडारण लागत में वृद्धि हो सकती है, भंडारण लागत में वृद्धि करने में, कामकाजी पूंजी की कमी, श्रम संसाधनों की बर्बादी, निष्क्रिय समय में वृद्धि, आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान आदि अनेक कारण शामिल हैं। जिससे बिक्री और संतुष्ट ग्राहकों में कमी आती है। इसलिए, सूची प्रबंधन व्यवसाय का एक महत्वपूर्ण पहलू है जिसे अनदेखा नहीं किया जाना चाहिए और इसे ठीक से प्रबंधित किया जाना चाहिए।

## 5.4 इन्वेंटरी नियंत्रण तकनीक (Inventory Control Techniques)

कुशल सूची प्रबंधन में विभिन्न प्रकार के वस्तुसूची प्रबंधन तकनीकों का उपयोग किया जाता है , जो निम्नलिखित हैं:

**एबीसी विश्लेषण (ABC Analysis):** एबीसी विश्लेषण वस्तुसूचि की एक कुशल नियंत्रण पद्धति है। एबीसी विश्लेषण तकनीक में वस्तुओं को तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है जिन्हें “ए”, “बी”, और “सी” वर्ग में वर्गीकृत किया है। वस्तुसूचि की “ए” श्रेणी में आने वाला माल, बारीकी से नियंत्रित होते हैं क्योंकि इसमें उच्च मूल्य वाली वस्तुसूची होती है जो संख्या में कम हो सकती है लेकिन बहुत महंगी होती है। “बी” श्रेणी में आने वाला माल “ए” श्रेणी से अपेक्षाकृत कम महंगा होता है और इसीलिए “ए” श्रेणी की तुलना में, “बी” श्रेणी में आने वाला माल की संख्या मध्यम होती है तो नियंत्रण स्तर भी मध्यम होता है। “सी” श्रेणी में आने वाला माल की एक बड़ी संख्या होती है, परन्तु यह कम कीमत का माल होता है, इसलिए कम निवेश की आवश्यकता होती है, जिसके कारण इसके लिए नियंत्रण स्तर भी न्यूनतम होता है।

**जेआईटी विधि (Just-in-time):** इस विधि के अंतर्गत वस्तुसूची नियंत्रण में, कंपनी केवल उतनी ही वस्तुसूची रखती है जितनी इसे उत्पादन प्रक्रिया के दौरान आवश्यक होती है। जब सूची का पुराना स्टॉक एक निश्चित स्तर पर आ जाता है तो संस्था, वस्तुसूचि का नया आदेश देकर माल मंगवाती है और पुनः स्टॉक की मात्रा की समय पर पूर्ति करती है। इस विधि के माध्यम से संस्था, अतिरिक्त सूची रखने के साथ, भंडारण और बीमा की लागत को बचाती है। परन्तु यह वस्तुसूची प्रबंधन की एक जोखिम भरी विधि है क्योंकि नई सूची के आदेश में थोड़ी-सी भी देरी, स्थिति बिगाड़ सकती है और उत्पादन प्रक्रिया पर विपरीत असर डाल सकती है। इस प्रकार इस विधि को उचित नियोजन की आवश्यकता होती है ताकि नए आदेश समय पर रखा जा सके।

**सामग्री आवश्यकता योजना (Material Requirement Plan - MRP) विधि:** सामग्री आवश्यकता योजना के अंतर्गत निर्माता संस्थान, पूर्वानुमानित बिक्री के आधार पर वस्तुसूचि का आदेश जारी करता है। एमआरपी प्रणाली में कंपनी, विभिन्न क्षेत्रों से जानकारी एकीकृत करती है जहां वस्तुसूची का उपयोग किया जाता है। बाजार में जानकारी और मांग के आधार पर, नई वस्तुसूची के लिए आदेश जारी होता है।

**आर्थिक आदेश मात्रा (Economic Order Quantity - EOQ) मॉडल:** आर्थिक आदेश मात्रा तकनीक इस बात पर निर्णय लेने पर केंद्रित है कि कंपनी के आदेश में कितनी मात्रा में वस्तुसूची होनी चाहिए और उसका आदेश कब करना चाहिए। इस मॉडल में, न्यूनतम स्तर तक पहुंचने पर, सूची को फिर से व्यवस्थित किया जाता है। ईओक्यू मॉडल, आदेश देने के दौरान आदेश लागत और वहन लागत में संतुलन लाना में करता है। ईओक्यू मॉडल के साथ संगठन सूची की सही मात्रा रखने में सक्षम होता है।

**पुनः आदेश स्तर (Re-order point):** न्यूनतम सुरक्षित स्टॉक सूची का वह स्तर है जो एक संस्था स्टॉक में माल खत्म होने की स्थिति से बचने के लिए बनाए रखती है। यह वह स्तर है जिस पर मौजूदा सूची खत्म होने

से पहले ही नया आदेश जारी कर दिया जाता है। इस स्टॉक की मात्रा की गणना, नए माल के आने में लगने वाले समय और उस दौरान उत्पादन में माल की खपत को ध्यान में रखते हुए किया जाता है ताकि माल का नया आदेश जारी करने का बाद, उत्पादन प्रक्रिया में कोई रूकावट न आये।

**वेड विश्लेषण(Vital, Essential, Desirable -VED Analysis):** VED विश्लेषण का प्रत्येक अंग्रेजी अक्षर यानि की "व", "इ" और "ड" माल को, उत्पादन में आवश्यकता के अनुसार, महत्वपूर्ण (vital), आवश्यक (essential) और वांछनीय (desirable) वर्गों में विभाजित करता है। महत्वपूर्ण आवश्यक और वांछनीय के लिए खड़ा है। संस्था मुख्य रूप से वस्तुसूची के स्पेयर पार्ट्स को नियंत्रित करने के लिए इस तकनीक का उपयोग करते हैं। महत्वपूर्ण भागों (vital parts) के लिए उच्च स्तर की वस्तुसूची होना अनिवार्य है जो उत्पादन के लिए सबसे महत्वपूर्ण हैं, इसकी अनुपस्थिति उत्पादन को रोक सकती है। आवश्यक अतिरिक्त पूर्णों की अनुपस्थिति उत्पादन प्रक्रिया को धीमा कर सकती है, इसलिए ऐसी माल की वस्तुसूची को बनाए रखना आवश्यक है। इसी प्रकार, एक संस्था वांछनीय भागों के लिए निम्न स्तर की वस्तुसूची बनाए रख सकता है, जिनके न होने से उत्पादन प्रक्रिया में कोई रूकावट नहीं आती।

**तेज, धीमा और स्थिर विधि (Fast, Slow, Non-moving – FSN Analysis):** सूची नियंत्रण की यह विधि अशुभता को नियंत्रित करने के लिए बहुत उपयोगी है। वस्तुसूची के सभी आइटम एक ही क्रम में उपयोग नहीं किए जाते हैं; कुछ स्टॉक को अक्सर जरूरी होती है, जबकि कुछ की आवश्यकता नहीं होती है। तो यह विधि स्टॉक को तीन श्रेणियों में विभाजित करती है - तेजी से चलती माल सूची, धीमी गति से चलने वाली माल सूची और गैर-चलती माल सूची। सूची के उपयोग के आधार पर नई सूची के लिए आदेश रखा जाता है।

**वस्तुसूची संचित करने की लागत (Cost of holding inventory):**

वस्तुसूचीओं को संचित करने में बहुत लागत आती है। वस्तुसूची की लागत का बोझ पैसे के संदर्भ में व्यक्त किया जाता है। इन लागतों को निम्नलिखित में विभाजित किया गया है:

(i) **सामग्री की लागत:** ये कच्चे माल की खरीद की लागतें हैं और इसमें सभी प्रकार के परिवहन और माल उतारने-चढ़ाने की लागत शामिल हैं। इन लागतों में खरीदे गए सामानों की मात्रा पर ऑर्डर चूट और लिपिक लागत भी शामिल होती है। यह लागत, दो चरणों में सामग्री की लागत में शामिल की जाती है। पहले, जब सामग्री खरीदी और संग्रहित की जाती है, और दूसरी, जब माल, निर्मित माल में परिवर्तित हो जाता है। निर्मित माल को स्टोर करना आवश्यक होता है क्योंकि उत्पाद और खपत चक्र मूलतः कभी मेल नहीं खाते हैं।

(ii) **स्पोइलेज और अवलोकन की लागत:** यह स्टॉक में सामानों के नुकसान को संदर्भित करता है। लंबे समय तक संग्रहीत होने पर कोई भी उत्पाद या सामग्री खराब हो जाती है। खराब होने का जोखिम एक खुला जोखिम है। खराब होने की लागत को ध्यान में रखा जाना चाहिए। इसी प्रकार कुछ अतिरिक्त पूर्णों और मशीन

घटक अप्रचलित (जीर्ण-शीर्ण) भी लागत में शामिल हो सकते हैं यदि वे लंबे समय तक संग्रहीत होते हैं। यह तब होता है, जब तेजी से तकनीकी परिवर्तन होते हैं।

**(iii) ऑर्डर देने की लागत:** यह लागत फर्म के अंदर निर्मित कच्चे माल की खरीद के लिए बाहरी आपूर्तिकर्ताओं को आदेश (order) देने के लिए होती है। स्टॉक के प्रकार के आधार पर, यह लागत अलग-अलग हो सकती है। ऑर्डर देने की लागत में माल खरीदते समय लिपिक लागत और माल की प्राप्ति एवं निरीक्षण लागत शामिल होती है। लिपिकीय लागतों में क्रय आवश्यकता की तैयारी से संबंधित लागत, आदेश रखना, निरीक्षण करना और भंडारण करना शामिल है। इन्हें क्रय लागत कहा जाता है। यदि माल या घटक बाहर से नहीं खरीदा जाता है लेकिन आंतरिक रूप से निर्मित होता है, तो ऑर्डर करने की लागत में अनुसूची उत्पादन योजना से संबंधित लागत शामिल होती है। इन लागतों को सेट-अप लागत के रूप में जाना जाता है। यह याद रखना चाहिए कि आदेश की लागत का अनुमान हमेशा प्रति आदेश के आधार पर किया जाता है। साथ ही यह भी मान लिया जाता है कि आदेश की लागत, आदेश के आकार के बावजूद स्थिर रहती है। यानि कि आदेश में माल की मात्रा से, आदेश की लागत पर असर नहीं होता। आदेश की लागत, प्रति आदेश दर्ज पर की जाती है।

**(iv) रखाव लागत (वहन लागत):** जब आदेशित सामग्री प्राप्त होती है और निरीक्षण किया जाता है, तो इन्हें तुरंत बेचा नहीं जाता है या तैयार माल में परिवर्तित नहीं किया जाता है, बल्कि बाद में उपयोग के लिए संग्रहीत किया जाता है। सामग्री भंडारण पर किए गए खर्च को वहन लागत कहा जाता है। इन लागतों में स्टॉक में निवेशित पूंजी की लागत, गोदाम का किराया या मूल्यहास, बीमा, स्टोरकीपर का वेतन, अप्रचलन, अपव्यय आदि शामिल हैं। इन लागतों का अनुमान गोदाम में संचित स्टॉक के वास्तविक मूल्य के दिए गए प्रतिशत के आधार पर किया जाता है। यह लागत प्रति यूनिट पर तय की जाती है। वहन लागत की कुल लागत का पता लगाने के लिए, वर्ष के दौरान रखे गए औसत स्टॉक को लागत वहन करने की प्रति इकाई से गुणा किया जाता है।

**वस्तुसूची मूल्यांकन (Valuation of Inventory):** वस्तुसूची का मूल्यांकन करने के सामान्य अभ्यास विधियों को नीचे सूचीबद्ध किया गया है:

**(i) पहले अंदर, पहले बाहर (First in, First Out – FIFO):** सैद्धांतिक रूप से, यह माना जाता है कि जो सामग्री पहले प्राप्त की गई थी, पहले जारी की जाएगी। इस पद्धति में, पहले (सबसे पुराने) प्राप्त किए गए सामान को पहले इस्तेमाल किया जाता है। इसका मतलब यह है कि किसी भी समय सूची को हाल ही में अधिग्रहित वस्तुओं से युक्त माना जाता है, समापन स्टॉक को नवीनतम खरीद मूल्य पर मूल्य दिया जाता है। मुद्रास्फीति के दौरान, FIFO के परिणामस्वरूप वार्षिक शेष माल स्टॉक का अधिक मूल्यांकन होता है जिसके परिणाम स्वरूप लाभ का मूल्यांकन भी उच्च होता है। अपस्फीति के समय, इसके विपरीत वार्षिक शेष माल स्टॉक का कम मूल्यांकन होता है जिसके परिणाम स्वरूप लाभ का मूल्यांकन भी कम होता है।

(ii) **हाल अंदर, पहले बाहर (Last in, First Out – LIFO):** इसे आम तौर पर 'प्रतिस्थापन लागत' विधि कहा जाता है। यह विधि इस सिद्धांत पर आधारित है कि बेचे जाने वाले सामान हाल ही में खरीदे गए हैं। यह पहले अंदर, पहले बाहर विधि, से उलटा क्रम में काम करता है। इस विधि का मुख्य लाभ यह है कि सामग्रियों को लागत पर जारी किया जाता है और वर्तमान मूल्य स्तर के साथ जितना संभव हो सके निकट रहता है। मुद्रास्फीति और अपस्फीति के दौरान यह विधि स्तर के मुनाफे और घाटे में पड़ती है। मुद्रास्फीति के दौरान, LIFO के परिणामस्वरूप वार्षिक शेष माल स्टॉक का कम मूल्यांकन होता है जिसके परिणाम स्वरूप लाभ का मूल्यांकन भी कम होता है। अपस्फीति के समय, इसके विपरीत वार्षिक शेष माल स्टॉक का अधिक मूल्यांकन होता है जिसके परिणाम स्वरूप लाभ का मूल्यांकन भी उच्च होता है।

(iii) **सबसे अधिक, पहले बाहर (Highest in, First Out - HIFO) -** यह विधि इस धारणा पर आधारित है कि उच्चतम मूल्य वाली सामग्री पहले जारी की जाती है। इस विधि के अंतर्गत वार्षिक शेष स्टॉक के परिणामस्वरूप न्यूनतम संभव मूल्य पर रखा जा रहा है। यह मुद्रास्फीति के समय में गुप्त भंडार के निर्माण, का कारण होती है।

(iv) **बेस स्टॉक विधि (Base Stock Method):** यह विधि व्यापक रूप से मान्य करने के लिए है कि व्यापार को सुचारु रूप से चलने के लिए हर समय इन्वेंट्री की एक न्यूनतम मात्रा होनी चाहिए। इस विधि के अंतर्गत FIFO, LIFO या अन्य कोई भी वस्तुसूचि मूल्यांकन विधि के साथ, व्यावहारिक रूप से हमेशा न्यूनतम स्टॉक सूची बनाए रखने का प्रावधान होना चाहिए। जब आपात स्थिति उत्पन्न होती है, तो इसे जारी किया जाता है। यह विधि सकल लाभ में तीव्र उतार-चढ़ाव को कम करती है। यह विधि उन उद्योगों पर भी लागू होती है जहां विभिन्न कच्चे माल का उपयोग किया जाता है।

(vi) **औसत विधि (Average method):** विभिन्न प्रकार के औसत होते हैं, जैसे की साधारण औसत (simple average), भारित औसत (weighted average), आवधिक सरल औसत (periodic simple average) और आवधिक भारित औसत (periodic weighted average) सरल औसत विधि के तहत, सामग्री का वास्तविक लागत शुल्क नहीं लिया जाता है, लेकिन एक अनुमानित कीमत हो सकता है, की संख्या से कुल कीमतों को, विभाजित किया जाता है। भारित औसत विधि सरल औसत के समान है। हालांकि, प्रत्येक बार खरीद किए जाने पर भारित औसत की गणना की जाती है। पिछली कीमतों के प्रभाव को खत्म करने के लिए, कुल मात्रा और कुल लागत पर विचार किया जाता है। आवधिक सरल औसत सामान्य औसत मूल्य के समान ही है, सिवाय इसके कि इसे एक अवधि के दौरान सामान्य मूल्य की गणना की जाती है। इसकी गणना समय-समय पर कीमतों की संख्या से सामग्री की कुल कीमतों को विभाजित करके की जा सकती है। आवधिक भारित मूल्य की गणना कुल मात्रा में खरीदारियों की कुल लागत को विभाजित करके अवधि के अंत में की जाती है। कुल मात्रा और कुल लागत को शामिल करने के कारण यह विधि पिछले एक से अधिक सटीक है।

(vii) **मानक मूल्य विधि (standard cost method):** इस पद्धति के तहत, प्रत्येक सामग्री का मानक मूल्य तय किया जाता है और सभी मुद्दों को मानक मूल्य से बाहर कर दिया जाता है। मानक लागत का निर्धारण कई कारकों पर निर्भर करता है जैसे खरीदी जाने वाली सामग्री की मात्रा, जिसके परिणामस्वरूप थोक छूट, कीमतों से संबंधित बाजार की स्थिति आदि। इस प्रकार मानक मूल्य की तुलना वास्तविक मूल्य से की जाती है। जब इस विधि का पालन किया जाता है तो लाभ के आंकड़े अधिक यथार्थवादी होते हैं।

(viii) **विशिष्ट पहचान मूल्य (Specific Identification Price)** - इस पद्धति का उपयोग किया जाता है जहां सामग्री विशेष रूप से किसी विशेष ऑर्डर के लिए खरीदी जाती है। इसका उपयोग कार कंप्यूटर, वीडियो, जैसी उच्च लागत वाली वस्तुओं तक ही सीमित है।

### 5.5 प्राप्य खातों को बनाए रखने की लागत (Cost of maintaining Accounts receivables)

प्राप्य में देनदार और बिल प्राप्त करने वाले दोनों शामिल होते हैं। जिन ग्राहकों को माल/सेवाएं उधार प्रदान की जाती है और जिन्होंने लेखांकन अवधि के अंत तक राशि का भुगतान नहीं किया है, उन्हें देनदार, पुस्तक ऋण या प्राप्तियों कहा जाता है। वस्तुओं और सेवाओं की बिक्री, बिक्री स्तर को बनाए रखने और बिक्री की मात्रा बढ़ाने के लिए सबसे सरल उपकरण है।

प्राप्तियां गणना से संबंधित लागत निम्नानुसार हैं:

(1) **वित्तपोषण की लागत/ पूंजी लागत:** चूंकि ग्राहक को वस्तुओं/सेवाओं की बिक्री और उनसे प्राप्त भुगतान के बीच समय का अंतर है, जिसके परिणामस्वरूप बड़ी मात्रा में प्राप्य राशि अवरुद्ध होती है। लेकिन संस्था को अपनी देनदारियों जैसे कि लेनदारों, कर्मचारियों को भुगतान करने के लिए आंतरिक वित्तीय संसाधनों की व्यवस्था करनी होती है। प्रत्येक आंतरिक वित्तीय संसाधनों स्रोत में एक लागत शामिल होती है। यह प्राप्तियों में बंधे धन की अवसर लागत है, जो अन्यथा नहीं होती, अगर सभी बिक्री नकद में होती है। प्राप्य में निवेश की लागत के रूप में गणना की जाती है:

प्राप्तियों की लागत = प्राप्तियां X अवसर निवेश लागत

यहाँ,

प्राप्तियों में निवेश =  $(FC + VC) / \text{वर्ष में दिन} \times \text{DSO}$

कहाँ, FC = Fixed Cost/निश्चित लागत, VC = Variable Cost/परिवर्तनीय लागत और DSO = Days sales outstanding/दिन की बकाया बिक्री।

(2) **प्रशासनिक लागत:** उधार बिक्री के कारण उद्यम को व्यापक प्रशासनिक लागत वहन करना पड़ता है। ग्राहकों के खातों को बनाए रखने और ग्राहकों की क्रेडिट स्थिति की जांच करने के लिए अतिरिक्त कर्मचारियों की नियुक्ति की जाती है, जिसका मतलब है कि उद्यम के लिए अतिरिक्त वेतन, भत्ते और अन्य खर्च।

(3) **संग्रह लागत:** एक उद्यम को देनदार और बिल प्राप्तकर्ताओं से धन संग्रह के लिए कई खर्च उठाने पड़ते हैं, जैसे संग्रह कर्मचारियों का वेतन, नकद छूट, कानूनी व्यय, कमीशन, आदि।

(4) **विलंब लागत:** कभी-कभी ग्राहक की वित्तीय स्थिति "खराब" नहीं होती है लेकिन क्रेडिट बिक्री के भुगतान के प्रति "संदिग्ध" होती है, ऐसे ग्राहक नियत तारीख के बाद ही भुगतान करते हैं जिसकी वजह से पैसा नियत तारीख से भुगतान की तारीख तक अवरुद्ध हो जाता है और उद्यम को ऐसी अवधि के लिए निधियों की व्यवस्था करने में लागत लगाना पड़ता है।

(5) **खराब ऋण:** जब कोई ग्राहक सभी प्रकार के प्रयासों (कानूनी) को करने के बाद भी राशि का भुगतान करने में विफल रहता है, तो ऐसे ग्राहकों को खराब ऋण कहा जाता है। खराब ऋण घाटे की गणना बिक्री पर प्रतिशत के रूप में की जाती है जैसा कि नीचे समीकरण में दिखाया गया है:

**खराब ऋण नुकसान = वार्षिक क्रेडिट बिक्री × प्रतिशत डिफॉल्ट ग्राहक**

(6) **नकद छूट:** यह लागत, ग्राहक को अपने खातों के शुरुआती भुगतान के लिए प्रेरित करने के लिए की जाती है। एक संस्था औसत संग्रह अवधि, खराब ऋण हानि, और प्राप्तियों में निवेश की लागत को कम करने के लिए अपने ग्राहकों को नकद छूट प्रदान कर सकती है। छूट लागत नकद छूट प्रतिशत की गणना निम्न प्रकार से की जाती है:

**छूट लागत = वार्षिक उधार बिक्री × प्रतिशत नकदी छूट**

## 5.6 क्रेडिट नीतियों के निर्धारण (Formulation of credit policies)

प्राप्ति प्रबंधन में निम्नलिखित पहलुओं पर सावधानीपूर्वक विचार शामिल है:

1. उधार नीति का निर्धारण।
2. उधार नीति निष्पादित करना।
3. संग्रह नीति तैयार करना और निष्पादित करना।

**1. उधार नीति का निर्धारण:** प्राप्तियों के कुशल प्रबंधन के लिए, एक संस्था को उधार नीति अपनानी होगी। उधार नीति, उधार मानकों, उधार अवधि की अवधि, नकद छूट और छूट अवधि आदि जैसे निर्णयों से संबंधित है।

**(A) उधार मानकों के व्यापार खातों की गुणवत्ता:** बिक्री की मात्रा संस्था की क्रेडिट नीति से प्रभावित होती है। उदार नीति से उधार बिक्री की मात्रा में वृद्धि होगी जिसके परिणामस्वरूप मुनाफा बढ़ेगा। बिक्री की बढ़ी हुई मात्रा कुछ जोखिमों से भी जुड़ी होती है। इसके परिणामस्वरूप बढ़ी हुई लागत और खराब ऋण और रसीदी में देरी के जोखिम होंगे। ग्राहकों की संख्या में वृद्धि, अतिरिक्त खातों को बनाए रखने और ग्राहकों की उधार योग्यता के बारे में जानकारी एकत्रित करने के लिपिक कार्य में वृद्धि करेगी। कम योग्य ग्राहकों को उधार में विस्तार के कारण और अधिक, खराब-ऋण, नुकसान हो सकता है। आमतौर पर, इन ग्राहकों को भुगतान करने में अनुमति से अधिक समय लग सकता है जिसके परिणामस्वरूप प्राप्ति में अतिरिक्त पूंजी का गठन होता है। दूसरी तरफ, केवल उधार योग्य ग्राहकों को उधार बढ़ाने से खराब-ऋण घाटे, संग्रह लागत, जांच लागत इत्यादि जैसी लागतें बचाई जा सकती है। परन्तु, ऐसे ग्राहकों पर, उधार का प्रतिबंध, निश्चित रूप से बिक्री की मात्रा को कम करेगा, जिसके परिणामस्वरूप कम लाभ होगा। एक वित्त प्रबंधक का कार्य है कि वह, अतिरिक्त लागत के साथ बढ़े राजस्व के बीच में संतुलन बनाये रखें। उधार केवल उस स्तर तक उदारीकरण किया जाना चाहिए जहां वृद्धिशील राजस्व अतिरिक्त लागत से मेल खाता है, व्यापार खातों की गुणवत्ता का निर्णय लेते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि उधार सुविधाओं को केवल इस स्तर तक ही बढ़ाया जाना चाहिए। प्राप्ति में निवेश का इष्टतम स्तर वह होना चाहिए जहां लागत और लाभप्रदता के बीच एक संतुलन हो। दूसरी ओर, एक सख्त उधार नीति, संस्था में तरलता को बढ़ाती है। इस प्रकार, प्राप्ति में इष्टतम स्तर का निवेश उस बिंदु पर हासिल किया जाता है जहां लागत, लाभप्रदता और तरलता के बीच एक संतुलन स्थापित होता है।

**(B) उधार अवधि की कालावधि:** उधार अवधि या उधार अवधि की कालावधि का मतलब है कि भुगतान करने के लिए ग्राहकों को दी गई समय-सीमा। समय पर भुगतान करने वाले ग्राहकों को कुछ नकदी छूट की भी अनुमति दी जा सकती है। एक संस्था अपने ग्राहकों और बिक्री की मात्रा के आधार पर स्वयं की उधार नीतियाँ जारी कर सकता है। हालांकि, कई बार अन्य संस्थाओं के प्रतिस्पर्धी दबाव के कारण, समान उधार शर्तों का पालन करने के लिए, संस्था बाध्य होती है, अन्यथा ग्राहक ऐसी संस्था के प्रति आकर्षित हो जाते हैं जो उधार खरीद का भुगतान करने के लिए अधिक दिन की अनुमति देता है। कभी-कभी मौजूदा ग्राहकों की बिक्री बढ़ाने और नए ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए अधिक उधार अवधि की अनुमति देना पड़ती है। उधार अवधि की समय-सीमा और छूट की मात्रा, प्राप्ति में निवेश के परिमाण को निर्धारित करती है।

**(C) नकद छूट:** प्राप्ति के संग्रह में तेजी लाने के लिए नकद छूट की अनुमति दी जाती है, तभी संस्था, नकद छूट के कारण त्वरित संग्रह से प्राप्त अतिरिक्त धन का उपयोग करने में सक्षम होती है। छूट में, लागत शामिल होती है। छूट केवल तभी दी जानी चाहिए जब उसकी लागत, कमाये गए अतिरिक्त धन से कम हो। यदि धन लाभप्रद रूप से नियोजित नहीं किया जा सकता है तो छूट की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।

**(D) छूट अवधि:** प्राप्तियों का संग्रह, छूट का लाभ उठाने के लिए, अनुमत अवधि से प्रभावित होता है। इस सुविधा के लिए, दी गई अवधि अनुमति से पहले भुगतान करने से छूट का लाभ मिलता है, जो ग्राहकों को छूट का लाभ उठाने और भुगतान करने के लिए प्रेरित करता है, और जिससे प्राप्तियों से अतिरिक्त धन मिल सकेगा, जिसका वैकल्पिक रूप से उपयोग किया जा सकेगा। दूसरी ओर, छूट अवधि के विस्तार के परिणामस्वरूप धनराशि का देर से संग्रह होगा क्योंकि जो लोग छूट प्राप्त कर रहे थे और पिछले अनुसूची के अनुसार भुगतान कर रहे थे, वे भी उनके भुगतान में देरी करेंगे।

**2. उधार नीति निष्पादित करना:** उधार नीतियाँ तैयार करने के बाद, इसका उचित निष्पादन बहुत महत्वपूर्ण है। उधार अनुप्रयोगों का मूल्यांकन और ग्राहकों की उधार योग्यता का पता लगाना चाहिए।

**(A) क्रेडिट जानकारी एकत्रित करना:** उधार नीति लागू करने का पहला कदम, ग्राहकों की उधार योग्यता की जानकारी एकत्र करना होगा। यह जानकारी पर्याप्त होनी चाहिए ताकि ग्राहकों की वित्तीय स्थिति के बारे में उचित विश्लेषण संभव हो। इस प्रकार की जांच केवल एक निश्चित सीमा तक की जा सकती है क्योंकि इसमें लागत शामिल होती है।

जिन स्रोतों से उधार योग्यता की जानकारी उपलब्ध होगी, उनका पता लगाया जाना चाहिए। यह जानकारी, वित्तीय विवरण, उधार योग्यता की रेटिंग एजेंसियों, बैंकों का प्रतिवेदन, फर्म के अभिलेख इत्यादि से उपलब्ध हो सकती है, जोकि कई वर्षों तक ग्राहक की वित्तीय प्रतिवेदन, वित्तीय स्थिति और लाभप्रदता स्थिति निर्धारित करने में सहायक होगी। बैलेंस शीट, ग्राहक-संस्था की अल्पकालिक और दीर्घकालिक स्थिति को जानने में मदद करेगी। आय विवरण, ब्याज की लाभप्रद स्थिति दिखाएंगे। तरलता की स्थिति और वर्तमान संपत्ति का मूल्यांकन, मौजूदा वित्तीय स्थिति को जानने में मदद करेगा। वित्तीय विवरणों का उचित विश्लेषण ग्राहकों की उधार योग्यता निर्धारित करने में सहायक होगा। उधार योग्यता की रेटिंग एजेंसियाँ हैं, जो विभिन्न ग्राहक-संस्थाओं के बारे में जानकारी प्रदान कर सकती हैं। ये एजेंसियाँ नियमित रूप से विभिन्न स्रोतों से व्यावसायिक इकाइयों के बारे में जानकारी एकत्र करती हैं और इस जानकारी को अद्यतित रखती हैं। यह जानकारी गोपनीय रखी जाती है और जब आवश्यक हो तो इसका उपयोग किया जा सकता है।

उधार योग्यता की जानकारी बैंकों से भी उपलब्ध हो सकती है। बैंकों के पास ग्राहक की वित्तीय स्थिति का विश्लेषण करने के लिए उनके विशिष्ट विभाग होते हैं।

पुराने ग्राहकों के मामले में, व्यवसाय के अपने अभिलेख उनके उधार योग्यता को जानने में मदद कर सकते हैं। भुगतान की आवृत्ति, नकदी छूट का लाभ, देय भुगतान पर भुगतान ब्याज आदि उधार की गुणवत्ता के बारे में राय बनाने में मदद कर सकता है।

**(B) उधार विश्लेषण:** आवश्यक जानकारी एकत्र करने के बाद, वित्त प्रबंधक को संभावित ग्राहकों की उधार योग्यता का पता लगाने के लिए इसका विश्लेषण करना चाहिए और यह भी देखना चाहिए कि वे संस्था के मानकों को पूरा करते हैं या नहीं। उधार विश्लेषण, खाते से जुड़े जोखिम के स्तर, ग्राहक की उधार क्षमता और भुगतान करने की इच्छा, को निर्धारित करने के लिए ज़रूरी है।

**(C) उधार निर्णय:** ग्राहक की उधार योग्यता का विश्लेषण करने के बाद, वित्त प्रबंधक को यह निर्णय लेना पड़ता है कि क्या उधार अवधि या मात्रा को बढ़ाया जाना चाहिए या नहीं, और यदि हां तो किस स्तर तक। वह संस्था के उधार मानकों के साथ, ग्राहक की उधार योग्यता से कितना मेल खाता है। यदि ग्राहक की उधार योग्यता, संस्था के उधार मानकों से ऊपर है तो निर्णय लेने में कोई समस्या नहीं है। यह आसान फैसले है, जिसमें उधार बढ़ाने का लाभ की, संभावित खराब ऋण घाटे से तुलना की जानी चाहिए और फिर निर्णय लिया जाना चाहिए। यदि ग्राहक, संस्था के उधार मानकों से नीचे हैं तो उन्हें पूरी तरह से मना कर दिया जाना चाहिए। इसके बजाय उन्हें कुछ वैकल्पिक सुविधाएं दी जानी चाहिए, जैसे की माल प्राप्त करने पर उसका भुगतान, बैंक चालान के माध्यम से भेजे जा सकते हैं। इस तरह की वैकल्पिक सुविधाएं, वर्तमान में ग्राहकों को बनाए रखने में मदद करती है और उनके लेन-देन की प्रकृति की समीक्षा करने में मदद कर सकते हैं।

**(D) प्राप्तिां और आढ़त में निवेश वित्तपोषण:** लेखा प्राप्तिां कार्यशील पूंजी के एक हिस्से को अवरुद्ध करती हैं। प्रयास किए जाने चाहिए कि लंबी अवधि के लिए प्राप्तिां में धन बंधे नहीं हैं। वित्त प्रबंधक को, प्राप्तिां वित्त पोषित करने के प्रयास करना चाहिए ताकि कामकाजी पूंजी की जरूरतों को समय पर पूरा किया जा सके। प्राप्तिां की गुणवत्ता, ऋण की राशि को निर्धारित करता है। बैंक केवल भरोसेमंद दलों के प्राप्य स्वीकार करती है। प्राप्य के बदले धन प्राप्त करने का एक अन्य तरीका यह भी है की, बैंक को पूरा प्राप्य बेच दिया जाए।

बैंक, छूट की राशि को प्राप्य की मूल राशि से घटाकर, प्राप्य बेचने वाली संस्था को बाकि रकम का भुगतान कर देगा, और प्राप्य की अवधि पूरी होने पर, ग्राहक से प्राप्य की पूरी राशि वसूल लेगा। यहां भी, बैंक केवल गुणवत्ता प्राप्तिां पर जोर देता है। बैंकों के अलावा, अन्य एजेंसियां भी है जो प्राप्तिां खरीदती हैं और उनके लिए नकद भुगतान करती हैं। यह सुविधा आढ़त (factoring) के रूप में जाना जाता है। आढ़त, वसूली-अधिकार के साथ या उसके बिना भी हो सकती है। यदि आढ़त, वसूली-अधिकार के बिना है, तो कारक (यानि की प्राप्य खरीदने वाला बैंक या अन्य संस्था) द्वारा खराब ऋण नुकसान उठाया जाएगा, लेकिन यदि यह वसूली-अधिकार के साथ है तो विक्रेता (यानि की प्राप्य बेचने वाली संस्था) से खराब ऋण नुकसान, वसूल किया जाएगा।

आढ़त, एक संग्रह और वित्त सेवा है, जो बिक्री चालानों को तैयार नकद में परिवर्तित करके विक्रेताओं की नकद प्रवाह स्थिति में सुधार के लिए तैयार की गई है। आढ़त की प्रक्रिया को निम्नानुसार समझाया जा सकता है:

1. विक्रेता संस्था और कारक संस्था के बीच एक समझौते के तहत, उत्तरार्द्ध संभावित ग्राहकों की उधार योग्यता का मूल्यांकन करता है और विभिन्न ग्राहकों के लिए उधार सीमा और उधार अवधि भी निर्धारित करता है।
2. बिक्री दस्तावेजों में संग्रह के लिए ज़िम्मेदार कारक को सीधे भुगतान करने के निर्देश होता है।
3. जब देय तिथि पर कारक द्वारा भुगतान प्राप्त होता है तो कारक अपनी फीस, शुल्क इत्यादि प्राप्य की मूल राशि से घटाकर, शेष राशि विक्रेता संस्था के खातों में जमा करेगा।
4. कुछ मामलों में, यदि सहमत हो तो कारक संस्था, विक्रेता संस्था को बेचने के लिए अग्रिम वित्त भी प्रदान कर सकती है जिसके लिए वह विक्रेता संस्था से प्रभार ले सकती है। आदत, केवल बिल छूट से कुछ अधिक होता है, क्योंकि इसमें, पूर्व में ग्राहक की उधार योग्यता का विश्लेषण भी शामिल होता है। कारक संस्था, बिक्री पर प्रभावी रूप से विक्रेता संस्था को बिक्री के पूरे या पर्याप्त हिस्से का भुगतान कर सकता है। यदि कोई शेष राशि हो तो, सामान्य देय तिथि पर उसका भुगतान किया जा सकता है।
5. **आदत के लाभ और लागत निम्नलिखित हो सकते हैं:**
  - बेहतर नकदी प्रवाह
  - बेहतर संपत्ति प्रबंधन
  - बेहतर कार्यशील पूंजी प्रबंधन
  - बेहतर प्रशासन
  - बेहतर मूल्यांकन
  - बेहतर जोखिम प्रबंधन

हालांकि, आदत में कुछ मौद्रिक और गैर मौद्रिक लागत शामिल होती है, जैसे कि:

#### मौद्रिक लागत

- A) कारक संस्था, प्राप्तियों के संग्रह के लिए पर्याप्त शुल्क और कमीशन शुल्क लेता है। इसमें शामिल राशि के संदर्भ में कभी-कभी ये शुल्क बहुत अधिक हो सकते हैं।
- B) कारक संस्था, द्वारा प्रदान किया गया अग्रिम वित्त, ब्याज की सामान्य दर से अधिक ब्याज दर लागत पर उपलब्ध होता है।

#### गैर मौद्रिक लागत

- A) ग्राहक की उधार योग्यता के मूल्यांकन करने वाली कारक संस्था, मुख्य रूप से देरी और चूक के जोखिम को कम करने के लिए चिंतित होती है, अतः इस प्रक्रिया में यह बिक्री वृद्धि पहलू को देख सकता है।

B) वास्तव में, एक कारक संस्था, ग्राहक के लिए तीसरी पार्टी है, जो इससे निपटने में सहज महसूस नहीं कर सकता है।

C) प्राप्तियों के आढ़त को वित्तीय कमजोरी का लक्षण माना जा सकता है।

### भारत में आढ़त

भारत में आढ़त हाल ही की उत्पत्ति है। भारत में आढ़त सेवाओं की व्यवहार्यता का अध्ययन करने के लिए, भारतीय रिजर्व बैंक ने आढ़त सेवाओं की शुरूआत की जांच के लिए एक अध्ययन समूह गठित किया, जिसने 1988 में अपनी रिपोर्ट जमा की। इस अध्ययन समूह की सिफारिशों के आधार पर, आरबीआई (RBI) ने ऐसे विशिष्ट दिशानिर्देशों को जारी किए जिससे बैंकों को उनकी सहायक कंपनियों के माध्यम से भारत में आढ़त शुरू करने के लिए अनुमति प्रदान की गई। इसके लिए देश को चार जोनों में बांटा गया है। भारत में आढ़त अभी भी बहुत आम नहीं है। पहला कारक यानी एसबीआई फैक्टर एंड कमर्शियल सर्विसेज लिमिटेड ने अप्रैल 1991 में काम करना शुरू कर दिया था। आढ़त के विनियमन के लिए दिशानिर्देश इस प्रकार हैं:

- (1) एक कारक संस्था को भारतीय रिजर्व बैंक से अनुमोदन की आवश्यकता होती है।
- (2) एक कारक संस्था आढ़त व्यवसाय या अन्य आकस्मिक गतिविधियों का आयोजन कर सकती है।
- (3) आढ़त में लगे अन्य संस्थानों या संस्थानों के वित्तपोषण में एक कारक संस्था शामिल नहीं होगी।

**3. संग्रह नीति तैयार करना और निष्पादित करना:** प्राप्य प्रबंधन का एक अन्य पहलू संग्रह नीति से संबंधित है जो मूल रूप से क्रेडिट अवधि के भीतर नहीं भुगताये खातों को जोड़ने की प्रक्रिया से संबंधित है। संग्रह नीति दो प्रकार की होती है: (A) सख्त, और (B) उदार

(A) सख्त संग्रह नीति: सख्त संग्रह नीति में संग्रह पर अधिक प्रयास शामिल होंगे। इस तरह की नीति में सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव दोनों होते हैं। यह नीति बकाया राशि के प्रारंभिक संग्रह को सक्षम करेगी और खराब ऋण घाटे को कम करेगी। एकत्रित धन का उपयोग अन्य उद्देश्यों के लिए किया जाएगा और संस्था का लाभ बढ़ जाएगा। सख्त संग्रह नीति में संग्रह लागत में वृद्धि शामिल होगी। यह बिक्री की मात्रा को भी कम कर सकता है।

(B) उदार संग्रह नीति: एक उदार संग्रह नीति, ऋण संग्रह अवधि और अधिक खराब ऋण घाटे में वृद्धि कर सकती है। कोई भी ग्राहक लंबे समय तक बकाया राशि को रोक नहीं सकता है, वह अपने आदेश को तब तक नहीं दोहरा सकता है जब तक उसने पहले देय राशि का भुगतान न कर दिया हो। इस प्रकार, इस नीति का उद्देश्य बकाया राशि एकत्र करना है और ग्राहक को परेशान नहीं करना है।

परन्तु प्रश्न यह है कि यदि ग्राहक स्थापित उधार अवधि के भीतर भुगतान नहीं करते हैं, तो उद्यम को क्या करना चाहिए? उद्यम को कुछ प्रयास कर, प्राप्तियों को इकट्ठा करने की संभावनाओं का आकलन करना चाहिए। किस प्रकार के प्रयास किए जाने चाहिए और उसमें कितना विस्तार करना चाहिए, यह वास्तव में, संग्रह नीति से संबंधित मुद्दों है।

(i) संग्रह प्रयासों के प्रकार: उन ग्राहकों से भुगतान लेने के लिए कुछ प्रयास किए जाते हैं जो दिए गए समय के भीतर भुगतान नहीं करते हैं। एक अच्छी संग्रह नीति को हमेशा, शीघ्र कार्रवाई और प्रयासों के बारे में स्पष्ट निर्देश देना चाहिए। इनमें अनुस्मारक पत्र, टेलीफोन कॉल, संग्रह एजेंसियों की व्यक्तिगत दौरा और अंत में कानूनी कार्रवाई शामिल हो सकती है।

(ii) संग्रह प्रयासों का स्तर: संग्रह प्रयासों का स्तर, उस नीति को संदर्भित करती है जिसे उधार नीति को अपनाया जा सकता है, चाहे वह रूढ़िवादी हो या आक्रामक। नीति की प्रकृति लाभ के साथ-साथ लागत को भी प्रभावित करती है। नीति ऐसी होना चाहिए जो लाभ और लागत दोनों के बीच संतुलन बनाए रखे।

## 5.7 प्राप्तियों के आकार को प्रभावित करने वाले कारक (Factors influencing size of receivables)

बिक्री के अलावा, कई अन्य कारक प्राप्तियों के आकार को भी प्रभावित करते हैं। निम्नलिखित कारक सीधे और अप्रत्यक्ष रूप से प्राप्तियों के आकार को प्रभावित करते हैं।

यह मुख्यता दो प्रकार के होते हैं: अ) सामान्य कारक, ब) विशिष्ट कारक।

**(अ) सामान्य कारक:** इनमें वे सभी कारक शामिल हैं जो व्यापार के किसी भी मामले में प्रत्येक परिसंपत्ति के निवेश निर्णय को प्रभावित करते हैं, जैसे कि प्रकृति और व्यवसाय का रूप, प्रबंधन दृष्टिकोण, आर्थिक स्थिति, मुद्रास्फीति, धन की उपलब्धता, आदि। ये कारक बेकाबू होते हैं और उनका प्रभाव दीर्घकालिक होता है।

**(ब) विशिष्ट कारक:** ये कारक नियंत्रणीय होते हैं और उनका प्रभाव अल्पकालिक होता है। ये कारक निम्नानुसार वर्गीकृत किया जाता है:

**(1) उधार बिक्री का स्तर:** यदि अन्य चीजें समान रहती हैं, तो बिल प्राप्ति निवेश के स्तर और उधार बिक्री की मात्रा मात्रा में के बीच प्रत्यक्ष सकारात्मक संबंध होता है, इसका मतलब है की जब उदार बिक्री बढ़ेगी तो बिल प्राप्ति निवेश का स्तर भी बढ़ेगा और जब उदार बिक्री घटेगी तो बिल प्राप्ति निवेश का स्तर भी घटेगा।

**(2) उधार की अवधि:** बिल प्राप्तियों में निवेश, उद्यम की उधार शर्तों से प्रभावित होता है। उदार क्रेडिट नीति के तहत, ग्राहक को आसान शर्तों पर सामान खरीदने का अवसर मिलता है, जो बिक्री को बढ़ाता है लेकिन

प्राप्य में निवेश को भी बढ़ाता है। सख्त क्रेडिट नीति अपनाए जाने की स्थिति में, उदार क्रेडिट नीति के विपरीत स्थिति होगी।

(3) **बिक्री की शर्तें:** बिक्री की शर्तें प्राप्तियों में निवेश के स्तर को बहुत प्रभावित करती हैं। यदि व्यवसाय केवल नकद पर बेचने का फैसला करता है, तो कोई प्राप्य राशि नहीं होगी और प्राप्य में कोई निवेश भी नहीं होगा।

(4) **बिक्री की स्थिरता:** मौसमी व्यवसाय के मामले में, विशेष मौसम के दौरान प्राप्य में निवेश बढ़ जाता है। अन्य मामलों में, यदि बिक्री स्थिर है, तो प्राप्य में निवेश के स्तर में कोई उतार-चढ़ाव नहीं देखा जाएगा।

#### **प्राप्ति प्रबंधन के अर्थ और उद्देश्य (Meaning and objectives of Receivables Management):**

प्राप्ति प्रबंधन व्यापार देनदारों में निवेश से संबंधित निर्णय लेने की प्रक्रिया है। एक उद्यम की बिक्री और मुनाफे में वृद्धि के लिए प्राप्तियों में कुछ निवेश आवश्यक है। लेकिन साथ ही इस संपत्ति में निवेश की लागत के विषय में विचार करना आवश्यक है। इसके अलावा, प्राप्ति निवेश में, हमेशा बुरा ऋण का खतरा भी होता है। इस प्रकार, प्राप्तकर्ता प्रबंधन का उद्देश्य देनदारों/ प्राप्ति पत्र में निवेश, के संबंध में एक अच्छा निर्णय लेना है। बोल्टन, एस. ई. के शब्दों में, प्राप्य प्रबंधन का उद्देश्य "बिक्री और मुनाफे को बढ़ावा देना है जब तक कि बिक्री उस बिंदु तक नहीं पहुंच जाती जहां प्राप्तियों के निवेश पर वापसी उस अतिरिक्त उधार को वित्त पोषित करने के लिए उठाए गए धन की लागत से कम है।"

## **5.8 सारांश**

वास्तुसूची प्रबंधन निवेश पर उचित वापसी की अनुमति देने के लिए, एक छोटे से पर्याप्त भण्डार मात्रा को रखने के साथ-साथ उत्पाद को एक ही समय में बाहर आने से बचने के लिए पर्याप्त रखने के बारे में चिंतित है। सूची प्रबंधन के साथ एक बड़ी समस्या यह है कि निगम के उत्पाद की मांग स्तर अनिश्चित होती है। इसकी उत्पादन प्रक्रिया में उपयोग की जाने वाली कच्ची सामग्री की आपूर्ति कुछ हद तक अनिश्चित है। लागतों पर व्यय, एक निश्चित अवधि के लिए वास्तुसूची की सभी लागतों का अनुमान करता है। वे प्रति यूनिट या प्रति अवधि मूल्य के प्रतिशत के रूप में व्यक्त किए जाते हैं।

आर्थिक आदेश मात्रा मॉडल (EOQ) मानता है कि किसी सामान की सूची को भरने के आदेश तत्काल भर जाते हैं; अतः इसमें समय-सीमा शून्य होती है। अभ्यास में, हालांकि, जब एक खरीद आदेश रखा जाता है और जब आइटम वास्तव में भण्डार में प्राप्त होता है तो इसके बीच समय-सीमा होती है। इस समय-सीमा में, सामान के निर्माण में लगने वाला समय, सामान को संकुल और ढुलाई करने में लगने वाला समय भी अनुमानित होता है। इन और यथार्थवादी स्थितियों के तहत इष्टतम सुरक्षा स्टॉक और आदेश मात्रा निर्धारित

करना काफी जटिल प्रक्रिया है। इस प्रकार के विश्लेषण में जिन कारकों पर विचार किया जाना चाहिए उन्हें संक्षेप में पहचाना जा सकता है। यदि बाकि सभी चीजें स्थिर होती हैं, इष्टतम सुरक्षा स्टॉक बढ़ता है क्योंकि पूर्वानुमान और समय-सीमा बढ़ने से मांग अनिश्चितता बढ़ जाती है। इसी तरह, यदि अन्य सभी चीजें स्थिर होती हैं, इष्टतम सुरक्षा स्टॉक बढ़ता है क्योंकि स्टॉक आउट की लागत बढ़ जाती है।

### 5.9 बोध प्रश्न

1. बैलेंस शीट की तैयारी के लिए, कच्चे माल, प्रक्रिया में काम करने और तैयार माल का क्या महत्व हो सकता है?
2. FIFO इन्वेंटरी विधि की सीमाएं क्या हो सकती हैं?
3. क्या इन्वेंट्री प्रबंधन में नकद प्रवाह समय रेखा का कोई महत्व है? यदि हां, तो स्पष्ट करें। यदि नहीं, तो इन्वेंटरी प्रबंधन के तहत संयोजन में उनका अध्ययन क्यों किया जाता है?
4. सूची मूल्यांकन का कौन सा तरीका आपको सबसे अच्छा लगता है और क्यों?
5. एक कंपनी प्रति उत्पाद Rs.50 की दर से उत्पाद का एक घटक खरीदती है। उस घटक की वार्षिक खपत 25,000 टुकड़े है। अगर आदेश लागत Rs.230 प्रति आदेश है और उत्पाद ले जाने की लागत 20 प्रतिशत प्रति वर्ष है, तो EOQ क्या होगा?
6. एआईएम कंपनी लिमिटेड कच्चे माल की त्रैमासिक 50,000 इकाइयों का उपयोग करता है। कच्चे माल की लागत प्रति यूनिट Rs.100 है, आदेश लागत Rs.120 प्रति आदेश है और उत्पाद ले जाने की लागत 9% प्रति वर्ष है। EOQ की गणना करें।

### 5.10 संदर्भ ग्रंथ

- D.R. Mehta, Working Capital Management, Prentice-Hall Inc., 1974.
- K.V. Smith, Management of Working Capital, McGraw-Hill, New York.
- Khan and Jain, Financial Management, Tata McGraw-Hill.
- Pandey, Financial Management, Vikas Annex.54.J.3 -MBA - Finance - SDE  
Page 20 of 23.
- Prasanna Chandra, Financial Management, Theory and Practice, Tata McGraw-Hill.